सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

# परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 11, नई दिल्ली । शनिवार, 22 मार्च 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

अगर भाग्य पर भरोसा है तो जो तकदीर में लिखा है वही पाओगे, और अगर खुद पर भरोसा है तो जो चाहोगे वही पाओगे।

03 भाजपा ने महिलाओं को 2500 रुपए और होली पर मुफ्त सिलेंडर न देकर दिया धोखा

06 देश की भाषिक योजना और हिंदी

08 भारत का एक पूर्व देशी रियासत जहां कपड़े की तरह बदलें जाते अधिकारी !

# आप पार्टी द्वारा नियुक्त एस.टी.ए. बोर्ड मेंबर्स द्वारा बोर्ड बैठक करवाने में भाजपा सरकार सहमत थी या परिवहन आयुक्त दिल्ली

संजय बाटला

**नई दिल्ली।** पहली बार ऐसी दरियादिली किसी राजनैतिक दल की देखने में आई है जहां सरकार में राजनैतिक दल का बदलाव हुआ हो और उसके द्वारा पूर्व की सरकार द्वारा नियुक्त बोर्ड मेंबर्स को निरस्त कर नए मेंबर्स ना नियुक्त किए हो। **आज दिल्ली परिवहन विभाग में एस.टी.ए. बोर्ड की बैठक संपन्न हुई जिसमें पूर्व की आम आदमी पार्टी सरकार द्वारा नियुक्त मेंबर्स ही उपलब्ध रहे क्योंकि नई भाजपा सरकार ने एस.टी.ए. बोर्ड या अन्य किसी भी बोर्ड को निरस्त करने के लिए दिशा निर्देश जारी ही नहीं किए। एस.टी.ए. बोर्ड बैठक का सम्पन्न होना वह भी पूर्व सरकार द्वारा नियुक्त सदस्यों के साथ इस लिए आपकी जानकारी में प्रस्तुत करने का विषय है क्योंकि पिछले कई सालों से तो परिवहन आयुक्त ने एस.टी.ए. बोर्ड की बैठक को होने के लिए समय ही नहीं दिया था और अपनी इच्छा के अनुसार ही सभी निर्णय लेते आ रहे थे। आख़िर ऐसा क्या विशेष मुद्दा था जिसके लिए एस.टी.ए. बोर्ड की बैठक संपन्न करवाना आवश्यक था जानने की कोशिश करने के बाद भी हमारे सामने नहीं आ पाया।**

दिल्ली के व्यवसायिक वाहन मालिकों की मांगों और खास तौर पर स्कूल कैब का मुद्दा एस.टी.ए. बोर्ड में उठना चाहिए था पर विश्वस्त सूत्रों की माने तो जनहित में अनिवार्य किसी भी पालिसी का मुद्दा आज सम्पन्न हुई इस बैठक में नहीं उठाया गया। पिछले कई वर्षों से एस.टी.ए. बोर्ड के पेंडिंग मुद्दे भी उस बैठक में नहीं उठाए गए। **अब एस.टी.ए. बोर्ड बैठक के मिनिट्स के आने पर ही पता चल पाएगा की दिल्ली की नई भाजपा सरकार द्वारा दरियादिली दिखाते हुए पूर्व सरकार द्वारा नियुक्त सदस्यों के सौजन्य से और परिवहन आयुक्त द्वारा इस बैठक को करवाने का सही उद्देश्य और कारण आखिर था क्या ?** यह तो साफ है की जनहित तो था नहीं।

## अति विशेष सूचना

"परिवहन विशेष" हिन्दी दैनिक समाचार पत्र आर .एन .आई . द्वारा मान्यता प्राप्त करने के बाद से आपके द्वारा प्राप्त भरपूर सहयोग से मार्च में अपने 2 साल पूरे कर रहा है। इन दो सालों में समाचार पत्र को निष्पक्ष रूप से चलाने में आप सभी का भरपूर सहयोग रहा हैं जिसके लिए प्रशासनिक विभाग परिवहन विशेष आप सभी का दिल से आभार व्यक्त करता है और आशा करता है की भविष्य में भी आपका सहयोग हमारे साथ ऐसे ही बना रहेगा। इन दो सालों में समाचार पत्र को राष्ट्रीय स्तर पर सभी शहरों और जिलों तक पहुंचाने और वहां की सही और सच्ची खबरें हम तक पहुंचाने वाले रिपोर्टर्स का दिल से धन्यवाद।

आप सभी को यह जान कर खुशी होगी की "परिवहन विशेष हिन्दी दैनिक समाचार पत्र" का द्वितीय वार्षिकी समारोह अप्रैल माह के अंतिम सप्ताह में सम्पन्न किया जा रहा है। इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से सड़को को जाम और दुर्घटनाओं से मुक्त करवाने के साथ दिल्ली को प्रदूषण मुक्त राज्य का उद्देश्य रखा गया है। इस समारोह में निम्नलिखित मुद्दों पर वाद- विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया जाएगा

1. लेन ड्राइविंग कितनी अनिवार्य?"
2. "सड़क दुर्घटना से कैसे हो सकता हैं बचाव ?"
3. "दिल्ली को कैसे प्रदूषण मुक्त राज्य बनाया जा सकता है?"

वाद- विवाद प्रतियोगिता में हिस्सेदारी लेने वाले वक्ताओं के वक्तव्य के साथ परामर्शदाताओं से चर्चा भी इस समारोह में रखी जा रही है। इसके साथ इस आयोजन में भारत देश में निर्मित ई वाहनो, वींएलटीडी संयंत्र, एवम् अन्य उपयोगी स्टाल भी सब को आकृषित करने के लिए उपलब्ध होंगे। इस समारोह में

1. सबसे अच्छा विचार / तर्क और समाधान प्रदान करने वाले वक्ता को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
2. परिवहन क्षेत्र में अच्छा कार्य करने वाले संगठनों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
3. सड़क सुरक्षा के प्रति कार्य करने वाले संगठनों के पदाधिकारियों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
4. परिवहन विशेषज्ञों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
5. समाचार पत्र से अलग अलग राज्यों से जुड़े एंकर, वीडियो ग्राफर, रिपोर्टर्स, लेखक, ज्योताचार्य, कवि एवम् सहायकों को सम्मानित किया जाएगा।

संजय कुमार बाटला
संपादक

# अंडरएज ड्राइविंग में सबसे ज्यादा पकड़े गए इस राज्य के नाबालिग, भरा 44 लाख रुपये का चालान

परिवहन विशेष न्यूज

मोटर वाहन कानून के मुताबिक, अगर कोई नाबालिग वाहन चलाते हुए पकड़ा जाता है, तो उसके माता-पिता या अभिभावक पर 25,000 रुपये तक का जुर्माना लगाया जा सकता है।

**नईदिल्ली।** भारत में अक्सर लोग लाड-प्यार में नाबालिगों को गाड़ी की चाबी थमा देते हैं। हालांकि, बाद में उन्हें खामियाजा भुगतना पड़ता है। बता दें कि भारतीय मोटर वाहन कानून के मुताबिक, 18 साल से कम उम्र के व्यक्ति का वाहन चलाना गैरकानूनी है। माता-पिता की लापरवाही का नतिजा ही है कि देश में अंडरएड ड्राइविंग के चलते एक्सिडेंट के मामले बढ़ते ही जा रहे हैं। सड़क परिवहन मंत्रालय के अनुसार, पिछले दो वर्षों में 1,497 मामलों में ई-चालान जारी किए गए, जिनकी कुल जुर्माने की राशि 48 लाख रुपये से अधिक है।

**अंडरएज ड्राइविंग में ये राज्य अव्वल**

मंत्रालय द्वारा राज्यसभा में साझा किए गए आंकड़ों के अनुसार, बिहार में अंडरएज ड्राइविंग के लिए सबसे ज्यादा 1,316 चालान जारी किए गए, जहां कुल 44.3 लाख रुपये का जुर्माना लगाया गया। इसके बाद जम्मू-कश्मीर में 1.4 लाख रुपये और छत्तीसगढ़ में 1.3 लाख रुपये का जुर्माना लगाया गया। उत्तराखंड में 22 चालानों पर 1 लाख रुपये से अधिक का फाइन लगा, जबकि उत्तर प्रदेश में केवल एक चालान पर 23,150 रुपये का जुर्माना लगाया गया।

**नए नियमों के तहत माता-पिता पर भी होगी कार्रवाई**

सड़क परिवहन मंत्रालय के नए नियमों के अनुसार, अगर कोई नाबालिग वाहन चलाते हुए पकड़ा जाता है, तो उसके माता-पिता या अभिभावक पर 25,000 रुपये तक का जुर्माना लगाया जा सकता है। इतना ही नहीं, अगर नाबालिग द्वारा ड्राइविंग के दौरान कोई दुर्घटना होती है, तो माता-पिता को जेल भी हो सकती है। हाल ही में पुणे पोर्श एक्सीडेंट मामले में नाबालिग के पिता को पुलिस ने हिरासत में ले लिया था, जिससे यह साफ है कि अब इस नियम को सख्ती से लागू किया जा रहा है।

**नाबालिगों को वाहन देने पर बढ़ सकता है खतरा**

विशेषज्ञों के मुताबिक, नाबालिगों के पास ड्राइविंग का सही अनुभव नहीं होता, जिससे सड़क दुर्घटनाओं का खतरा कई गुना बढ़ जाता है। कई माता-पिता भावनाओं में आकर अपने बच्चों को गाड़ी चलाने की इजाजत दे देते हैं, जो कानूनन गलत और जानलेवा साबित हो सकता है।

# साकेत जी-ब्लाक से लाजपत नगर तक बनेगा 8.38 किलोमीटर के एलिवेटेड कॉरिडोर बनेगा, ये है दिल्ली का पहला ऐसा एलिवेटेड कॉरिडोर

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली में साकेत जी-ब्लॉक से लाजपत नगर तक 8.38 किलोमीटर लंबा एलिवेटेड कॉरिडोर बनेगा। तुगलकाबाद में सर्वे के बाद पिलर खड़े किए जा रहे हैं। इसके बनने से गोल्डन मजेंटा पिंक और वायलेट लाइन पर इंटरचेंज की सुविधा मिलेगी। इस कॉरिडोर के बनने से दिल्ली के लोगों को बहुत फायदा होगा। आगे विस्तार से पढ़िए आखिर यह कॉरिडोर कैसे बनाया जा रहा है।

**दिल्ली।** दक्षिणी दिल्ली में साकेत जी-ब्लाक से लाजपत नगर तक 8.38 किलोमीटर के एलिवेटेड कॉरिडोर के लिए टेंडर की प्रक्रिया पूरी हो गई। जल्द ही काम शुरू होगा।

हालांकि, गोल्डन लाइन पर साकेत जी-ब्लॉक मेट्रो स्टेशन पर इसका बेस पहले ही तैयार कर लिया गया था। यहीं से लाजपत नगर तक एलिवेटेड लाइन का काम अगले तीन वर्ष में पूरा करने का लक्ष्य निर्धारित है।

बता दें कि यह पहला मेट्रो कॉरिडोर होगा, जो एक साथ चार लाइन के लिए इंटरचेंज की सुविधा देगा और लाजपत नगर, चिराग दिल्ली व साकेत जी-ब्लॉक को जोड़ेगा।

**खर्च किए जाएंगे 456.06 करोड़**

लाजपत नगर-साकेत जी ब्लॉक मेट्रो कॉरिडोर पूरी तरह एलिवेटेड होगा। इसमें लाजपत नगर, एंड्रयूज गंज, ग्रेटर कैलाश-एक, चिराग दिल्ली, पुष्पा भवन, साकेत जिला अदालत, पुष्प विहार मेट्रो स्टेशन और 7.298 किमी एलिवेटेड वायाडक्ट 456.06 करोड़ की लागत से बनाए जाएंगे।

वहीं, फेज तीन में बनी स्टेंडर्ड गेज की मजेंटा व पिंक लाइन के कॉरिडोर पर बने प्लेटफार्म की लंबाई करीब 140 मीटर है। इस पर छह कोच की मेट्रो ट्रेनों का परिचालन होता है। वहीं, लाजपत नगर-साकेत जी ब्लॉक कॉरिडोर के मेट्रो स्टेशनों के प्लेटफार्म की लंबाई 74 मीटर होगी, जो सबसे छोटे होंगे।

**एक साथ पांच कॉरिडोर के लिए इंटरचेंज**

मौजूदा समय में लाजपत नगर वायलेट व पिंक लाइन के साथ इंटरचेंज स्टेशन है। वहीं, इस नए कॉरिडोर के साथ लाजपत नगर एक साथ तीन कॉरिडोर के लिए इंटरचेंज स्टेशन हो जाएगा। वहीं, साकेत जी ब्लॉक गोल्डन लाइन तो चिराग दिल्ली पर मजेंटा लाइन के लिए इंटरचेंज होगा। यानी इस नए कॉरिडोर के तैयार होने पर लोगों को एक साथ पांच कॉरिडोर पर इंटरचेंज की सुविधा मिलेगी।

**कोर्ट के आदेश पर तुगलकाबाद गांव में सर्वे कर गाड़े जा रहे पिलर**

दक्षिणी दिल्ली में तुगलकाबाद गांव में हाई कोर्ट के आदेश पर जिला प्रशासन व एएसआइ (आर्कियालाजिकल सर्वे आफ इंडिया) की टीम पिछले एक सप्ताह से गली-गली मार्किंग कर सर्वे कर रही है। गलियों में मार्किंग करते हुए पिलर गाड़े जा रहे हैं। किले की जमीन पर अतिक्रमण का मामला लंबे समय से चला आ रहा है।

**एएसआइ ने ली है कोर्ट की शरण**

कोर्ट ने इस मामले में डेढ़ महीने पहले सर्वे कराने का आदेश दिया था। इसमें अगली सुनवाई 26 मार्च को है। उससे पहले टीम को सर्वे रिपोर्ट जमा करनी है। दरअसल, गांव की करीब आधी जमीन एएसआइ के अधीन है। इस पर निर्माण को अवैध मानते हुए अतिक्रमण हटवाने के लिए एएसआइ ने कोर्ट की शरण ली है।

वहीं, गांव के लोगों का दावा है कि दिल्ली सरकार के ही रेवेन्यू रिकार्ड के मुताबिक उनके पुरखे 750 साल से इस गांव में निवास करते आए हैं। मामले में हाई कोर्ट ने डेढ़ माह पहले 1993 की स्थिति बनाए रखने के लिए सर्वे का आदेश दिया था। उसी के अनुपालन में बीते 17 मार्च से गांव में सर्वे कर मार्किंग की जा रही है। हाल ही में सांसद रामवीर सिंह बिधूड़ी ने लोकसभा में भी यह मुद्दा उठाया था।

**सुप्रीम कोर्ट में हुई थी पीआइएल दाखिल**

उन्होंने सरकार से मामले में हस्तक्षेप की मांग करते हुए गांववालों की जमीन न छीनने की अपील की थी। मामले में पक्षकार एडवोकेट दिवाकर बिधूड़ी के मुताबिक किले की जमीन पर अतिक्रमण को लेकर सुप्रीम कोर्ट में एक पीआइएल दाखिल हुई थी। इसके जवाब में ग्राम जन विकास संगठन के माध्यम से हमने भी कोर्ट का रुख किया। दोनों केस क्लब किए गए। चार फरवरी 2016 को सुप्रीम कोर्ट में ऑर्डर हुआ।

इसके अनुपालन के लिए मामला हाई कोर्ट को ट्रांसफर हुआ। डेढ़ महीने पहले हाई कोर्ट ने 1993 की स्थिति बनाए रखने के लिए सर्वे कराते हुए रिपोर्ट दाखिल करने का आदेश दिया था। मामले में अब अगली सुनवाई 26 मार्च को होनी है। एएसआइ की इस कार्रवाई से क्षेत्रवासियों में अपने घरों के तोड़फोड़ किए जाने का डर सता रहा है।

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)

TOLWA

website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com

रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल - 0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण

रजिस्टर्ड कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मेंन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

# दिल्ली की बसों में मुफ्त सफर करते समय न करें ये गलती देना पड़ सकता है जुर्माना, जान लीजिए ये नियम

परिवहन विशेष न्यूज

**नई दिल्ली।** दिल्ली सरकार की ओर से महिलाओं के लिए बहुत सारी योजनाएं चलाई जाती है. सरकार की ओर महिलाओं को लिए हाल ही में आर्थिक सहायता देने के लिए महिला समृद्धि योजना भी शुरू कर दी गई है. इस योजना के तहत दिल्ली की महिलाओं को ढाई हजार रुपए हर महीने दिए जाएंगे. 2019 में जब आम आदमी पार्टी की सरकार थी.

तब तत्कालीन मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने महिलाओं के लिए बस में मुफ्त यात्रा की सौगात दी थी. दिल्ली में कोई भी महिला डीटीसी की बस के जरिए दिल्ली में कहीं भी बिना टिकट के पैसे चुकाए आ जा सकती है. लेकिन बावजूद इसके मुफ्त सफर करने वाली महिलाओं को जुर्माना देना पड़ सकता है. अगर उन्होंने सफर के दौरान यह गलती की. जानें क्या हैं इसके लिए नियम.

**बस में सफर के लिए जरूरी यह चीज**

दिल्ली सरकार की ओर से महिलाओं के लिए बस में फ्री सफर की सुविधा दी जाती है. सरकार की इस सुविधा का लाभ लाखों महिलाओं को मिलता है. दिल्ली के किसी भी रूट की डीटीसी की किसी भी बस में महिलाएं फ्री यात्रा कर सकती हैं. लेकिन इसके लिए उन्हें एक स्लिप लेनी होती है. बता दें यह कुछ कुछ टिकट जैसी होती है.

लेकिन इसे लेने के लिए अलग से पेमेंट नहीं करना होता. यह पिंक कलर की स्लिप होती है. जो सभी फ्री ट्रैवल करने वाली महिलाओं को डीटीसी बस में मौजूद कंडक्टर से लेनी होती है. इस स्लिप से फ्री ट्रैवल करने वाली महिलाओं का रिकॉर्ड मेंटेन होता है. मुफ्त सफर करने के लिए सभी महिलाओं के यह स्लिप लेनी जरूरी है.

**स्लिप नहीं ली तो देना होगा जुर्माना**

डीटीसी के नियमों के मुताबिक दिल्ली में फ्री ट्रैवल करने वाली सभी महिलाओं को यह पिंक स्लिप लेनी जरूरी होती है. अगर किसी भी महिला ने यह पिंक स्लिप नहीं ली होती है. तो फिर उस महिला को जुर्माना चुकाना पड़ सकता है. बता दें डीटीसी बसों टिकट चेक करने वाले डीटीसी के कर्मचारी बिना पिंक स्लिप या पिंक टिकट के महिला पर 200 रुपये तक का जुर्माना लगा सकते हैं।

# ज्योतिषशास्त्र और राशियों का परिचय

ज्योतिषाचार्य पंडित योगेश पौराणिक (इंजी.)

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार आकाश मंडल में स्थित भचक्र के 360 अंश अथवा 108 भाग होते है। समस्त 360 अंश में ही 12 राशियों को विभक्त किया गया है। अतः 30 अंश या 9 भागों की एक राशि होती है। बारह राशियों का परिचय कुछ इस प्रकार से है।

**मेष:** मेष राशि का निर्माण अश्वनी, भरणी और कृतिका नक्षत्र के पहले पाद से हुआ है। मेष राशि चर संज्ञक, अग्नितत्व वाली पूर्व दिशा की स्वामिनी, पुरुष जाती की उग्र प्रकृति वाली, पृष्ठोदय, लाल पीत वर्ण वाली, पित प्रकृति कारक है। इसका प्राकृतिक स्वभाव अभिमानी, साहसी सभी पर कृपा करने वाला है।

**वृष:** वृष राशि का निर्माण कृतिका नक्षत्र के दूसरे चरण से लेकर मृगशिर के दूसरे चरण पर्यन्त हुआ है। यह स्त्री राशि, स्थिर संज्ञक,

भूमि तत्व वाली, शीतल स्वभाव की, कांति रहित, वात प्रकृति वाली,

दक्षिण दिशा की स्वामिनी है। इसकी प्रकृति स्वार्थी, सांसारिक कार्यों में दक्ष होती है। काल पुरुष की कुंडली में वृष राशि से कंठ, मुख,

कपोलों का विचार किया गया।

**मिथुन:** मिथुन राशि क्रमशः मृगशिरा नक्षत्र के तीसरे चरण से लेकर पुनर्वसु नक्षत्र के तीसरे चरण तक अतिक्रमण है। मिथुन राशि वायु तत्व वाली, पश्चिम दिशा की स्वामिनी, शूद्र वर्ण वाली, द्विस्वभाव वाली

पुरुष प्रकृति की है। इसका प्राकृतिक स्वभाव लगातार अध्ययन रत और जीवन के गणित को समझना है। कालपुरुष की कुंडली में इस राशि से कंधे, हाथों और बाहुओं का विचार किया जाता है।

**कर्क:** कर्क राशि का अतिक्रमण पुनर्वसु नक्षत्र से लेकर अश्लेषा नक्षत्र के चतुर्थ पाद

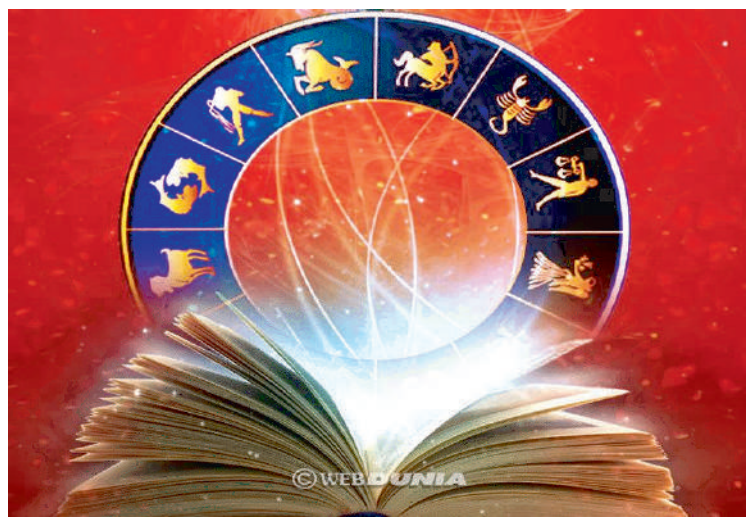


तक माना गया है। कर्क एक स्त्री जाति की

कफ प्रकृति वाली, जल तत्व वाली, रात्रि बली, उत्तर दिशा की स्वामी,

समोदय राशि है। काल पुरुष की कुंडली में पेट, वक्ष स्थल और गुर्दे का विचार कर्क राशि से किया जाता है।

**सिंह:** सिंह राशि का निर्माण मघा नक्षत्र से लेकर उतरा फाल्गुनी के प्रथम चरण तक माना गया है। सिंह पुरुष जाती की, स्थिर संज्ञक,

अग्नि तत्व वाली, पित प्रकृति की पीत वर्ण, उष्ण स्वभाव वाली,

पूर्व दिशा की स्वामी राशि है। काल पुरुष की कुंडली में हृदय का विचार इस राशि के द्वारा किया जाता है। इस राशि का प्राकृतिक स्वभाव स्वतंत्र और उदार प्रेमी होता है।

**कन्या:** कन्या राशि का अतिक्रमण उतरा फाल्गुनी नक्षत्र से लेकर क्रमशः हस्त और चित्रा के तृतीय चरण तक होता है। कन्या राशि

पिंगल वर्ण वाली, स्त्री जाति की, द्विस्वभाव वाली, दक्षिण दिशा की

स्वामिनी, रात्रिबली, वायु तत्व प्रकृति वाली, पृथ्वी तत्व की राशि है।

इससे पेट का विचार किया जाता है।

**तुला:** तुला राशि चित्रा के दूसरे चरण से लेकर विशाखा के तीसरे

चरण पर्यन्त तक तुला का अतिक्रमण माना जाता है। तुला एक पुरुष

जाति, चर संज्ञक, वायु तत्व वाली, पश्चिम दिशा की स्वामी, शूद्र संज्ञक,

क्रूर स्वभाव वाली और दिन बली मानी गई है। इससे नाभि के नीचे के अंगो का विचार किया जाता है।

**वृश्चिक:** वृश्चिक राशि का अतिक्रमण विशाखा के अंतिम चरण से लेकर ज्येष्ठा के अंतिम चरण तक माना गया है। यह स्थिर संज्ञक, शुभ्र

वर्ण वाली, स्त्री जाति की, जल तत्व वाली, उत्तर दिशा की स्वामिनी,

कफ प्रकृति वाली मानी गई है। यह राशि ब्राम्हण वर्ण वाली, हठी, दंभी, दृढ़ प्रज्ञ और निर्मल प्राकृतिक स्वभाव वाली है। इससे कद और गुप्त अंगों का विचार किया जाता है।

**धनु:** धनु राशि मूल नक्षत्र से लेकर उत्तराषाढ़ नक्षत्र के प्रथम चरण तक मानी जाती है। यह पुरुष जाति की, कंचन वर्ण वाली, पूर्व दिशा

बलि, दृढ़ शरीर वाली, अग्नि तत्व से परिपूर्ण, क्षत्रीय वर्ण वाली मानी गई है। इससे जांघ और पैरो का विचार किया जाता है।

**मकर:** उत्तराषाढ़ नक्षत्र से लेकर धनिष्ठा नक्षत्र के दूसरे चरण तक चंद्रमा का विचरण मकर राशि में माना गया है। मकर चर संज्ञक,

स्त्री जाति वाली, पृथ्वी तत्व, वात प्रकृति की, पिंगल वर्णवाली,

रात्रि बली, वैश्य वर्ण वाली, दक्षिण दिशा की स्वामी मानी गई है।

मकर से घुटनों का विचार किया जाता है।

**कुंभ:** धनिष्ठा नक्षत्र के तीसरे चरण से लेकर पूर्वा भाद्रपद के तीसरे चरण तक चंद्रमा का गोचर कुंभ राशि में होता है। कुंभ राशि पुरुष

जाति, स्थिर संज्ञक, वायु तत्व वाली, शीर्षोदय, पश्चिम दिशा की स्वामी

है। कुंभ राशि से पेट के भीतरी भागो का विचार किया जाता है।

**मीन:** पूर्वा भाद्रपद के अंतिम चरण से लेकर रेवती पर्यंत चंद्रमा का गोचर मीन राशि में होता है। मीन द्विस्वाभाव वाली, स्त्री जाति की,

कफ प्रकृति वाली, जल तत्व वाली रात्रि बली तथा उत्तर दिशा की स्वामी मानी गई है। इससे शरीर के अंगो के पैरो का विचार किया जाता है।

# मासिक कालाष्टमी

सनातन धर्म में कालाष्टमी पर्व का विशेष महत्व है।

यह पर हर माह के कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि को मनाया जाता है। इस शुभ अवसर पर भगवान शिव के रौद्र रूप काल भैरव देव की पूजा की जाती है। साथ ही मनोवांछित फल की प्राप्ति के लिए कालाष्टमी का व्रत रखा जाता है। तंत्र सीखने वाले साधक कालाष्टमी पर काल भैरव देव की कठिन साधना करते हैं। कठिन भक्ति से प्रसन्न होकर काल भैरव देव साधक की हर मनोकामना पूरी होती है।

**कालाष्टमी शुभ मुहूर्त**

वैदिक पंचांग के अनुसार, चैत्र माह के कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि 22 मार्च को सुबह 04 बजकर 23 मिनट पर शुरू होगी और 23 मार्च को सुबह 05 बजकर 23 मिनट पर समाप्त होगी। काल भैरव देव की निशा काल में पूजा की जाती है। अतः 22 मार्च को चैत्र माह की कालाष्टमी मनाई जाएगी। वहीं, निशा काल में पूजा का समय देर रात 12 बजकर 04 मिनट से लेकर 12 बजकर 51 मिनट तक है।

**कालाष्टमी पूजा विधि**

सुबह जल्दी उठकर स्नान करें। और

व्रत का संकल्प लें। भगवान शिव और काल भैरव की प्रतिमा का गंगाजल से अभिषेक करें। पूजा में दीपक, काले तिल, उड़द, और सरसों के तेल का प्रयोग करें। शाम को शिव, पार्वती और भैरव जी की विशेष पूजा करें। रात में काल भैरव स्तोत्र और श्री कालभैरवाष्टक का पाठ करें। काले कुत्ते को मीठी रोटी खिलाने से विशेष पुण्य की प्राप्ति होती है।

**काल भैरव को प्रसन्न करने के उपाय**

सरसों के तेल का दीपक जलाकर भगवान भैरव की पूजा करें।

गरीबों को वस्त्र और भोजन का दान करें।

21 बिल्वपत्रों पर ₹ॐ नमः शिवायश्र लिखकर शिवलिंग पर चढ़ाएं।

श्री कालभैरवाष्टक का पाठ करने से विशेष कृपा प्राप्त होती है।

**कालाष्टमी के दिन न करें ये गलतियां**

शराब और मांसाहारी भोजन का सेवन न करें।

अहंकार न करें, बुजुर्गों और महिलाओं का अनादर न करें।

नुकीली चीजों (चाकू, कैंची आदि) का अधिक प्रयोग न करें।

किसी भी जानवर को परेशान न करें, इससे काल भैरव अप्रसन्न होते हैं।

माता-पिता और गुरु का अपमान करने से बचें।

# क्या आप सच में प्रदूषण से बचना चाहते हैं.?

अगर हाँ, तो फिर बचिये इससे, अन्यथा बीमार कर देगी ये जहरीली प्रदूषित हवा.! अपनाइये ये 8 पारम्परिक, प्राकृतिक एवं घरेलू नुस्खे

(1). खाना खाने के बाद थोड़ा सा गुड़ जरूर खाएं गुड़ खून साफ करता है। इससे आप प्रदूषण से बचे रहेंगे।

(2). फेफड़ों को धूल के कणों से बचाने के लिए आप रोजाना एक गिलास गर्म दूध जरूर पियें।

(3). अदरक का रस और सरसों का तेल नाक में बूंद-बूंद कर डालने से भी आप हानिकारक धूल कणों से भी बचे रहेंगे।

(4). खुद को प्रदूषण के प्रभाव से बचाने के लिए आप ज्यादा से ज्यादा पानी का सेवन करें।

(5). शहद में काली मिर्च मिलाकर खाएं, आपके फेफड़े में जमी कफ और गंदगी बाहर निकल जाएगी।

(6). अजवायन की पत्तियों का पानी पीने से भी व्यक्ति का खून साफ होने के साथ शरीर के भीतर मौजूद दूषित तत्व बाहर निकल जाते हैं।

(7). तुलसी प्रदुषण से आपकी रक्षा करती है, इसलिए रोजाना तुलसी के पत्तों का पानी पीने से आप स्वस्थ बने रहेंगे।

(8). ठंडे पानी की जगह गर्म पानी का सेवन करना शुरू कर दें।

# भगवान विष्णु को इस दुनिया का पालनहार माना जाता है

वे त्रिमूर्ति के तीन रूपों में से एक हैं. भगवान विष्णु को कई नामों से जाना जाता है, जैसे कि नारायण, हरि, लक्ष्मीपति, अनंत, पुरुषोत्तम, ऋषिकेश, पद्मनाभ, माधव, बैकुंठ, श्रीधर, त्रिविक्रम, मधुसूदन, वामन, केशव, दामोदर, और गोविद.

**भगवान विष्णु से जुड़ी कुछ खास बातें:**

भगवान विष्णु के भक्तों को सुख, समृद्धि, और शांति मिलती है.

भगवान विष्णु की पूजा से व्यक्ति को मां लक्ष्मी का आशीर्वाद मिलता है.

भगवान विष्णु के कई अवतार हुए हैं, जिनमें से कुछ प्रमुख अवतार हैं- आदिपुरुष, नर-नारायण, वराह, नारद, कपिल, दत्तात्रेय, याज्ञ, ऋषभ, पृथु, मत्स्य, कच्छप, धनवंतरी, मोहिनी, नृसिंह, हयग्रीव, वामन, परशुराम, व्यास, राम, बलराम, कृष्ण, बुद्ध,

और कल्कि. भगवान विष्णु को खुश करने के लिए गुरुवार का दिन समर्पित है. भगवान विष्णु को खुश करने के लिए केले के पौधे की पूजा करनी चाहिए

## दिन के अनुसार अपने काम तय करें

ज्योतिषीय शोध से पता चला है कि कौन से दिन कौन-सी घटनाएं ज्यादा या कम होती है। हालांकि इस तरत का एक सर्वे भी हुआ है। शास्त्रों में भी वार और तिथि का बहुत महत्व है। ज्योतिष अनुसार प्रत्येक वार अलग अलग कार्यों के लिए नियुक्ति है। हालांकि अभी इस संबंध में ओर शोध किए जाने की जरूरत है। इस शोध का निचोड़ यहां प्रस्तुत है।

1. सोमवार : सोमवार को निवेश करना अच्छा माना गया है। यदि आप सोना, चांदी या शेयर में निवेश करने का सोच रहे हैं तो सोमवार को चुने।

2. मंगलवार : मंगलवार सेक्स के लिए खराब है। इस दिन सेक्स करने से बचना चाहिए। मंगलवार को बहुत से धर्मों में ब्रह्मचर्य का दिन भी माना जाता है। इस दिन आप अच्छे से सेक्स भी नहीं कर पाएंगे। यह दिन शक्ति एकत्रित करने का दिन है।

3. बुधवार : सर्वेक्षण से पता चला कि सोमवार और शनिवार जहां ऑफिस में कर्म कार्य होता है। वहीं मंगलवार को ज्यादा, लेकिन ऑफिस में बुधवार को सबसे श्रेष्ठ दिन घोषित किया गया है।

4. गुरुवार : यदि आप किसी बुरी लत के शिकार है - जैसे सिगरेट, तंबाखू, शराब आदि तो उसे छोड़ने के लिए आप गुरुवार को चुने, क्योंकि गुरुवार को छोड़ते वक्त आपमें संकल्प की अधिकता होती है और यह पवित्र दिन भी है। तो गुरुवार को आदत छोड़ने का दिन माना गया है।

5. शुक्रवार : शुक्रवार सेक्स के लिहाज से अच्छा दिन है, लेकिन सर्वे से पता चला है कि शुक्रवार नौकरी से निकाले जाने का दिन भी। इसलिए अच्छा यह भी है कि आप इस दिन खट्टा न खाएं तो आपके साथ अच्छा ही होगा।

6. शनिवार : शनिवार को क्षमा मांगने का दिन भी माना जाता है, लेकिन सर्वे से यह पता चला कि बच्चों को जन्म देने के लिए शनिवार बेहतर है। शनिवार को शराब पीना सबसे घातक माना गया है। इससे आपके अच्छे भले जीवन में तूफान आ सकता है।

7. रविवार : रविवार अच्छे-अच्छे पकवान खाने के लिए उत्तम दिन है, लेकिन सर्वे कहता है कि खाना बनाने के लिए रविवार सबसे खराब दिन है। इसका मतलब यह कि महिलाएं चाहती है कि इस दिन हमें भी किचन से छुट्टी मिलें।

# यह ज्ञान अपनों बच्चों को जरूर बतायें

**10** कर्तव्य 1.संध्यावंदन, 2.व्रत, 3.तीर्थ, 4.उत्सव, 5.दान, 6.सेवा 7.संस्कार, 8.यज्ञ, 9.वेदपाठ, 10.धर्म प्रचार।...क्या आप इन सभी के बारे में विस्तार से जानते हैं और क्या आप इन सभी का अच्छे से पालन करते हैं?

**10 सिद्धांत** 1.एको ब्रह्म द्वितीयो नास्ति (एक ही ईश्वर है दूसरा नहीं), 2.आत्मा अमर है, 3.पुनर्जन्म होता है, 4.मोक्ष ही जीवन का लक्ष्य है, 5.कर्म का प्रभाव होता है, जिसमें से कुछ प्रारब्ध रूप में होते हैं इसीलिए कर्म ही भाग्य है, 6.संस्कारबद्ध जीवन ही जीवन है, 7.ब्रह्मांड अनित्य और परिवर्तनशील है, 8.संध्यावंदन-ध्यान ही सत्य है, 9.वेदपाठ और यज्ञकर्म ही धर्म है, 10.दान ही पुण्य है।

**महत्वपूर्ण 10 कार्य*** 1.प्रायश्चित करना, 2.उपनयन, दीक्षा देना-लेना, 3.श्राद्धकर्म, 4.बिना सिले सफेद वस्त्र पहनकर परिक्रमा करना, 5.शौच और शुद्धि, 6.जप-माला फेरना, 7.व्रत रखना, 8.दान-पुण्य करना, 9.धूप, दीप या गुग्गल जलाना, 10.कुलदेवता की पूजा।

**10 उत्सव** नवसंवत्सर, मकर संक्रांति, वसंत पंचमी, पोंगल-ओणम, होली, दीपावली, रामनवमी, कृष्ण जन्माष्टमी, महाशिवरात्री और नवरात्रि। इनके बारे में विस्तार से जानकारी हासिल करें।

**10 पूजा** गंगा दशहरा, आंवला नवमी पूजा, वट सावित्री, दशामाता पूजा, शीतलाष्टमी, गोवर्धन पूजा, हरतालिका तिज, दुर्गा पूजा, भैरव पूजा और छठ पूजा। ये कुछ महत्वपूर्ण पूजाएं है जो हिन्दू करता है। हालांकि इनके पिछे का इतिहास जानना भी जरूरी है।

**10 पवित्र पेय** 1.चरणामृत, 2.पंचामृत, 3.पंचगव्य, 4.सोमरस, 5.अमृत, 6.तुलसी रस, 7.खीर, 9.आंवला रस और 10.नीम रस। आप इनमें से कितने रस का समय समय पर सेवन करते हैं? ये सभी रस अमृत समान ही है।

**10 पूजा के फूल** 1.आंकड़ा, 2.गेंदा, 3.पारिजात, 4.चंपा, 5.कमल, 6.गुलाब, 7.चमेली, 8.गुड़हल, 9.कनेर, और 10.रजनीगंधा। प्रत्येक देवी या देवता को अलग अलग फूल चढ़ाए जाते हैं लेकिन आजकल लोग सभी देवी-देवता को गेंदे या गुलाम के फूल चढ़ाकर ही इतिश्री कर लेते हैं जो कि गलत है।

**10 धार्मिक स्थल** 12 ज्योतिर्लिंग, 51 शक्तिपीठ, 4 धाम, 7 पुरी, 7 नगरी, 4 मठ, आश्रम, 10 समाधि स्थल, 5 सरोवर, 10 पर्वत और 10 गुफाएं हैं। क्या आप इन सभी के बारे में विस्तार से जानने हैं? नहीं जानते हैं तो जानना का प्रयास करना चाहिए।

**10 महाविद्या** 1.काली, 2.तारा, 3.त्रिपुरसुंदरी, 4. भुवनेश्वरी, 5.छिन्नमस्ता, 6.त्रिपुरभैरवी, 7.धूमावती, 8.बगलामुखी, 9.मातंगी और 10.कमला। बहुत कम लोग जानते हैं कि ये 10 देवियां कौन हैं। नवदुर्गा के अलावा इन 10 देवियों के बारे में विस्तार से जानने के बाद ही इनकी पूजा या प्रार्थना करना चाहिए। बहुत से हिन्दू सभी को शिव की पत्नीं मानकरपूजते हैं जोकि अनुचित है।

**10 धार्मिक सुगंध** गुग्गुल, चंदन, गुलाब, केसर, कर्पूर, अष्टगंथ, गुढ़-घी, समिधा, मेहंदी, चमेली। समय समय पर इनका इस्तेमाल करना

बहुत शुभ, शांतिदायक और समृद्धिदायक होता है।

**10 यम-नियम** 1.अहिंसा, 2.सत्य, 3.अस्तेय 4.ब्रह्मचर्य और 5.अपरिग्रह। 6.शौच 7.संतोष, 8.तप, 9.स्वाध्याय और 10.ईश्वर-प्रणिधान। ये 10 ऐसे यम और नियम है जिनके बारे में प्रत्येक हिन्दू को जानना चाहिए यह सिर्फ योग के नियम ही नहीं है ये वेद और पुराणों के यम-नियम हैं। क्यों जरूरी है? क्योंकि इनके बारे में आप विस्तार से जानकर अच्छे से जीवन यापन कर सकेंगे। इनको जानने मात्र से ही आधे संताप मिट जाते हैं

**10 बाल पुस्तकें** 1.पंचतंत्र, 2.हितोपदेश, 3.जातक कथाएं, 4.उपनिषद कथाएं, 5.वेताल पच्चिसी, 6.कथासरित्सागर, 7.सिंहासन बत्तीसी, 8.तेनालीराम, 9.शुकसप्तति, 10.बाल कहानी संग्रह। अपने बच्चों को ये पुस्तकें जरूर पढ़ाए। इनको पढ़कर उनमें समझदारी का विकास होगा और उन्हें जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा मिलेगी।

**10 ध्वनियां** 1.घंटी, 2.शंख, 3.बांसुरी, 4.वीणा, 5. मंजीरा, 6.करतल, 7.बीन (पुंगी), 8.ढोल, 9.नगाड़ा और 10.मृदंग। घंटी बजाने से जिस प्रकार घर और मंदिर में एक आध्यात्मि वातावरण निर्मित होता है उसी प्रकार सभी ध्वनियों का अलग अलग महत्व है।

**10 दिशाएं** दिशाएं 10 होती हैं जिनके नाम और क्रम इस प्रकार हैं- उर्ध्व, ईशान, पूर्व, आग्नेय, दक्षिण, नैऋत्य, पश्चिम, वायव्य, उत्तर और अधो। एक मध्य दिशा भी होती है। इस तरह कुल मिलाकर 11 दिशाएं हुईं। इन दिशाओं के प्रभाव और महत्व को जानकरी ही घर का वास्तु निर्मित किया जाता है। इन सभी दिशाओं के एक एक द्वारपाल भी होते हैं जिन्हें दिग्पाल कहते हैं।

**10 दिग्पाल** 10 दिशाओं के 10 दिग्पाल अर्थात द्वारपाल होते हैं या देवता होते हैं। उर्ध्व के ब्रह्मा, ईशान के शिव व ईश, पूर्व के इंद्र, आग्नेय के अग्नि या वह्नि, दक्षिण के यम, नैऋत्य के नऋति, पश्चिम के वरुण, वायव्य के वायु और मारुत, उत्तर के कुबेर और अधो के अनंत।

**10 देवीय आत्मा** 1.कामधेनु गाय, 2.गरुढ़, 3.संपाति-जटायु, 4.उच्चैःश्रवा अश्व, 5.ऐरावत हाथी, 6.शेषनाग-वासुकि, 7.रीझ मानव, 8.वानर मानव, 9.येति, 10.मकर। इन सभी के बारे में विस्तार से जानना चाहिए।

**10 देवीय वस्तुएं** 1.कल्पवृक्ष, 2.अक्षयपात्र, 3.कर्ण के कवच कुंडल, 4.दिव्य धनुष और तरकश, 5.पारस मणि, 6.अश्वत्थामा की मणि, 7.स्यंमतक मणि, 8.पांचजन्य शंख, 9.कौस्तुभ मणि और 10.संजीवनी बूटी।

# 23 मार्च: भगवान आदिनाथ का जन्म कल्याणक

## भगवान आदिनाथ का जन्म कल्याणक : एक स्वर्णिम अध्याय का सूर्योदय

[23 मार्च 2025 : जब प्रकृति भी गाएगी भगवान आदिनाथ की महिमा]

इतिहास के स्वर्णिम पन्नों पर एक दिव्य आभा बिखेरता यह दिन जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर, श्री 1008 भगवान आदिनाथ के जन्म कल्याणक का उत्सव होगा। २३ मार्च २०२५ को यह पवित्र अवसर भक्ति, श्रद्धा और अपार हर्षोल्लास के साथ मनाया जाएगा। संपूर्ण सृष्टि में इस दिन आध्यात्मिक ऊर्जा का प्रवाह होगा, मानो प्रकृति भी इस अलौकिक क्षण का स्वागत करने को आतुर हो। यह केवल एक तिथि नहीं, बल्कि उस महान आत्मा की गाथा का प्रतीक है, जिसने मानवता को सभ्यता और ज्ञान का पहला प्रकाश प्रदान किया। भगवान आदिनाथ—जिन्हें ऋषभनाथ, आदिब्रह्मा, वृषभदेव और पुरुदेव जैसे पवित्र नामों से जाना जाता है—सिर्फ तीर्थंकर ही नहीं, बल्कि मानवता के प्रथम गुरु और आध्यात्मिक क्रांति के आधार-स्तंभ थे। जब उस दिन अयोध्या की पवित्र धरती पर सूर्य की प्रथम किरणें पड़ेंगी, तो यह क्षण उस दिव्य जन्म को जीवंत कर देगा, जिसने संसार को कर्म-बंधनों से मुक्ति का मार्ग दिखाया।

उनका जन्म एक चमत्कार था। चैत्र मास की कृष्ण नवमी को इक्ष्वाकु वंश के राजा नाभिराय और रानी मरुदेवी के आंगन में यह अवतार प्रकट हुआ। चारों दिशाएँ खुशी से थिरक उठीं, स्वर्ग से देवताओं ने पुष्पवर्षा की, और धरती ने अपने गर्भ से एक अनमोल रत्न को जन्म दिया। उनका नाम ऋषभ रखा गया, जो उनके बलशाली और तेजस्वी व्यक्तित्व को दर्शाता था। जन्म से ही वे शास्त्रों के सागर में डूबे थे, मानो धरती पर एक जीवंत विश्वकोश लेकर आए हों। सूर्य की पहली किरणों ने जब उस शिशु को स्पर्श किया, तो यह संकेत था कि यह वह आत्मा है, जो अज्ञान के अंधेरे से मानवता को प्रकाश की ओर ले जाएगी।

भगवान आदिनाथ ने मानव सभ्यता को आकार दिया। उन्होंने मनुष्यों को खेती की कला सिखाई—बीज बोने का ज्ञान, अन्न उगाने की विधि और प्रकृति के साथ सामंजस्य का मार्ग। शिल्प और कला का विकास उनके आशीर्वाद से हुआ। अराजकता के उस युग में उन्होंने समाज को संगठित करने के लिए नियम बनाए, जिससे व्यवस्था जन्मी। एक राजा के रूप में उन्होंने प्रजा को जीवन जीने की कला सिखाई। उनकी इस महानता के कारण उन्हें "आदिब्रह्मा"—सृष्टि का प्रथम सर्जक—कहा गया। उनका चिह्न "वृषभ" (बैल) उनकी अडिग शक्ति और स्थिरता का प्रतीक है, जो आज भी जैन मंदिरों में उनकी पहचान बना हुआ है।

उनका पारिवारिक जीवन प्रेरणा का स्रोत था। युवावस्था में उनका विवाह दो ओजस्वी रानियों—यशस्वती (जिन्हें कुछ ग्रंथों में नंदा कहा गया) और सुनंदा—से हुआ। इनके गर्भ से उन्हें सौ वीर पुत्र और दो अनुपम पुत्रियाँ, ब्राह्मी व सुंदरी, प्राप्त हुईं। उनकी पुत्रियाँ स्वयं में चमत्कार थीं—ब्राह्मी ने "ब्राह्मी लिपि" का आविष्कार कर ज्ञान की अमिट रेखा खींची, जबकि सुंदरी ने गणित और तर्कशास्त्र के क्षेत्र में बुद्धि का परचम लहराया। उनके ज्येष्ठ पुत्र भरत ने चक्रवर्ती सम्राट के रूप में अखंड साम्राज्य स्थापित किया और इस धरती को "भारत" नाम का गौरव दिया। उनके ही पराक्रमी पुत्र बाहुबली की तपस्या और त्याग की गाथा भी जैन धर्म में स्वर्णाक्षरों से अंकित है। यह परिवार ज्ञान, शक्ति और धर्म का आधार-स्तंभ था, जिसने भारत की सांस्कृतिक मिट्टी को समृद्ध किया। आज हर भारतीय के रक्त में बहती यह गर्वोन्नत विरासत भगवान आदिनाथ की देन है।

उनका जीवन सांसारिक वैभव में कभी कैद नहीं हुआ। एक दिन, नृत्य की मादक लय के बीच एक नर्तकी नीलांजना का अचानक देहांत उनके लिए संसार की नश्वरता का दर्पण बन गया। उस क्षण ने उनके हृदय में वैराग्य की ऐसी अग्नि जलाई, जो राजसी ठाठ-बाट को भस्म करने को आतुर थी। उन्होंने अपने विशाल साम्राज्य को त्याग दिया और संन्यास के मार्ग पर चल पड़े। एक वर्ष तक वे कायोत्सर्ग की मौन तपस्या में खोए रहे—शरीर को भूल, आत्मा को पुकारते हुए। फिर, हस्तिनापुर के गन्ने के खेत में इक्षुरस की मिठास ने उनके प्रथम आहार का संयोग रचा, जिसे 'आखर पर्व' का नाम मिला। कठोर तप और असीम ध्यान के बल पर उन्होंने केवलज्ञान प्राप्त किया—वह दिव्य प्रकाश, जो संसार के हर रहस्य को उजागर कर देता है।

२३ मार्च २०२५ को जब सूर्य की पहली किरण धरती को स्पर्श करेगी, तो यह केवल एक सवेरा नहीं होगा—यह एक नई चेतना का उद्घोष होगा। यह पावन दिन भगवान आदिनाथ का जन्म कल्याणक होगा—एक ऐसा महोत्सव, जो हृदय को भक्ति की सरिता में डुबो देगा। देश का हर कोना भक्ति के सागर में डूबा होगा। कल्पना करें—लाखों भक्तों की शोभायात्रा धरती पर स्वर्ग उतार लाएगी, रंग-बिरंगे ध्वजों से आकाश लहराएगा, मंत्रों की पवित्र ध्वनि से वायु गूंज उठेगी। मंदिरों में घंटियों की झंकार, दीयों की जगमगाहट और भक्तों की आँखों में श्रद्धा का सागर एक ऐसा दृश्य रचेगा, जो आत्मा को झंकृत कर देगा।

यह उत्सव केवल एक परंपरा नहीं, बल्कि एक प्रचंड जागृति का प्रतीक है। यह वह दिव्य नाद है, जो कहता है—उठो, अपने भीतर के अंधेरे को भस्म कर दो और उस पथ पर बढ़ो, जिसे भगवान आदिनाथ ने अपने त्याग और तप से प्रकाशित किया। यह दिन हर जैन अनुयायी के हृदय में संकल्प जागृत करेगा—दान में उदारता, तप में दृढ़ता और सेवा में समर्पण। उनके जीवन का हर क्षण एक संदेश है—चाहे वह वैभव को तुच्छ ठहराकर संन्यास चुनना हो, या अहिंसा का वह बीज बोना, जो आज भी मानवता को जीवन का मर्म सिखाता है।

यह उत्सव केवल जैनियों का नहीं, बल्कि हर उस प्राणी का है, जो सत्य और शांति की खोज में भटकता है। भगवान आदिनाथ की शिक्षाएँ जैन धर्म की नींव बनीं और मानवता को दिशा दी। उनकी अहिंसा की गर्जना, संयम की महक और त्याग की प्रदीप्ति आज भी विश्व में प्रतिध्वनित होती है। २३ मार्च २०२५ का यह दिन हर भक्त के सीने को गर्व से ऊँचा करेगा, जब वे कह सकेंगे—"हम उस परंपरा के ध्वजवाहक हैं, जिसकी पहली ज्योति भगवान आदिनाथ ने जलाई।" यह वह क्षण होगा, जब हम उनके पदचिह्नों पर चलकर उनकी विरासत को अनंत तक ले जा सकेंगे।

अपने अंतर्मन को संकल्प की अग्नि से प्रज्वलित करें। २३ मार्च २०२५ को जब प्रभात की किरणें धरती को आलोकित करेंगी, तो यह जैन इतिहास में एक नया अध्याय रचेगा। यह वह दिन होगा, जब भक्ति का उन्माद सागर-सा उमड़ेगा, आत्मा पापों से मुक्त होगी और हर हृदय में प्रेरणा का सूर्य उदित होगा। भगवान आदिनाथ का जन्म कल्याणक—मानवता के प्रथम तीर्थंकर, उस महान गुरु का महोत्सव होगा, जिन्होंने हमें सिखाया कि सत्य की खोज, संयम की साधना और सेवा का समर्पण ही जीवन का सच्चा सार है।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

# "हिंदुस्तान भर से आए आपातकाल सेनानियों को सम्मान करना दिल्ली के लिए गर्व की बात"

मुख्य संवाददाता/ सुषमा रानी

**नई दिल्ली।** : दिल्ली भाजपा अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा ने आज एनडीएमसी कन्वेंशन सेंटर में 1977 में आपातकाल की समाप्ति दिवस 21 मार्च पर आयोजित लोकतंत्र विजय दिवस कार्यक्रम में 1975 - 77 के आपातकाल सेनानियों को संबोधित किया और उन्हें सच्चा देशभक्त बताया।

लोकतंत्र सेनानी संघ द्वारा आयोजित कार्यक्रम में सचदेवा के अतिरिक्त पूर्व केन्द्रीय मंत्री अश्वनी चौबे, लोकतंत्र सेनानी संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष कैलाश सोनी, सत्य नारायण जटिया, ओ. पी. बब्बर, सुभाष आर्या, राजीव बब्बर, राजन ढिगरा आदि उपस्थित थे। वीरेन्द्र सचदेवा ने देश भर से दिल्ली में आए उन सभी आपातकाल सेनानियों का सम्मान किया। उन्होंने कहा कि अगर लोकतंत्र को समझना हो तो सबसे पहले हमें लोकतंत्र के सेनानी जिन्होंने आपातकाल का विरोध किया उन्हें समझने की जरुरत है।

इस मौके पर उपस्थित आपातकाल सेनानियों को संबोधित करते हुए वीरेन्द्र सचदेवा ने कहा कि 21 मार्च को ही देश से आपातकाल हटाया गया था। इसलिए यह लोकतंत्र की विजय का दिन है। कांग्रेस के क्रूर शासकों द्वारा 25 जून 1975 को लोकतंत्र को कुचलने का काम किया गया था उस लड़ाई को लड़ने वाले आपातकाल में जितने साथियों ने यातनाएं सही और 19 महीनो तक जेल काटीं और कई आपातकाल बंदियों को शहादत देनी पड़ी, उन सभी के त्याग बलिदान पर खड़ा है

भारतीय लोकतंत्र।

वीरेन्द्र सचदेवा ने कहा कि हिंदुस्तान भर से आए आपातकाल के वे सभी साथी जिन्होंने इस कष्ट को देखा है, उन्हें हमने आज सम्मानित किया है। यह दिल्ली के लिए सौभाग्य की बात है।

उन्होंने कहा कि आज की युवा पीढी को इस बात को समझना चाहिए कि कांग्रेस के शासनकाल में किस प्रकार से लोकतंत्र की हत्या की जाती रही है। आपातकाल के 19 महीनों कांग्रेस शासन की क्रूरता और तानाशाही का प्रमाण है।

दिल्ली भाजपा अध्यक्ष ने उन सभी आपातकाल सेनानियों और उनके परिवार के प्रति अपनी सहानुभूति प्रकट की जिन्होंने आपातकाल के कष्ट सहे।

उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी विश्व भर में भारतीय लोकतंत्र की डंका बजा रहे हैं और भारतीय लोकतंत्र की सच्ची ताकत जनता की आवाज को बढ़ाने का काम किया है।

यह सौभाग्य की बात है कि आपातकाल में अलग अलग प्रांतों के सेनानियों का स्वागत करने के लिए दिल्ली साक्षी बना है। आपातकाल सेनानियों के लिए दिल्ली की सरकार को जो करना है करेगी और सरकार ऐसे महानुभावों का सम्मान क्या बढ़ाएगी अगर वह कुछ कर रही है तो वह सिर्फ अपना सम्मान बढ़ा रही है, इसलिए हमारा प्रयास रहेगा कि आपसे कुछ सीखकर हम उस तरह के समाज का निर्माण करें जहां 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के संकल्प ले सके।

## दिल्ली मंत्री ने कार्यकारी अभियंता के निलंबन के आदेश दिए

मुख्य संवाददाता /सुषमा रानी

**नई दिल्ली :** दिल्ली के पीडब्ल्यूडी मंत्री प्रवेश साहिब सिंह ने पूर्वी दिल्ली में तैनात एक कार्यकारी अभियंता के निलंबन के आदेश दिए हैं। यह कार्रवाई उस समय हुई जब मंत्री ने निरीक्षण के दौरान एक नाले की बदतर स्थिति पाई।

मंत्री ने पटपड़गंज क्षेत्र में सड़कों का निरीक्षण किया, जहां उन्होंने पाया कि NH-9 (सर्विस लेन), जिसे NH-24 के नाम से भी जाना जाता है, के किनारे बने नाले बुरी हालत में थे और कोई सफाई या रखरखाव कार्य नहीं किया जा रहा था।

"पीडब्ल्यूडी की जिम्मेदारी है कि वह इन नालों की सफाई और रखरखाव करे, लेकिन जमीनी हकीकत कुछ और ही है। मैंने इस लापरवाही के लिए संबंधित अभियंता के निलंबन का आदेश दिया है। लापरवाही किसी भी हाल में बर्दाश्त नहीं की जाएगी," मंत्री सिंह ने कहा।

उन्होंने यह भी कहा कि पिछले 10 वर्षों में अधिकारी 'मोटी चमड़ी' के हो गए हैं और अपनी जिम्मेदारियों के प्रति लापरवाह हो चुके हैं। अब सख्त निगरानी और जवाबदेही लागू की जाएगी।

बाद में, मंत्री ने न्यू अशोक नगर मेट्रो स्टेशन से होते हुए त्रिलोकपुरी के चिल्ला गांव और पटपड़गंज विधानसभा क्षेत्र के अन्य इलाकों में

सड़कों और नालों का निरीक्षण किया। उन्होंने पाया कि नाले खराब स्थिति में हैं, जिससे स्थानीय लोगों को असुविधा हो रही है। सिंह ने अधिकारियों को तुरंत सुधारात्मक कदम उठाने और जलभराव व सफाई की समस्या को हल करने के निर्देश दिए।

मंत्री ने नाराजगी जाहिर करते हुए कहा, "अधिकारियों की जिम्मेदारी है कि वे बुनियादी सुविधाओं का ध्यान रखें, लेकिन जमीनी हालात बेहद खराब हैं। दिल्ली के बुनियादी ढांचे को बेहतर बनाए रखने के लिए नियमित निरीक्षण और त्वरित कार्रवाई जरूरी है।"

**पीडब्ल्यूडी अधिकारियों को चेतावनी: काम करें या कार्रवाई झेलें**

मंत्री सिंह ने सभी वरिष्ठ पीडब्ल्यूडी अधिकारियों को सख्त चेतावनी देते हुए कहा कि जो अधिकारी अपनी जिम्मेदारियों का पालन नहीं करेंगे, उनके खिलाफ सख्त अनुशासनात्मक कार्रवाई होगी।

"दिल्ली को विश्वस्तरीय सड़कों और बुनियादी ढांचे की जरूरत है। अधिकारियों को अपनी जिम्मेदारी निभानी होगी। जो इसका पालन नहीं करेंगे, उन्हें जवाबदेह ठहराया जाएगा," उन्होंने कहा।

**अनिवार्य दैनिक निरीक्षण और सख्त निगरानी**

अब पीडब्ल्यूडी ने सभी फील्ड अधिकारियों, जिसमें जूनियर इंजीनियर, असिस्टेंट इंजीनियर और कार्यकारी अभियंता शामिल हैं, के लिए यह अनिवार्य कर दिया है कि वे रोजाना सड़क निरीक्षण करें और पीडब्ल्यूडी ई-मानिटरिंग ऐप पर रिपोर्ट के साथ तस्वीरें अपलोड करें।

विभाग ने यह पाया है कि अधिकारी सड़कों में गड्ढों, टूटे फुटपाथों, अतिक्रमण और अन्य खामियों की रिपोर्टिंग नहीं कर रहे हैं। इसके अलावा, पीडब्ल्यूडी इंजीनियरों द्वारा अनिवार्य ई-मानिटरिंग सिस्टम का उपयोग नहीं किया जा रहा है—यह लापरवाही अब बर्दाश्त नहीं की जाएगी।

## भाजपा ने महिलाओं को 2500 रुपए और होली पर मुफ्त सिलेंडर न देकर दिया धोखा- आप

मुख्य संवाददाता सुषमा रानी

**नई दिल्ली।** दिल्ली की महिलाओं को 2500 रुपए प्रतिमाह और हर परिवार को होली पर एक सिलेंडर मुफ्त देने का वादा पूरा नहीं होने पर आम आदमी पार्टी ने भाजपा को आड़े हाथ लिया। ''आप'' का कहना है कि भाजपा ने दिल्ली की महिलाओं को 8 मार्च तक 2500 रुपए देने का वादा किया था, लेकिन नहीं दे पाई और ना ही होली पर मुफ्त सिलेंडर ही दिया। यह दिल्ली के लोगों के साथ धोखा है। ''आप'' के राष्ट्रीय महासचिव संगठन डॉ. संदीप पाठक ने कहा कि एक राजनीतिक दल और खुद प्रधानमंत्री पहले जनता से वादे करें और फिर मुकर जाएं, यह देश की राजनीति के लिए बहुत दुखद बात है।

डॉ. संदीप पाठक ने कहा कि दिल्ली चुनाव के दौरान जिस तरह से प्रधानमंत्री और भारतीय जनता पार्टी ने दिल्ली की जनता को झूठे वादे किए, उसके बारे में पीएसी की बैठक में विस्तार से चर्चा की गई। प्रधानमंत्री ने कहा था कि पहली कैबिनेट की बैठक में ही दिल्ली की हर महिला के खाते में 2500 रुपए प्रतिमाह देने की स्कीम को पास

किया जाएगा। लेकिन प्रधानमंत्री के वादे पूरे नहीं हुए हैं। यह दिल्ली की जनता के साथ सीधे-सीधे धोखा है। भाजपा की तरफ से यह भी वादा किया गया था कि होली-दिवाली में हर परिवार को एक सिलेंडर मुफ्त दिया जाएगा, लेकिन होली पर मुफ्त सिलेंडर नहीं दिया गया।

डॉ. संदीप पाठक ने कहा कि यह बेहद दुर्भाग्य की बात है कि देश की एक पॉलिटिकल पार्टी और खुद प्रधानमंत्री ऐसे वादे करके जाएं और फिर उस वादे से मुकर जाएं, यह देश और देश की राजनीति के लिए बहुत दुखद बात है। आम आदमी पार्टी काम की राजनीति करती है। अरविंद केजरीवाल जो भी वादे करते हैं, उन सारे वादों को वो पूरा करते हैं। हम इस देश में एक नई राजनीति देने के उद्देश्य से आए थे, उस उद्देश्य की पूर्ति के लिए अंतिम क्षण तक संघर्ष करते रहेंगे।

''आप'' के नवनियुक्त दिल्ली प्रदेश संयोजक सौरभ भारद्वाज ने कहा कि दिल्ली चुनाव में आम आदमी पार्टी का करीब 43.5 फीसद वोट शेयर था। भाजपा का मात्र दो फीसद (45.5 फीसद) ज्यादा वोट शेयर है। इसलिए यह माना जा सकता है कि पुलिस और चुनाव आयोग का हर तरीके से इस्तेमाल होने के बाद भी दिल्ली की लगभग आधी आबादी आम आदमी पार्टी को वोट देकर अपने घर में बैठी हुई है। आम आदमी पार्टी उनका भी ध्यान रखेगी। इसके अलावा जिन लोगों ने यह सोचकर भाजपा को वोट दिया कि 2500 रुपए मिलेगा और होली-दिवाली पर गैस का सिलेंडर मुफ्त मिलेगा, लेकिन नहीं मिला। हम लोगों को उनका भी ध्यान रखना है।

उधर, ''आप'' के वरिष्ठ नेता मनीष सिसोदिया ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दिल्ली की जनता से वादा किया था कि भाजपा की सरकार बनाओ और 8 मार्च से दिल्ली की हर एक महिला के खाते में 2500 रुपए आने लगेंगे, लेकिन ये पैसे नहीं आए। इसका मतलब यह है कि प्रधानमंत्री ने दिल्ली की जनता से झूठ बोला। प्रधानमंत्री ने दिल्ली की जनता से यह भी वादा किया था कि होली-दिवाली पर सिलेंडर मुफ्त मिलेंगे। होली बीत गई, लेकिन सिलेंडर नहीं मिले। हम सब की यही चिंता है कि भाजपा के नेतृत्व में पांच साल के लिए दिल्ली में जो सरकार बनी है, वह अपने एक भी वादे पूरे करेगी या नहीं करेगी।

## जज के घर से कैश रिकवरी मामले से वकील नाराज, दिल्ली हाई कोर्ट में कहा- कड़े कदम उठाने की जरूरत

मुख्य संवाददाता/ सुषमा रानी

**नई दिल्ली।** दिल्ली हाई कोर्ट में कार्यरत एक सीनियर जज के घर से भारी संख्या में नकदी बरामद होने की खबर फैलते ही जजों और वकील समुदाय सकते में आ गए। कुछ ने घटना पर हैरानी जताई तो कुछ ने इस घटना से संबंधित संस्था की छवि पर असर को लेकर चिंता व्यक्त की। खबर सार्वजनिक होने के बाद जस्टिस यशवंत वर्मा की बेंच शुक्रवार को छुट्टी पर रही।

एक सीनियर एडवोकेट ने दिल्ली हाई कोर्ट के चीफ जस्टिस की अध्यक्षता वाली बेंच के सामने घटना का जिक्र कर वकील समुदाय की चिंता को रखा और भविष्य में ऐसी घटनाओं से बचने के लिए प्रशासनिक स्तर पर कड़े कदम उठाए जाने की मांग की।

सीनियर एडवोकेट अरुण भारद्वाज ने चीफ जस्टिस देवेंद्र कुमार उपाध्याय और जस्टिस तुषार राव गेडेला की बेंच के सामने मामले का जिक्र किया। सीनियर एडवोकेट बोले, आज की घटना से हममें से कई वकीलों को बहुत तकलीफ हुई। कृपया प्रशासनिक स्तर पर कुछ कदम उठाएं ताकि ऐसी घटनाएं फिर से न हों।

इस पर प्रतिक्रिया देते हुए चीफ जस्टिस ने कहा, हर कोई (तकलीफ में

) है। हमें पता है। अपनी बात रखते हुए सीनियर वकील ने बेंच से कहा कि मैं अपने कई बंधु वकीलों की भावनाओं को यहां व्यक्त कर रहा हूं। कृपया कुछ कदम उठाएं ताकि ऐसी घटनाएं आगे न हों और न्यायिक प्रणाली की सच्चाई कायम रहे। हम सब हिल गए हैं और निराश हैं।

घर से कैश के ढेर मिलने की खबर सार्वजनिक होने के बाद जस्टिस यशवंत वर्मा की अध्यक्षता वाली बेंच को शुक्रवार को छुट्टी पर घोषित कर दिया गया। हालांकि, सुबह इसकी कोई आधिकारिक सूचना जारी नहीं की गई थी। इसलिए कॉज लिस्ट के मुताबिक, वकीलों की भीड़ जस्टिस वर्मा की डिवीजन बेंच की कोर्ट में जुटने लगी। बाद में कोर्ट स्टाफ ने बताया कि बेंच आज नहीं बैठेगी।

## आतिशी मार्लेना द्वारा एक सोशल साइट् पोस्ट में भाजपा नेताओं पर कमीशन मांगने के आरोप की कड़ी भर्त्सना करता हूं: वीरेन्द्र सचदेवा

मुख्य संवाददाता/ सुषमा रानी

**नई दिल्ली :** दिल्ली भाजपा के अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा ने कहा है की दस साल तक रात दिन दिल्ली की जनता अरविंद केजरीवाल को एक ही राग अलापते सुनती रही की केन्द्र सरकार और अधिकारी हमे काम नही करने दे रहे पर वही जनता आज आतिशी मार्लेना को यह कहते देख आश्चर्यचकित है की हमारी सरकार ने दिल्ली में अधिकारियों के सहारे नये स्कूल, अस्पताल एवं फ्लाईओवर बनाये। वीरेन्द्र सचदेवा ने आतिशी मार्लेना द्वारा एक सोशल साइट् पोस्ट में भाजपा नेताओं पर कमीशन मांगने के आरोप की कड़ी भर्त्सना की है और कहा है की पूर्व मुख्य मंत्री या तो माफी मांगे या कानूनी कार्रवाई का सामना करने को तैयार रहें।

दिल्ली भाजपा अध्यक्ष ने कहा है की आतिशी मार्लेना एवं उनके राजनीतिक आका अरविंद केजरीवाल बतायें की यदि उनकी सरकार ने कमीशनखोरी रोकी थी तो दिल्ली जल बोर्ड बर्बाद क्यों हुआ, क्यों पूरी दिल्ली २०२४ के मानसून में जलजमाव से त्रस्त हुई, क्यों दिल्ली की सड़कें टूटी बदहाल हैं, क्यों दिल्ली में 10 साल में एक नया अस्पताल नही बना, क्यों दिल्ली के स्कूलों में विज्ञान एवं कॉमर्स नही पढ़ाये जाते, और अगर "आप" सरकार इमानदार थी तो आखिर क्यों दिल्ली के लगभग सभी तत्कालीन मंत्री एवं खुद अरविंद केजरीवाल भ्रष्टाचार के आरोपों में जेल एवं बेल झेल रहे हैं।

## एक घंटा बिजली बंद करने की अपील, पिछले साल अर्थ आवर में दिल्लीवालों ने की थी 206 मेगावॉट की बचत

मुख्य संवाददाता ,/सुषमा रानी

नई दिल्ली। जलवायु परिवर्तन के मद्देनजर हर साल की तरह इस साल भी अर्थ ऑवर शनिवार को दुनियाभर में मनाया जाएगा। दिल्ली के लोग भी इसमें सहभागी बनेंगे। बिजली उपभोक्ताओं से अपील की गई है कि 22 मार्च की रात 8रू30 से 9रू30 बजे के बीच स्वेच्छा से अपने घरों व कार्यस्थलों की गैरजरूरी लाइट्स व बिजली उपकरणों को बंद रखें। बिजली कंपनी बीएसईएस व टाटा पॉवर ने खुद भी अपने 400 से अधिक कार्यालयों में अर्थ आवर के दौरान गैर जरूरी लाइट्स को ऑफ रखने का निर्णय लिया है।

पिछले वर्षो में अर्थ आवर के दौरान दिल्लीवालों ने बड़े पैमाने पर बिजली बचाई। पिछले साल एक घंटे में 206 मेगावॉट बिजली की बचत हुई थी। बीएसईएस उपभोक्ताओं ने

130 मेगावॉट बिजली की बचत की वहीं एनडीपीएल ने 70 मेगावॉट बचत करके उल्लेखनीय योगदान दिया था। अर्थ आवर डब्लूडब्लूएफ (वर्ल्ड वाइड फंड फॉर नेचर॰वर्ल्ड वाइल्डलाइफ फंड) का सालाना कार्यक्रम है, जिसके तहत दुनियाभर के लोगों से अपील की जाती है कि वे जलवायु परिवर्तन को ध्यान में रखते हुए अपने घरों और कार्यस्थलों पर गैरजरूरी लाइट्स और बिजली चालित उपकरणों को तय समय के दौरान बंद रखें।

बीएसईएस का कहना है कि अपने घरों की बिजली को स्विच ऑफ करें और इंसानों के रहने लायक पृथ्वी में निवेश करें। धरती और आने वाली पीढ़ियों के लिए सही कदम उठाएं। लोग प्राकृतिक दुनिया की रक्षा कर बेहतर भविष्य का निर्माण कर सकते हैं। जलवायु परिवर्तन के कारण पृथ्वी की स्थिति को लेकर चिंता बढ़ गई है।

## यमुना से अतिक्रमण हटाने पहुंचा डीडीए, बुलडोजर एक्शन रोकने पहुंचे भाजपा विधायक

मुख्य संवाददाता/ सुषमा रानी

**नई दिल्ली।** पटपड़गंज विधानसभा क्षेत्र से भाजपा विधायक रविन्द्र सिंह नेगी डीडीए कर्मचारियों को रोकने के लिए यमुना खादर क्षेत्र में पहुंचे। उच्च न्यायालय के आदेशानुसार अतिक्रमणकारी झुग्गियों को ध्वस्त करने के लिए बुलडोजर के साथ मौके पर पहुंचे थे।

पटपड़गंज विधानसभा क्षेत्र से भाजपा विधायक रविन्द्र सिंह नेगी ने कहा, यह उच्च न्यायालय का आदेश था और पिछले कई वर्षों से यह योजना चल रही थी। हम उच्च न्यायालय का सम्मान करते हैं लेकिन हमने कोर्ट से कहा है कि यमुना नदी के किनारे कई लोग कई सालों से रह रहे हैं और उनकी रोजी-रोटी और कमाई यहां की खेती पर ही निर्भर है। हमने दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता से अनुरोध किया है कि हमें कुछ समय दिया जाए ताकि यहां के लोग अपनी फसल काट सकें। ये लोग बहुत परेशान हैं।

## सत्येंद्र जैन पंजाब, दुर्गेश पाठक गुजरात, अंकुश नारंग, आभाष चंदेला व दीपक सिंगला गोवा के सह प्रभारी बने

मुख्य संवाददाता सुषमा रानी

**नई दिल्ली।** आम आदमी पार्टी ने बड़ा फैसला लेते हुए दिल्ली और पंजाब समेत छह राज्यों में अपने संगठन में बड़ा बदलाव किया है। शुक्रवार को ''आप'' के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल की अध्यक्षता में हुई पालिटिकल अफेयर्स कमेटी (पीएसी) की बैठक में इन बदलावों पर मुहर लगी। इसके मुताबिक, वरिष्ठ नेता मनीष सिसोदिया को पंजाब, राष्ट्रीय महासचिव संगठन डॉ. संदीप पाठक को छत्तीसगढ़, गोपाल राय को गुजरात और पंकज गुप्ता को गोवा का प्रभारी बनाया गया है। साथ ही इन राज्यों में नए सह प्रभारी भी नियुक्त किए गए हैं। डॉ. संदीप पाठक को छत्तीसगढ़ का विशेष प्रभारी का अतिरिक्त प्रभार मिला। वह राष्ट्रीय महासचिव संगठन भी बने रहेंगे। इसके अलावा, वरिष्ठ नेता सौरभ भारद्वाज को दिल्ली और मेहराज मलिक को जम्मू एवं कश्मीर का अध्यक्ष बनाया गया है। अरविंद केजरीवाल ने नई जिम्मेदारियां मिलने पर सभी को शुभकामनाएं दी है।

आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव (संगठन) और राज्यसभा सांसद डॉ. संदीप पाठक ने कहा कि आज आम आदमी पार्टी की पॉलिटिकल अफेयर्स कमेटी (पीएसी) की बैठक हुई। बैठक में कई सारे मुद्दों पर विचार-विमर्श किया गया। इस दौरान पार्टी के विस्तार और संगठन के प्रारूप पर चर्चा की गई। बैठक में चार राज्यों के प्रभारी की नियुक्ति को मंजूरी दी गई है और दो राज्यों में नए प्रदेश अध्यक्ष की नियुक्ति को मंजूरी मिली है।

डॉ. संदीप पाठक ने बताया कि पंजाब में मनीष सिसोदिया प्रभारी होंगे और सत्येंद्र जैन सह प्रभारी होंगे। पीएसी ने मुझे राष्ट्रीय महासचिव के अलावा एक स्पेशल इंचार्ज के रूप में छत्तीसगढ़ के प्रभार की जिम्मेदारी दी है। गुजरात में गोपाल राय प्रभारी होंगे और दुर्गेश पाठक सह प्रभारी होंगे। इसी तरह, गोवा में पंकज गुप्ता प्रभारी और अंकुश नारंग, आभाष चंदेला व दीपक सिंगला सह प्रभारी होंगे। इसके अलावा, सौरभ भारद्वाज को दिल्ली प्रदेश का अध्यक्ष बनाया गया हैं।

जबकि जम्मू एवं कश्मीर में मेहराज मलिक को अध्यक्ष नियुक्त किया गया है।

***पिछले तीन साल में पंजाब की ''आप'' सरकार ने बहुत शानदार काम किया है- मनीष सिसोदिया***

मनीष सिसोदिया ने एक्स पर कहा कि पंजाब के प्रभारी के रूप में काम करने की ज़िम्मेदारी दिए जाने पर मैं अरविंद केजरीवाल और पार्टी नेतृत्व का हृदय से आभार व्यक्त करता हूं। पंजाब की जनता का स्नेह और विश्वास मेरी प्रेरणा है। पिछले तीन वर्षों में किए गए कार्यों के परिणाम अब वहां स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगे हैं और हम आत्मविश्वास से भरे बदलता पंजाब को देख रहे हैं। अब समय है इस परिवर्तन को रॉकेट गति देने का। मेरा प्रयास रहेगा कि ''आप'' के सभी नेता, कार्यकर्ता और भगवंत मान जी के नेतृत्व में सरकार मिलकर पंजाब के लोगों की अपेक्षाओं को पूरा करें और उनके विश्वास पर खरा उतरें।

***हार के बाद जो पार्टी के साथ खड़ा रहता है, वह खरा सोना होता है- सौरभ भारद्वाज***

वहीं, सौरभ भारद्वाज ने दिल्ली प्रदेश संयोजक की जिम्मेदारी देने और भरोसा जताने के लिए राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल समेत पीएसी के सदस्यों का धन्यवाद करते हुए कहा कि आम आदमी पार्टी को और मजबूत करेंगे। मेरा मानना यह है कि हारने के बाद संगठन निर्माण करना सबसे आसान होता है। क्योंकि जीत के बाद तो कई लोग आपके साथ आ जाते हैं, लेकिन हार के बाद जो पार्टी के साथ रहता है, वह खरा सोना होता है। आज जो पार्टी के साथ खड़ा है और संघर्ष करने के लिए लड़ेगा, वह खरा सोना है और उनके साथ पार्टी को दोबारा महबूत किया जाएगा। उन्होंने कहा कि एमसीडी मेयर चुनाव के सवाल पर कहा कि मेरा मानना है कि आम आदमी पार्टी की अवधारणा को कुछ दिनों तक चुनाव से अलग करके देखने की जरूरत है।

सौरभ भारद्वाज ने अधिकारियों द्वारा विधायकों के फोन नहीं उठाने के मुद्दे पर कहा कि आम आदमी पार्टी दिल्ली के विधायकों और सरकार के साथ खड़ी है। चाहे वह विधायक भाजपा के हों या आम आदमी पार्टी के हों। प्रवेश वर्मा हमारे गांव के ग्रामीण भाई हैं। मैं भी गांव से आता हूं और वह भी गांव से आते हैं। बतौर पीडब्ल्यूडी मंत्री प्रवेश वर्मा जब दौरा करने जाते हैं तो उनके साथ पीडब्ल्यू सेक्रेटरी को नहीं दिखते हैं। उनके साथ विशेष सचिव और उप सचिव भी नहीं दिखते हैं। मुझे इस बात का कष्ट होता है। मुझे लगता है कि चुनी हुई सरकार को पूरी इज्जत मिलनी चाहिए। पिछले 10 साल में भाजपा ने लोकतंत्र को कमजोर करने का काम किया है, उसको अब पलटने की जरूरत है। लोकतंत्र को मजबूत कीजिए। लोकशाही ऊपर है और बाबूशाही नीचे है। इसमें हम अपने छोटे स्वार्थ नहीं देखेंगे कि आज भाजपा की सरकार है तो हम कहेंगे कि बाबूओं की चलनी चाहिए। चुनी हुई सरकार की चलनी चाहिए। हम आज भी अपने उस सिद्धांत पर खड़े हैं। क्योंकि यह मामला सिद्धांत का है। हम इनके साथ हैं। दो-दो लाख लोगों से चुने हुए विधायक हैं। अफसरों को विधायकों की सुननी पड़ेगी। इसके अलावा कोई विकल्प नहीं है।

# विश्व जल दिवसः हर बूंद की कहानी : जल ही जीवन, फिर क्यों बर्बादी ?

जल – वह अनमोल राग, जो धरती की हर साँस में गूँजता है, जो पत्तियों की हल्की फुसफुसाहट से लेकर नदियों की गर्जना तक हर ध्वनि में बसता है। यह सिर्फ एक तत्व नहीं, बल्कि वह जादुई धारा है, जो मिट्टी को कंचन में ढालती है, सूखे को हरियाली का वरदान देती है और हर प्राणी के भीतर जीवन की रंगीन छटा बिखेरती है। "जल ही जीवन है" – यह कोई शब्दों का खेल नहीं, बल्कि वह अटल सत्य है, जो हमारी रगों में दौड़ता है और हमारे सपनों को हरा-भरा करता है। मगर इस सत्य को हम कितना आत्मसात करते हैं ? हर साल 22 मार्च को विश्व जल दिवस हमारे सामने एक दर्पण रखता है – जिसमें न केवल हमारा वर्तमान, बल्कि हमारा भविष्य भी साफ झलकता है, हमें सोचने को मजबूर करता है कि इस अनमोल धरोहर को हम कितना संजो पाएँगे।

2025 का विश्व जल दिवस एक नवीन राग लेकर आया है – "ग्लेशियर संरक्षण"। यह राग महज शब्दों का संगम नहीं, बल्कि बर्फ से आच्छादित पर्वतों की वह पुकार है, जो हमें झकझोरती है, चेताती है कि हमारा सबसे अनमोल खजाना संकट के कगार पर है। ग्लेशियर – ये चमचमाते, शीतल, मौन दैत्य, जो धरती के हृदय पर विराजमान हैं। हिमालय की ऊँचाइयों से जन्मीं जीवनदायिनी गंगा, यमुना और ब्रह्मपुत्र की धाराएँ; आल्प्स की गोद में लहराती राइन की उमंग; एंडीज के शिखरों से अमेजन को सींचती जलराशियाँ; और अंटार्कटिका की बर्फीली विशालता – ये ग्लेशियर मीठे पानी के वह अमूल्य भंडार हैं, जो नदियों को प्रवाह देते हैं, खेतों को सोना उगलने की ताकत देते हैं और शहरों की साँसों को थामे रखते हैं। ये बर्फीले पर्वत केवल प्रकृति का श्रृंगार नहीं, बल्कि हमारी सभ्यता की वह धुरी हैं, जिसके बिना सब कुछ ठहर जाएगा।

जलवायु परिवर्तन की प्रचंड आँधी ग्लेशियरों को निगल रही है – न धीमे, न चुपके से, बल्कि एक भयावह तेजी के साथ। यह महज बर्फ का पिघलना नहीं, बल्कि वह विनाशकारी सुनामी है, जो हमारी दुनिया को उलट-पुलट करने को आतुर है। समुद्र का जलस्तर उफान पर है, द्वीप और तट डूबते जा रहे हैं। एक ओर बाढ़ का प्रलय बस्तियों को लील रहा है, तो दूसरी ओर सूखा गाँवों को वीरान कर रहा है। ग्लेशियर सिकुड़ते जा रहे हैं, और उनके साथ हमारी नदियाँ भी कराह रही हैं। जरा कल्पना करें उस भयानक दिन की, जब गंगा की गोद में सूखा पसर जाए, जब हिमालय की धाराएँ मौन हो जाएँ, जब खेत प्यास से फट पड़ें और बच्चों की आँखों में पानी की जगह आँसू झलकें। यह कोई काल्पनिक कथा नहीं, बल्कि वह सच है, जो हमारे दरवाजे पर दस्तक दे रहा है।

नहीं, यह कहानी का अंत नहीं है – अभी साँसें बाकी हैं, अभी उम्मीदें जिंदा हैं। ग्लेशियरों को बचाना केवल बर्फ को संभालना नहीं, बल्कि अपने भविष्य को थामना है। इसके लिए हमें एक महायुद्ध छेड़ना होगा – ऐसा युद्ध, जिसमें हथियार होंगे हमारी दृढ़ इच्छाशक्ति, हमारे साहसी कदम और हमारा अटूट संकल्प। सबसे पहले, जलवायु परिवर्तन के इस दानव को घुटनों पर लाना होगा। कार्बन की कालिख पर लगाम कसनी होगी, सूरज की किरणों और हवा के झोंकों से ऊर्जा पैदा करनी होगी, और पेट्रोल-डीजल की जंजीरों को तोड़ना होगा – ये वो प्रहार हैं, जो इस शत्रु को ध्वस्त कर सकते हैं। जंगल हमारे प्रहरी हैं – उनकी हरियाली को सहेजना, पेड़ों को कटने से बचाना और नए वन रोपना ग्लेशियरों की जीवनरेखा को बल दे सकता है। नदियों को मैल से मुक्ति दिलाना, तालाबों में फिर से प्राण फूँकना – यह सब उस चक्र को अडिग बनाएगा, जो जल की धारा को हमारी देहरी तक लाता है।



यह जंग अब केवल दूर के मैदानों में नहीं सिमटेगी। यह हमारे घरों की देहरी, हमारे आँगनों की गोद, और हमारे रोज़ाना के फैसलों के दायरे से जन्म लेगी। एक नन्हीं बूंद को सहेजना, बारिश के पानी को थामना, कपड़े धोते वक्त फिजूलखर्ची पर लगाम लगाना—ये छोटे-छोटे कदम हैं, जो विशाल समुद्रों को जीवन दे सकते हैं। पानी को दोबारा इस्तेमाल की आदत बनाएं, ताकि हर बूंद बार-बार अपनी उपयोगिता साबित करे। खेतों में ड्रिप इरिगेशन की बूंदें खिलें, सूखे को चुनौती देने वाली फसलें लहलहाएं—ये तरीके पानी की हर कण में शक्ति भरते हैं। और पेड़—ये हरे पहरेदार, जो धरती को बांधे रखते हैं, हवा को शुद्ध करते हैं, और ग्लेशियरों को पिघलने से रोकते हैं। हर वो हाथ जो एक पौधा रोपेगा, वह धरती को एक नया जीवन, एक गहरी साँस देगा।

विश्व जल दिवस महज एक तारीख नहीं, बल्कि एक आह्वान है—एक ऐसा मंत्र, जो हमें नींद से झकझोरता है, हमारी आत्मा को जगाता है। यह चीखकर कहता है कि जल केवल हमारा हक नहीं, बल्कि हमारी अमूल्य थाती है। ग्लेशियर संरक्षण इस मंत्र की सबसे गहरी गूँज है, क्योंकि ये बर्फीले शिखर हमारे आने वाले कल की जड़ें हैं। यदि आज हम चुप रहे, तो कल की हवाएँ सिर्फ सन्नाटा और राख बिखेरेंगी। यह समय शब्दों की जुगाली का नहीं, बल्कि संकल्प की आग का है। हर बूंद जो हम सहेजते हैं, वह एक बीज है, जो भविष्य में विशाल वृक्ष बनकर लहलहाएगा। हर कदम जो हम उठाते हैं, वह एक नदी को जीवन देकर बहने का रास्ता देगा।

धरती की गोद में बस्ती हमारी साँसें, सुनो उसकी पुकार ! यह विश्व जल दिवस कोई साधारण पल नहीं, बल्कि एक आग का दरिया है जो हमारे भीतर धधक उठना चाहिए – एक ऐसा संकल्प जो ग्लेशियरों को बर्फ की चादर ओढ़ा दे, नदियों को उन्मुक्त बहने की आज़ादी दे और धरती को जीवन की हरियाली से सजा दे। अपने आँगन से शुरू करो यह काव्य, अपने बच्चों को सुनाओ वह गीत कि पानी है अनमोल स्वर्ण, हर बूंद एक चमकता सितारा। पेड़ लगाओ, जैसे वो तुम्हारे सपनों के परिंदे हों। पानी बचाओ, जैसे वो तुम्हारी रगों में बहता लहू हो। यह संग्राम हमारा है, और जीत का आलम भी हमारा होगा। क्योंकि जल की धारा ही हमारे जहान की कहानी लिखती है। यह एक दिन की कविता नहीं, बल्कि एक नई सुबह का राग है – जहाँ नदियाँ लय में नाचेंगी, ग्लेशियर सूरज संग मुस्कुराएँगे और धरती प्रेम की धुन पर थिरकेगी। अब वक्त की स्याही तैयार है – उठो, कलम थामो, और अपने कल की इबारत आज ही लिख डालो।

**प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी**

## कविता एक साहित्यिक विधा है।

कविता एक साहित्यिक विधा है, जिसमें भावनाओं, विचारों और अनुभवों को शब्दों के माध्यम से व्यक्त किया जाता है। कविता में शब्दों का चयन, लय, ताल और अर्थ का महत्वपूर्ण भूमिका होता है।

कविता को आकार देने के लिए,

कविता का विषय चुनना ।कविता की भाषा का चयन करना ।कविता की शैली का चयन करना ।कविता की लय और ताल का ध्यान रखना।

कविता में शब्दों का चयन,सावधानी और सतर्कता से करना।

कविता का अर्थ और और उसमे निहित भावना को व्यक्त करना। कविता की संरचना और उसके बदलते स्वरूप की बारीकियों को समझकर आगे बढ़ना।

जनमानस की रुचि आजकल

सामाजिक मुद्दों पर कविताएं पढ़ना और लिखना,व्यक्तिगत अनुभवों पर कविताएं लिखना पढ़ना ।प्रेम और रोमांस पर कविताएं लिखना पढ़ना ।संस्कृति और परंपरा पर कविताएं लिखना पढ़ना ।हास्य और व्यंग्य पर कविताएं लिखना पढ़ना।

कविता की परिभाषा और स्वरूप समय के साथ बदलते रहते हैं, लेकिन कविता का मूल उद्देश्य हमेशा भावनाओं और विचारों को व्यक्त करना रहता है।

कविताएं मानव मनोस्थिति पर प्रभाव डालकर समाज में सुधार कर सकती हैं। कविता की शक्ति न केवल मनोरंजन तक सीमित है, बल्कि यह समाज में परिवर्तन लाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

कविता के माध्यम से सामाजिक मुद्दों पर ध्यान आकर्षित किया जा सकता है ।लोगों को जागरूक किया जा सकता है ।समाज में बदलाव लाने के लिए प्रेरित किया जा सकता है ।मानवीय मूल्यों को बढ़ावा दिया जा सकता है ।लोगों के दिलों में कविता के माध्यम से संवेदनशीलता और सहानुभूति पैदा की जा सकती है। कविताएं

विचारों को बदलने में मदद करती है ।सामाजिक बदलाव की दिशा में योगदान करती है ।मानवीय मूल्यों को बढ़ावा देती है ।लोगों को एकजुट करती है। समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाती है। तुलसीदास की रामचरितमानस ने भक्ति आंदोलन को बढ़ावा दिया। कबीर की कविताओं ने सामाजिक असमानता के खिलाफ आवाज उठाई।

प्रेमचंद की कहानियों ने भी सामाजिक मुद्दों पर ध्यान आकर्षित किया।

फैज़ अहमद फैज़ की कविताओं ने स्वतंत्रता संग्राम में योगदान दिया।

कविता के माध्यम से समाज में सुधार लाने के और भी कई उदाहरण हैं,महात्मा गांधी के विचारों ने स्वतंत्रता संग्राम में योगदान दिया।

रवींद्रनाथ टैगोर की कविताओं ने भारतीय संस्कृति और मानवीय मूल्यों को बढ़ावा दिया ।सूरदास की कविताओं ने भक्ति आंदोलन को बढ़ावा दिया ।मीराबाई की कविताओं ने स्त्री सशक्तिकरण और भक्ति को बढ़ावा दिया।

कैफ़ी आज़मी की कविताओं ने सामाजिक न्याय और मानवाधिकारों के लिए आवाज उठाई।

कविता के माध्यम से सामाजिक मुद्दों पर ध्यान आकर्षित करना ।लोगों को जागरूक करना मानवीय मूल्यों को बढ़ावा देना ।सामाजिक बदलाव की दिशा में योगदान करना।

लोगों के दिलों में संवेदनशीलता और सहानुभूति पैदा करना।

कविता की शक्ति को नकारा नहीं जा सकता। यह न केवल मनोरंजन का साधन है, बल्कि समाज में सुधार और परिवर्तन लाने का एक शक्तिशाली माध्यम भी है।

**डॉ. मुश्ताक़ अहमद शाह सहज़**

## किसान आंदोलनः विरोध की राह से भटकाव तक का सफर

[टकराव से नहीं, संवाद से निकलेगा हल : किसान आंदोलन का संदेश]

लोकतंत्र का असली सौंदर्य उसकी आजादी में छिपा है—वह आजादी जो हर नागरिक को अपनी बात कहने, अपनी असहमति जताने का हक देती है। यह अधिकार ही लोकतंत्र की धड़कन है, जो सत्ता को जनता के प्रति जवाबदेह बनाए रखता है और शासन को निरंकुश होने से रोकता है। लेकिन जब यही विरोध अपनी सीमाएं लांघकर तर्क और समाधान की राह छोड़ देता है, जब वह हठधर्मिता और टकराव का रंग ले लेता है, तो वह न केवल अपने मकसद से भटक जाता है, बल्कि समाज के लिए बोझ बन जाता है। किसान आंदोलन इसका सबसे ज्वलंत और दुखद उदाहरण है। यह आंदोलन, जो कभी किसानों की आवाज बनकर उभरा था, धीरे-धीरे संवाद की संभावनाओं को कुचलता हुआ अड़ियलपन और अव्यवस्था का पर्याय बन गया। इसने न सिर्फ कृषि सुधारों के सवाल को उलझाया, बल्कि देश के सामाजिक ताने-बाने को छिन्न-भिन्न किया और आर्थिक ढांचे को ठप कर दिया। सवाल यह है—यह आंदोलन कहां से शुरू हुआ, और कहां जाकर भटक गया?

किसान आंदोलन की शुरुआत 2020 में तब हुई, जब केंद्र सरकार ने तीन कृषि कानूनों को लागू किया। सरकार का दावा था कि ये कानून किसानों को बिचौलियों की जकड़न से आजादी देंगे, उन्हें खुले बाजार में अपनी उपज बेचने का मौका देंगे, और खेती को आधुनिक बनाकर उनकी आय बढ़ाएंगे। यह एक बड़ा सपना था—कृषि को 21वीं सदी की जरूरतों के मुताबिक ढालने का सपना। लेकिन किसानों के मन में शंकाएं पनपने लगीं। क्या ये कानून बड़े कॉरपोरेट घरानों के लिए रास्ता बनाएंगे? क्या न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) की व्यवस्था, जो दशकों से उनकी आर्थिक रीढ़ रही है, खत्म हो जाएगी? ये डर जायज थे, क्योंकि भारत जैसे देश में खेती सिर्फ आजीविका नहीं, संस्कृति और भावनाओं का हिस्सा है। किसानों ने सड़कों पर उतरकर अपनी आवाज बुलंद की, और शुरुआत में यह विरोध एक सशक्त लोकतांत्रिक अभिव्यक्ति के रूप में उभरा।

सरकार ने इन शंकाओं को दूर करने की कोशिश की। कई दौर की वार्ता बुलाई गई, कानूनों में संशोधन का प्रस्ताव रखा गया, और यहां तक कि सुप्रीम कोर्ट ने भी कमेटी बनाकर बीच का रास्ता निकालने की पहल की। लेकिन आंदोलनकारी अपनी मांगों पर अड़े रहे। उनकी जिद थी कि कानून पूरी तरह रद्द हों और एमएसपी को कानूनी गारंटी मिले। यह अड़ियल रुख धीरे-धीरे संवाद की हर गुंजाइश को निगल गया। दिल्ली की सीमाओं पर ट्रैक्टरों की कतारें लगीं, सड़कें महीनों तक जाम रहीं, ट्रकों की लंबी लाइनें ठहर गईं, व्यापार ठप हुआ, और आम जनजीवन अस्त-व्यस्त हो गया। यह आंदोलन अब किसानों की लड़ाई से ज्यादा हठधर्मिता का प्रदर्शन बन चुका था। क्या यह वाकई किसानों के हित में था, या सिर्फ एक ऐसी जिद जो समाधान की बजाय समस्या को और गहरा रही थी?

किसानों की सबसे बड़ी मांग थी कि एमएसपी को कानूनी दर्जा दिया जाए। पहली नजर में यह मांग भावनात्मक रूप से मजबूत और जायज लगती है। आखिर कौन किसान नहीं चाहेगा कि उसकी फसल का दाम तय हो, उसकी मेहनत की कीमत सुरक्षित रहे? लेकिन इस मांग का दूसरा पहलू उतना ही जटिल और चुनौतीपूर्ण है। अगर एमएसपी को कानून बना दिया जाए, तो सरकार को हर फसल को तय दाम पर खरीदना होगा—चाहे बाजार में उसकी मांग हो या न हो। इससे सरकारी खजाने पर भारी बोझ पड़ेगा, गोदामों में अनाज सड़ेगा, और कृषि बाजार का प्राकृतिक संतुलन बिगड़ जाएगा। इतना ही नहीं, इससे किसानों में नवाचार की भावना कम होगी—नई फसलें उगाने, तकनीक अपनाने या बाजार की जरूरतों के हिसाब से बदलने की प्रेरणा खत्म हो जाएगी। सरकार ने इन खतरों को बार-बार सामने रखा, इसे अव्यावहारिक बताया, लेकिन आंदोलनकारियों के कानों पर जूं तक न रेंगी। यह हठ क्या हासिल कर रहा था—किसानों का भला, या सिर्फ एक असंभव सपने की खोज?

इस पूरे प्रकरण में पंजाब सरकार की भूमिका भी कम दिलचस्प नहीं। जब किसान दिल्ली की सीमाओं पर डटे थे, तब सत्तारूढ़ आम आदमी पार्टी (आप) ने खुलकर उनका साथ दिया। उनके नेता धरना स्थलों पर पहुंचे, जोशीले भाषण दिए, और किसानों को ₹क्रांतिकारी₹ करार दिया। यह समर्थन तब तक चला, जब तक आंदोलन से अराजकता नहीं फैली। लेकिन जैसे ही सड़कों पर हिंसा भड़की, कानून-व्यवस्था पर सवाल उठे, और आम लोग परेशान होने लगे, वही सरकार पलटी। आंदोलनकारियों को हटाने का फैसला लिया गया—वह भी तब, जब नुकसान अपनी चरम सीमा पर पहुंच चुका था। यह क्या था—राजनीतिक अवसरवाद या मजबूरी? सच तो यह है कि पंजाब सरकार ने पहले आग को हवा दी, और फिर उसे बुझाने का नाटक किया। इस दोहरे रवैये ने आंदोलन को और उलझाया, समाधान को और दूर धकेल दिया।

किसान आंदोलन ने एक कड़वी सच्चाई सामने रखी—जब विरोध टकराव का रूप ले लेता है, तो वह अपनी आत्मा खो देता है। लोकतंत्र में असहमति का हक है, लेकिन वह अराजकता की सीमा को पार नहीं करना चाहिए। इस आंदोलन ने सड़कों को जाम किया, अर्थव्यवस्था को चोट पहुंचाई, और समाज में दरारें पैदा कीं। लेकिन क्या यह सब जरूरी था? क्या संवाद से यह रास्ता नहीं निकल सकता था? सरकार को किसानों की असली तकलीफें सुननी होंगी—उनका डर, उनकी अनिश्चितता, उनकी उम्मीदें। इसके लिए उसे नीतियों में पारदर्शिता लानी होगी, भरोसा जीतना होगा। दूसरी ओर, किसानों को भी हठ छोड़ना होगा। यह समझना होगा कि हर मांग का कानूनी जवाब संभव नहीं, और हर जिद हल नहीं लाती। दोनों पक्षों को अपने-अपने किलों से बाहर निकलकर संवाद की मेज पर बैठना होगा। टकराव से सिर्फ नुकसान होता है—चाहे वह किसानों का हो, सरकार का हो, या पूरे देश का।

कृषि सुधार भारत जैसे देश के लिए अनिवार्य हैं। खेती को आधुनिक बनाना, किसानों को सशक्त करना, और अर्थव्यवस्था को गति देना समय की मांग है। लेकिन यह तभी मुमकिन होगा, जब सरकार और किसान मिलकर काम करें। सरकार को चाहिए कि वह किसानों के साथ संवेदनशीलता से पेश आए—उनकी आशंकाओं को दूर करे, उनकी बात सुने, और व्यावहारिक समाधान पेश करे। किसानों को भी चाहिए कि वे अड़ियल रुख छोड़ें और बदलते वक्त के साथ कदम मिलाएं। यह आंदोलन तभी सार्थक होगा, जब हठधर्मिता की जगह संवाद ले, और टकराव की जगह सहयोग ले।

किसान आंदोलन हमें एक गहरा सबक देता है—लोकतंत्र में संवाद ही वह सेतु है, जो टूटी उम्मीदों को जोड़ सकता है। जब आंदोलन अपनी राह से भटककर हठ की आग में जलने लगता है, तो वह न सिर्फ अपने मकसद को खो देता है, बल्कि समाज को भी घायल करता है। क्या हम इस सबक को सीखेंगे? क्या सरकार और किसान मिलकर एक नई शुरुआत करेंगे? या फिर यह आग और भड़केगी, और सब कुछ जलाकर राख कर देगी? जवाब हमारे हाथ में है—संवाद चुनें, या हठ की कीमत चुकाएं।

**प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)**

# डॉ.मुश्ताक अहमद शाह से साहित्यिक संवाद

डॉक्टर मुश्ताक अहमद शाह सहज हरदा मध्य प्रदेश से होने के नाते, उनकी जड़ें मध्य प्रदेश की समृद्ध संस्कृति और इतिहास में गहराई से जुड़ी हुई हैं। मध्य प्रदेश एक ऐसा राज्य है जो अपनी प्राकृतिक सुंदरता, ऐतिहासिक स्थलों, और सांस्कृतिक विरासत के लिए जाना जाता है। हरदा जिला, जहाँ वो रहते हैं, वह भी अपनी ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्ता के लिए जाना जाता है। आपके क्षेत्र में रहने वाले लोगों की गरिमा, सहयोग, और आतिथ्य के लिए भी प्रसिद्ध है।

आपका डॉक्टर होना भी एक सम्मानजनक पेशा है, जिसमें आप लोगों की सेहत और जीवन को बेहतर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। आपका काम न केवल एक पेशा है, बल्कि यह एक समाज सेवा भी है। हमने उनसे चर्चा की उनकी रुचियाँ और शौक क्या हैं? आप अपनी व्यस्तता में से कैसे

समय निकाल कर साहित्य रचना में अपना योगदान देते हैं ,जैसे सवालों पर बात की और उन्होने बड़ी विनम्रता, शालीनता,और मधुर लहज़े में हमसे बात की ।और मुस्कुरा कर जवाब दिया, उनसे की गई बातों पर उन्होंने क्या कहा आपके समक्ष प्रस्तुत है,उनके उदगार उनकी भावनाएं,उनके विचार,जो हमने जानने की कोशिश की।

मेरे लेखक, कवि और शायर बनने की यात्रा बहुत ही रोमांचक रही है! मैं आपके प्रश्नों का उत्तर देने की कोशिश करूंगा।

1. मैंने लेखन लगभग 30 वर्ष पूर्व से शुरू किया था, जब मैं स्कूल में था। लेकिन मेरी गंभीर लेखन यात्रा लगभग 16वर्ष पूर्व से शुरू हुई है, जब मैंने अपनी पहली कविता संग्रह प्रकाशित की।

2. मुझे लेखन में प्रेरणा मिलती है,
- जीवन के अनुभवों से
- प्रकृति से
- लोगों की कहानियों से
- साहित्य की महान कृतियों से
- अपने आसपास के समाज से

*. मेरे लेखन का मुख्य उद्देश्य है,
लोगों को अपने विचारों और भावनाओं के बारे में बताना,
समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने में मदद करना,
लोगों को प्रेरित करना और उनकी सोच को विस्तारित करना,
- अपनी रचनात्मकता को व्यक्त करना

4. साहित्य लेखन के लिए ध्यान देने योग्य महत्वपूर्ण बातें हैं:
- अपने विषय को अच्छी तरह से समझना
- अपनी भावनाओं को ईमानदारी से व्यक्त करना
- अपनी रचना में संरचना और तर्कसंगतता रखना
- अपने पाठकों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखना
- निरंतर अभ्यास और सीखने की प्रक्रिया में रहना

5. साहित्य लेखन में रुचि रखने वाले लोगों को मेरा संदेश है:
- अपनी रचनात्मकता को व्यक्त करने के लिए निरंतर प्रयास करें
- अपने विचारों और भावनाओं को ईमानदारी से व्यक्त करें
- अपने आसपास के समाज को ध्यान में रखकर लिखें
- निरंतर अभ्यास और सीखने की प्रक्रिया में रहें
- अपनी रचना में संरचना और तर्कसंगतता रखें

6. मैं लेखन द्वारा लोगों को यह बताना चाहता हूं,
- जीवन की सच्चाई और जटिलताओं के बारे में
- समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने की आवश्यकता के बारे में,
- अपने विचारों और भावनाओं को ईमानदारी से व्यक्त करने की महत्ता के बारे में
- अपनी रचनात्मकता को व्यक्त करने की शक्ति के बारे में, ये तो लेखन के

मेरी शायरी की शुरुआत मेरे बचपन से हुई थी, जब मैं अपने बाबूजी यानी पिताजी के साथ बैठकर कविताएं और शायरी सुनता था। उनको सुनने में मुझे बहुत आनंद आता था।

मेरे घर में साहित्य और अदब का माहौल था, और मेरे पिता भी कविताएं और शायरी लिखते थे। उनकी रचनाएं पढ़कर मुझे प्रेरणा मिली, और मैंने भी कविताएं लिखनी शुरू कीं। जैसा मैंने बताया कि,

मेरी शायरी की यात्रा की शुरुआत मेरे स्कूल के दिनों से हुई थी, जब मैं अपने दोस्तों के लिए कविताएं लिखता था। मेरे शिक्षकों ने मेरी रचनाओं को सराहा, और मुझे आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया।

कॉलेज में मैंने अपनी शायरी को और विकसित किया, और मैंने अपनी पहली कविता और गजल संग्रह प्रकाशित की। मेरी कविताएं और शायरी लोगों को पसंद आईं, और मुझे इसके लिए कई पुरस्कार भी मिले।

इसके बाद, मैंने अपनी शायरी को और व्यापक बनाने के लिए सोशल मीडिया पर अपनी रचनाएं साझा करनी शुरू कीं। मेरी शायरी को लोगों का बहुत प्यार मिला।

मेरी शायरी की यात्रा में मेरे परिवार, दोस्तों और शिक्षकों का बहुत बड़ा योगदान रहा है। उनके समर्थन और प्रोत्साहन ने मुझे अपने सपनों को पूरा करने में मदद की।

मैं अपने अनुभव से यह कह सकता हूं कि शायरी और कविता लिखने के लिए आपको बस अपने दिल की बातें लिखनी होती हैं। अपने विचारों और भावनाओं को शब्दों में ढालना और उन्हें दुनिया के साथ बांटना ही शायरी और कविता की सच्ची भावना है।

जैसा मैंने आपसे कहा कि,

मैंने अदब और तहज़ीब के माहोल में आंखें खोलीं, और मेरा दिल शायरी और कविता के रंग में रंग गया। मेरी परवरिश में साहित्य और संस्कृति का महत्वपूर्ण योगदान रहा, जिसने मुझे शायरी और कविता की दुनिया में खींच लिया।

मेरी ज़िंदगी में शायरी और कविता ने मुझे एक नई दिशा दिखाई, और मैंने अपने विचारों और भावनाओं को शब्दों में ढालना शुरू किया। मेरी शायरी और कविता में मेरे दिल की गहराइयों को उजागर करने की कोशिश की, और मैंने अपनी बातों को दुनिया के साथ बांटने की कोशिश की।

मेरी शायरी में मैंने इश्क, मोहब्बत, ज़िंदगी, और मानवीय भावनाओं को व्यक्त किया है। मैंने अपनी कविताओं में ज़िंदगी के संघर्षों और चुनौतियों को भी उठाया है, और मैंने उम्मीद और संघर्ष की भावना को प्रोत्साहित किया है।

मेरी शायरी और कविता में मेरा मकसद लोगों के दिलों को छूना और उनकी भावनाओं को व्यक्त करना है। मैं चाहता हूं कि मेरी शायरी और कविता लोगों को प्रेरित करे और उनकी ज़िंदगी में सकारात्मक परिवर्तन लाए।

आपका सवाल मेरे दिल की गहराइयों को छू गया है !कुछ अभी भी नहीं भूल पाता हूं।

मेरी शायरी में मेरे दिल की बातें हैं। हां ,मैंने भी प्यार किया है, और मेरा दिल टूटा है। मैंने भी दिल पर चोट खाई है, और मैंने उसे अपनी शायरी में अक्सर व्यक्त किया है।

मेरी शायरी में मेरे दिल का दर्द, मेरे आंसू, और मेरी तकलीफें मेरे अहसास शामिल हैं। लेकिन मेरी शायरी में मेरी उम्मीद और मेरी जिजिविषा भी है। मैंने अपने दर्द को अपनी ताकत बनाया, और मैंने अपनी शायरी को अपनी पहचान बनाया। मैंने गजलों के साथ साथ कविताएं , और कहानियों के साथ साथ,सामयिक लेख भी लिखने का प्रयास किया है, और आज भी लिख रहा हूं।

मैं मानता हूं कि शायरी में दर्द और अहसास का होना निहायत जरूरी है। दर्द ही तो शायरी को गहराई और अर्थ और वज़न देता है। मेरी शायरी में मेरा दर्द है, लेकिन मेरी शायरी में मेरी उम्मीद भी है।

आपका सवाल मुझे याद दिलाता है कि शायरी में दर्द और पीड़ा का महत्व क्या है। शायरी में दर्द और पीड़ा का होना इस बात का प्रमाण है कि शायर ने ज़िंदगी को गहराई से जीया है, और उसने अपने दिल की बातें कही हैं।

हाँ, बिल्कुल !,,,,,मेरा पहला शेर था।

"मतलब वो मुझसे पूछते हैं अपनी भरी जवानी का,
हूं कश्मकश में क्या दूं जवाब मैं उनके सवाल का"

यह शेर मेरे दिल की गहराई से निकला है, और इसमें मैंने अपने जीवन के एहसासों को व्यक्त किया है। उधर भी दिल की आवाज़ थी और इधर भी, सिर्फ बातें ही शेर में तब्दील हो गईं।

सही अर्थों में येही ग़ज़ल की शुरुआत है, और थी, यह शेर मेरे दिल की कश्मकश को दर्शाता है।

मुझे बहुत गर्व और खुशी महसूस होती है जब मैं देखता हूं कि मेरी शायरी और कविताएं लोगों के दिलों को छू रही हैं।

मेरी यात्रा बहुत लंबी और चुनौतीपूर्ण रही है, लेकिन मैंने कभी हार नहीं मानी। मैंने अपने सपनों पर विश्वास किया और मेहनत की।

आज, जब मैं अपनी शायरी और कविताओं को पत्र-पत्रिकाओं में छपा देखता हूं, तो मुझे लगता है कि मेरी मेहनत और समर्पण का फ़ल मिला है।

मुझे याद आता है कि जब मैं पहली बार अपनी कविता लिखी थी, तो मुझे लगता था कि यह कोई बड़ा काम नहीं है। लेकिन आज, जब मैं देखता हूं कि मेरी कविताएं लोगों के दिलों में बस गई हैं, तो मुझे बहुत खुशी महसूस होती है।

इस मुकाम पर पहुंचने के बाद, मुझे लगता है कि मेरी जिम्मेदारी बढ़ गई है। मुझे लगता है कि मुझे और भी बेहतर काम करना होगा, ताकि मैं लोगों के दिलों में और भी गहराई से बस सकूं।

मैं अपने पाठकों और श्रोताओं का शुक्रिया अदा करता हूं, जिन्होंने मुझे इस मुकाम पर पहुंचाया है। मैं उनके समर्थन और प्रोत्साहन के बिना यह नहीं कर सकता था।

हां सामयिक विषयों पर,,हाँ, बिल्कुल!

मैं सामयिक विषयों पर अपनी लेखनी चलाने में विश्वास रखता हूं। मुझे लगता है कि लेखक और शायर को समाज में होने वाली घटनाओं और मुद्दों पर अपनी राय और विचार व्यक्त करने चाहिए।

मैं अपने लेखन में समाजिक न्याय, मानवाधिकार, शिक्षा, स्वास्थ्य, और पर्यावरण जैसे विषयों पर लिखता हूं। मुझे लगता है कि ये विषय हमारे समाज के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं और हमें इन पर चर्चा करनी चाहिए।

मेरे लेख विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म्स पर प्रकाशित होते रहते हैं। मुझे खुशी है कि मेरे लेख लोगों को पसंद आते हैं और उनमें से कुछ लोगों को तो मुझे प्रेरित भी करते हैं।

मैं अपने लेखन के माध्यम से समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने की कोशिश करता हूं। मुझे लगता है कि लेखन एक शक्तिशाली माध्यम है, जिसका उपयोग हम समाज को बेहतर बनाने के लिए कर सकते हैं।

मेरी लेखनी में दर्द और इश्क का फोकस होने के कई कारण हैं,

पहला, मेरी जिंदगी के अनुभव,मैंने अपनी जिंदगी में बहुत सारे दर्द और इश्क के पल देखे हैं। मेरी पहली मोहब्बत मेरी सबसे बड़ी चोट भी थी। उस दर्द ने मुझे अपनी लेखनी में व्यक्त करने के लिए प्रेरित किया।

दूसरा, इंसानी भावनाएं,दर्द और इश्क इंसानी भावनाओं के सबसे गहरे और जटिल पहलू हैं। मैंने अपनी लेखनी में इन भावनाओं को व्यक्त करने की कोशिश की है, ताकि लोग अपने दर्द और इश्क को समझ सकें और उनसे निपटने के लिए प्रेरित हों।

तीसरा, साहित्य की शक्ति: साहित्य में दर्द और इश्क को व्यक्त करने की शक्ति होती है। मैंने अपनी लेखनी में इस शक्ति का उपयोग करने की कोशिश की है।

चौथा, आत्म-व्यक्ति, लेखन मेरे लिए आत्म-व्यक्ति का एक माध्यम है। मैं अपने दर्द और इश्क को अपनी लेखनी में व्यक्त करके अपने आप को समझने और अपने अनुभवों को साझा करने की कोशिश करता हूं।

इन कारणों से मेरी लेखनी में दर्द और इश्क का फोकस है, लेकिन मैं यह भी मानता हूं कि जिंदगी में सिर्फ दर्द और इश्क ही नहीं होते, बल्कि उम्मीद, खुशी, और सफलता भी होती है। मैं अपनी लेखनी में इन सभी पहलुओं को व्यक्त करने की कोशिश करता हूं।

गजल में हिंदी का इस्तेमाल एक नई और आधुनिक प्रवृति है, जो ग़ज़ल की परंपरागत परिभाषा को विस्तारित कर रही है।

गजल की परिभाषा में बदलाव के बारे में, यह कहना मुश्किल है कि यह बदलाव अच्छा है या बुरा। लेकिन यह ज़रूर है कि ग़ज़ल की परिभाषा समय के साथ बदली है।

ग़ज़ल की परंपरागत परिभाषा में यह एक ऐसी कविता होती है जिसमें, आशिक, माशूक और विरह की भावनाएं होती हैं ।एक विशिष्ट राग और ताल होता है ।शब्दों का चयन विशेष रूप से किया जाता है। भावनाओं के बिम्बों और रूपकों का उपयोग होता है।

लेकिन आधुनिक गजल में इन परंपरागत तत्वों के अलावा नए विषयों और शैलियों का समावेश भी हो रहा है, जैसे,
1.सामाजिक और राजनीतिक मुद्दे।
2. व्यक्तिगत अनुभव और भावनाएं।
3. प्रौद्योगिकी और आधुनिक जीवन।
4. विभिन्न सांस्कृतिक और भाषाई प्रभाव।

हिंदी का इस्तेमाल ग़ज़ल में एक नए युग की शुरुआत है, जो ग़ज़ल को आधुनिक समय के अनुसार अद्यतन कर रही है। यह ग़ज़ल की परिभाषा को विस्तारित कर रही है और इसे नए पाठकों और श्रोताओं तक पहुंचा रही है।

ग़ज़ल के मायने वास्तव में बहुत गहरे और व्यापक हैं। ग़ज़ल केवल ख़ूबसूरत लड़की या महबूबा से बात करने तक ही सीमित नहीं है, बल्कि यह एक भावनात्मक और आध्यात्मिक संवाद है जो दो लोगों के बीच में होता है।

ग़ज़ल में हम अपनी महबूबा या चाहने वाले की तारीफ़ करते हैं, लेकिन यह तारीफ़ केवल उनकी सुंदरता तक ही सीमित नहीं है, बल्कि यह उनकी आत्मा, उनकी भावनाओं, और उनकी विचारों की तारीफ़ है।

ग़ज़ल में हम अपनी बात कहते हैं और उनकी बात सुनते हैं, लेकिन यह संवाद केवल शब्दों तक ही सीमित नहीं है, बल्कि यह एक दिल से दिल की बात है।

ग़ज़ल में गिले शिक़वे करना भी एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, लेकिन यह गिले शिक़वे केवल दो लोगों के बीच के मतभेद तक ही सीमित नहीं है, बल्कि यह जीवन के संघर्षों और चुनौतियों के बारे में भी है।

ग़ज़ल को समझने के लिए, आपको इसे एक भावनात्मक और आध्यात्मिक स्तर पर समझना होगा। ग़ज़ल केवल शब्दों का खेल नहीं है, बल्कि यह एक दिल की गहराई से निकलने वाली भावना है।

मैं अपने चाहने वालों को यह कहना चाहूंगा कि ग़ज़ल को समझने के लिए, आपको,
1. अपने दिल को खोलकर सुनना होगा।
2. अपनी भावनाओं को समझना होगा।
3. जीवन के संघर्षों और चुनौतियों को समझना होगा।
4. दूसरों की भावनाओं और विचारों को समझना होगा।

जब आप ग़ज़ल को इस तरह से समझेंगे, तो आपको इसकी सच्ची ख़ूबसूरती और गहराई का एहसास होगा।

मेरी पसंदीदा साहित्यिक विधा कविता और गजल है, क्योंकि ये मुझे अपनी भावनाओं को व्यक्त करने का एक सुंदर माध्यम प्रदान करती हैं।

मैं अपनी रचनाओं में प्रेम, जीवन, संघर्ष, और समाजिक मुद्दों को प्राथमिकता देता हूं।

मुझे पढ़ना, यात्रा करना, और संगीत सुनना पसंद है।

मेरा बचपन बलडी.गाँव में बीता, जिसने मुझे प्रकृति और जीवन के सरल मूल्यों के बारे में सिखाया।

मेरे परिवार ने मुझे हमेशा समर्थन और प्रोत्साहन दिया है, जिसने मेरे लेखन को सशक्त बनाया है।

मुझे अपने जीवन में सबसे बड़ी चुनौती अपने सपनों को पूरा करने के लिए संघर्ष करना था, जिसे मैंने अपनी मेहनत और दृढ़ता से पार किया।

मुझे शिक्षा, सामाजिक कार्य, और व्यवसाय में भी रुचि है।

मुझे अपने लेखन के माध्यम से लोगों की जिंदगी में सकारात्मक परिवर्तन लाना उनसे संवाद करना मेरी सबसे बड़ी उपलब्धि लगती है।

मेरी लेखन प्रक्रिया में विचारों को इकट्ठा करना, शोध करना, और फिर अपनी भावनाओं को व्यक्त करना शामिल है।

मैं अपनी रचनाओं के लिए पुस्तकों और वास्तविक जीवन के अनुभवों से शोध करता हूं।

मुझे अपनी रचनाओं में सरल, स्पष्ट, और भावनात्मक शब्दों का चयन करना पसंद है।

लेखन क्षेत्र बहुत व्यापक है और मेरी रुचि सामाजिक सामयिक मुद्दों, धर्म, प्रेम, विरह, और अन्य विषयों पर लिखने में है। यह मेरे लिए बहुत अद्भुत है कि मेरी सभी धर्मों में आस्था है। मैं सभी धर्मों को सम्मान देता हूं।

लेखन न केवल आपकी रचनात्मकता को दर्शाता है, बल्कि यह समाज को जागरूक करने और सकारात्मक परिवर्तन लाने में भी मदद करता है। प्रेम और विरह जैसे विषयों पर लिखना बहुत ही भावनात्मक और गहरा होता है, जो पाठकों के दिलों को छूता है।

अगर आप लेखक हैं,तो आपको मिले पुरस्कार और प्रकाशित संकलन आपकी मेहनत और प्रतिभा का प्रमाण हैं। आपका लेखन समाज को एक नई दिशा देने में मदद कर रहा है।

ये मेरा अपना अनुभव और विचार है सबका सहमत या असहमत होना ये कोई विषय नहीं है।

मेरा यह विचार है कि गज़ल एक प्रकार की दिल से निकलने वाली आवाज है। यह सचमुच एक कला है,जो पाठकों के दिलों को छूती है।

आपका लक्ष्य पाठकों के दिलों में झांककर उनकी आंखों को पढ़कर लिखना होना चाहिए। ताकि आपके अल्फाज पाठक को अपने ही लगें। यह बहुत ही महत्वपूर्ण बात है, क्योंकि गज़ल की असली ताकत यही है कि वह पाठकों के दिलों को स्पर्श करती है और उन्हें अपनी भावनाओं को व्यक्त करने में मदद करती है। अंत में उन्होंने कहा,

मुझे बहुत अच्छा लगा आपके साथ भावनात्मक बातें करने में। यह मेरे लिए एक सुंदर और न भूलने वाला अनुभव था। उन्होंने कहा,

मैं अपनी रचनाओं को संपादित करने के लिए अपने आप को समय देता हूं, ताकि मैं अपनी रचनाओं को दोबारा पढ़कर सुधार कर सकूं।

मुझे अपनी रचनाओं के लिए प्रेरणा मिलती है जीवन के अनुभवों, प्रकृति, और लोगों की कहानियों से।

मुझे अपने लेखन के माध्यम से लोगों की सोच को विस्तारित करना और समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाना है।

मैं अपने पाठकों से उम्मीद करता हूं कि वे मेरी रचनाओं को पढ़कर अपनी जिंदगी में सकारात्मक परिवर्तन लाएं।

मुझे लगता है कि मेरा लेखन भविष्य में और भी अधिक लोगों तक पहुंचेगा और उनकी जिंदगी में सकारात्मक परिवर्तन लाएगा।

मुझे समाज में शिक्षा, स्वास्थ्य, और सामाजिक न्याय के मुद्दे सबसे अधिक चिंतित करते हैं।

मुझे लगता है कि हमारी संस्कृति बहुत समृद्ध और विविध है, जो मुझे गर्व महसूस कराती है।

एक लेखक के नाते, मैं कहना चाहूंगा कि,

"लेखन एक यात्रा है, जिसमें हम अपने विचारों को शब्दों में पिरोते हैं और दूसरों के साथ बांटते हैं। यह यात्रा हमें नई ऊंचाइयों पर ले जाती है, नए अनुभव प्रदान करती है, और हमें अपने आप को व्यक्त करने का मौका देती है।"

मैं अपने सभी पाठकों और लेखक मित्रों को यही कहना चाहूंगा कि,

"लिखते रहें, सीखते रहें, और अपने विचारों को दुनिया के साथ बांटते रहें। आपकी शब्दों की शक्ति दुनिया को बदल सकती है।"

आपका लेखन हमेशा पाठकों के दिलों को छूता रहे और आपकी शब्दों की शक्ति दुनिया को प्रेरित करती रहे! धन्यवाद!

# खरीदने जा रहे है पुरानी मारुति आल्टो, घर लाने से पहले इन 7 चीजों को जरूर करें चेक

अगर आप पुरानी यानी सेकंड हैंड Maruti Alto को खरीदने का प्लान बना रहे हैं तो यह खबर आपके लिए ही है। पुरानी कार करने से पहले आपको उसके डॉक्यूमेंट सर्विस रिकॉर्ड इंजन टायर और इंटीरियर को अच्छे से चेक करना चाहिए। आइए विस्तार में जानते हैं कि पुरानी कार खरीदने से पहले आपको किन चीजों को जरूर चेक करना चाहिए।

**नई दिल्ली।** हाल के समय में बहुत से लोग अपनी पहली गाड़ी नई कार की जगह पर पुरानी कार खरीदना पसंद कर रहे है। यह न केवल सस्ती होती है, बल्कि सही स्थिति में मिलने पर लंबी चलती भी है। इतना ही नहीं, बहुत से लोग तो पुरानी कार के रूप में Maruti Alto को लेना पसंद करते हैं। यह चलाने में आसान और किफायती होती है। हालांकि पुरानी कार खरीदने से पहले आपको कुछ जरूरी चीजों को जरूर चेक करना चाहिए, ताकि बाद में आपको किसी तरह की परेशानी का सामना नहीं करना पड़े। जिसे देखते हुए ही हम यहां पर आपको बता रहे हैं कि पुरानी Maruti Alto को खरीदने से पहले किन-किन चीजों को चेक करना चाहिए।

**पुरानी Maruti Alto खरीदने से पहले क्या-क्या चेक करें?**

पुरानी Maruti Alto को खरीदते समय आपको गाड़ी के कागजात, सर्विस रिकॉर्ड, इंजन, टायर और इंटीरियर को अच्छे से चेक (second hand Alto checklist) करना चाहिए। इसके साथ ही आपको मैकेनिक से गाड़ी को भी चेक करवाने के साथ ही उसकी टेस्ट ड्राइव भी लेनी चाहिए।

**1. कागजात (Documents)**

पुरानी मारुति ऑल्टो को खरीदने (used car buying tips) से पहले से उसकी आरसी (RC), पॉल्यूशन सर्टिफिकेट (POC), इंश्योरेंस और सेल लेटर को जरूर चेक करना चाहिए। ओरिजिनल आरसी और बिल की कॉपी चेक करने के साथ ही इंश्योरेंस और लोन एनओसी जैसे डॉक्यूमेंट भी चेक करें। यह भी देखें कि VIN और इंजन नंबर किसी तरह का अंतर नहीं हो।

**2. सर्विस रिकॉर्ड (Service Record)**

पुरानी Alto को खरीदने से पहले आपको उसके सर्विस रिकॉर्ड बुक को जरूर चेक करना चाहिए। इससे आपको पता चल जाएगा कि कार की कितनी सर्विस हुई है और उसके कौन से पार्ट्स को बदला गया है। कार के ओडोमीटर टैम्परिंग को भी चेक करवाएं।

**3. टायर (Tyres)**

पुरानी कार के टायरों की कंडीशन को चेक करें, अगर टायर खराब हैं, तो उसे आपको ही बदलवाना पड़ सकता है।

**4. इंटीरियर (Interior)**

पुरानी कार खरीदने (Maruti Alto buying tips) के दौरान उसके इंटीयर को जरूर चेक करें। उसकी सीट की कंडीशन, स्टीयरिंग व्हील और डैशबोर्ड के फंक्शन सही से काम कर रहे हों, इसे जरूर चेक करें।

**5. एक्सटीरियर (Exterior)**

पुरानी कार खरीदने के दौरान आपको यह जरूर चेक करना चाहिए कि उसकी बॉडी पर कितने डेंट, पेंट या स्क्रैच लगे हुए है।

**6. टेस्ट ड्राइव (Test Drive)**

आप नई कार खरीद रहे हो या फिर पुरानी कार, उसे खरीदने से पहले टेस्ट ड्राइव जरूर लें। इस दौरान आप चेक करें कि इंजन और बाकी पार्ट्स से कोई अजीब आवाज तो नहीं आ रही है।

**7. मैकेनिक से जांच (Mechanic Check)**

जब आप किसी भी पुरानी कार को खरीदने जा रहे हैं, तो उसे किसी मैकेनिक से जरूर चेक करवाएं। अगर मैकेनिक उसमें किसी तरह की कमी बताए, जो आगे चलकर आपका बड़ा खर्चा करवा सकती है तो उस गाड़ी को खरीदने से बचें।

# यामाहा ने एक साथ लॉन्च की दो बाइक, अपडेटेड फीचर्स के साथ मिले नए रंग

2025 Yamaha R3 और R25 को जापान में लॉन्च किया गया है। इन दोनों ही बाइक को नया कलर ऑप्शन देने के साथ ही नए फीचर्स भी दिए गए हैं। नए कलर में यह दोनों मोटरासाइकिल काफी आकर्षक दिखाई देती है। इसके साथ ही यह दोनों ही पहले के मुकाबले ज्यादा बेहतरी हेडलाइट और स्क्रीन पर मिलने वाले नए फीचर्स और बेहतर हो गई है।

**नई दिल्ली।** यामाहा ने अपनी दो मोटरसाइकिल 2025 YZF R3 और YZF R25 को लॉन्च किया है। दोनों ही मोटरसाइकिल में पैरेलल-ट्विन इंजन का इस्तेमाल किया गया है और इन्हें नए कलर ऑप्शन भी दिए गए हैं, जो दोनों में समान ही मिलते हैं। इन दोनों मोटरसाइकिल को जापानी बाजार में लॉन्च किया गया है। आइए इन मोटरसाइकिल के बार में विस्तार से जानते हैं और जानते हैं कि इन दोनों में क्या नए फीचर्स दिए गए हैं।

**कीमत**

2025 Yamaha R3 - 660,000 येन (लगभग 3.80 लाख रुपये)

2025 Yamaha R25 - 628,000 येन (लगभग 3.62 लाख रुपये)

2025 Yamaha YZF R3

**Yamaha YZF R3**

यामाहा ने अपनी इस मोटरसाइकिल को अपडेटेड स्टाइलिंग के साथ लॉन्च किया है, जो पहले से ज्यादा अट्रैक्टिव दिखती है। इसमें दिए गए शार्प लुकिंग फ्रंट फेयरिंग और संकीर्ण टेल सेक्शन इसे स्पोर्टी और स्टाइलिश लुक देते हैं। इसे तीन शानदार कलर ऑप्शन Deep Purplish Blue Metallic, Matte Dark Gray Metallic और Matte Yellowish White दिए गए हैं।

इसके इंजन की बात करें तो Yamaha YZF R3 में 321cc का पैरेलल-ट्विन इंजन का इस्तेमाल किया गया है, जो 42PS की पावर और 30Nm का टॉर्क जनरेट करता है। इसमें 37mm इनवर्टेड फोर्क सस्पेंशन और रियर मोनोशॉक सस्पेंशन दिया गया है। इसमें ब्रेकिंग के लिए 298mm फ्रंट डिस्क और 220mm रियर डिस्क ब्रेक्स दिए गए हैं, जिनके साथ ड्यूल-चैनल ABS भी है।

इसमें मिलने वाले फीचर्स की बात करें तो इसमें पूरी तरह से ED लाइटिंग दी है। इसमें मल्टी-फंक्शन LCD डिस्प्ले दिया गया है, जो स्मार्टफोन कनेक्टिविटी को सपोर्ट करता है। इसके अलावा, SMS और कॉल अलर्ट्स जैसी सुविधा भी मिलती है।

**2025 Yamaha YZF R25**

**Yamaha YZF R25**

2025 यामाहा YZF R25 भी यामाहा R3 के जैसी ही स्टाइलिस है। इसमें दिया गया फ्रंट फेयरिंग तकरीबन वैसा ही है, जो R3 में दिया गया है। वहीं, इसमें R3 में दिए कलर ऑप्शन Deep Purplish Blue Metallic, Matte Dark Gray Metallic और Matte Yellowish White भी समान है।

इसके इंजन की बात करें तो इसमें 249cc का पैरेलल-ट्विन इंजन का इस्तेमाल किया गया है, जो 35PS की पावर और 23Nm का टॉर्क जनरेट करता है। यह भी यामाहा R3 की तरह ही हाई रेव्विंग और लाइनियर पावर डिलीवरी के लिए पॉपुलर है। इसमें R3 जैसा सस्पेंशन और ब्रेकिंग सेटअप मिलता है। फीचर्स की बात करें तो इसमें भी LED लाइटिंग और LCD डिस्प्ले दिया गया है, जो स्मार्टफोन कनेक्टिविटी सपोर्ट के साथ आता है।

# इस धाकड़ SUV पर 75,000 रुपये तक की छूट, एडवांस सेफ्टी फीचर्स समेत प्रीमियम सुविधाओं से है लैस

परिवहन विशेष न्यूज

महिंद्रा ऑटो अपनी Mahindra XUV700 पर बंपर डिस्काउंट दे रही है। कंपनी अपनी इस शानदार SUV पर 75000 रुपये तक का डिस्काउंट दे रही है। यह डिस्काउंट इसके टॉप-स्पेक वेरिएंट पर मिल रही है। इसके बाकी वेरिएंट पर कंपनी की तरफ से कोई डिस्काउंट नहीं दिया जा रहा है। आइए विस्तार में जानते हैं कि Mahindra XUV700 के किस मॉडल पर कितना डिस्काउंट मिल रहा है।

हाल में जहां एक तरफ कार निर्माता कंपनियां अप्रैल 2025 से अपनी गाड़ियों की कीमतों की बढ़ोतरी का एलान कर रही है, वहीं, दूसरी तरफ महिंद्रा ने अपनी एक SUV की कीमत में 75,000 रुपये तक की कमी कर दी है। महिंद्रा की तरफ से जिस SUV पर इतना ज्यादा डिस्काउंट दिया जा रहा है, वह Mahindra XUV700 है। इसपर डिस्काउंट मिलने के बाद यह और किफायती हो गई है।

**महिंद्रा XUV700 के इन वेरिएंट पर छूट**

महिंद्रा XUV700 के टर्बो-पेट्रोल और डीजल वेरिएंट्स पर यह डिस्काउंट दिया जा रहा है, जो हाई-स्पेक AX7 और AX7 L ट्रिम्स पर आधारित है। इसके लो-स्पेक वेरिएंट की कीमतों पर किसी तरह का डिस्काउंट नहीं दिया जा रहा है।

**Mahindra XUV700 टर्बो-पेट्रोल कीमतें**

| वेरिएंट | पुरानी कीमत (रुपये) | नई कीमत (रुपये) | अंतर (रुपये) |
|---|---|---|---|
| MX MT 5-सीटर | 13.99 लाख | 13.99 लाख | कोई अंतर नहीं |
| MX MT 7-सीटर | 14.99 लाख | 14.99 लाख | कोई अंतर नहीं |
| AX3 MT 5-सीटर | 16.39 लाख | 16.39 लाख | कोई अंतर नहीं |
| AX3 AT 5-सीटर | 17.99 लाख | 17.99 लाख | कोई अंतर नहीं |
| AX5 MT 5-सीटर | 17.69 लाख | 17.69 लाख | कोई अंतर नहीं |
| AX5 AT 5-सीटर | 19.29 लाख | 19.29 लाख | कोई अंतर नहीं |
| AX5 MT 7-सीटर | 18.34 लाख | 18.34 लाख | कोई अंतर नहीं |
| AX5 AT 7-सीटर | 19.94 लाख | 19.94 लाख | कोई अंतर नहीं |
| AX5 S MT 7-सीटर | 16.89 लाख | 16.89 लाख | कोई अंतर नहीं |
| AX5 S AT 7-सीटर | 18.64 लाख | 18.64 लाख | कोई अंतर नहीं |
| AX7 MT 6-सीटर | 19.69 लाख | 19.69 लाख | कोई अंतर नहीं |
| AX7 AT 6-सीटर | 21.64 लाख | 21.19 लाख | 45,000 रुपये छूट |
| AX7 MT 7-सीटर | 19.49 लाख | 19.49 लाख | कोई अंतर नहीं |
| AX7 AT 7-सीटर | 21.44 लाख | 20.99 लाख | 45,000 रुपये छूट |
| AX7 Ebony MT 7-सीटर | --- | 19.64 लाख | हाल में लॉन्च हुई |
| AX7 Ebony AT 7-सीटर | --- | 21.14 लाख | हाल में लॉन्च हुई |
| AX7 L AT 6-सीटर | 24.14 लाख | 23.39 लाख | 75,000 रुपये छूट |
| AX7 L AT 7-सीटर | 23.94 लाख | 23.19 लाख | 75,000 रुपये छूट |

**Mahindra XUV700 डीजल कीमतें**

| वेरिएंट | पुरानी कीमत (रुपये) | नई कीमत (रुपये) | अंतर (रुपये) |
|---|---|---|---|
| MX MT 5-सीटर | 13.99 लाख | 13.99 लाख | कोई अंतर नहीं |
| MX MT 7-सीटर | 14.99 लाख | 14.99 लाख | कोई अंतर नहीं |
| AX3 MT 5-सीटर | 16.39 लाख | 16.39 लाख | कोई अंतर नहीं |
| AX3 AT 5-सीटर | 17.99 लाख | 17.99 लाख | कोई अंतर नहीं |
| AX5 MT 5-सीटर | 17.69 लाख | 17.69 लाख | कोई अंतर नहीं |
| AX5 AT 5-सीटर | 19.29 लाख | 19.29 लाख | कोई अंतर नहीं |
| AX5 MT 7-सीटर | 18.34 लाख | 18.34 लाख | कोई अंतर नहीं |
| AX5 AT 7-सीटर | 19.94 लाख | 19.94 लाख | कोई अंतर नहीं |
| AX5 S MT 7-सीटर | 16.89 लाख | 16.89 लाख | कोई अंतर नहीं |
| AX5 S AT 7-सीटर | 18.64 लाख | 18.64 लाख | कोई अंतर नहीं |
| AX7 MT 6-सीटर | 19.69 लाख | 19.69 लाख | कोई अंतर नहीं |
| AX7 AT 6-सीटर | 21.64 लाख | 21.19 लाख | 45,000 |
| AX7 MT 7-सीटर | 19.99 लाख | 19.99 लाख | कोई अंतर नहीं |
| AX7 AT 7-सीटर | 22.14 लाख | 21.69 लाख | 45,000 |
| AX7 AT 7-सीटर AWD | 23.34 लाख | 22.89 लाख | 45,000 |
| AX7 Ebony MT 7-सीटर | --- | 20.14 लाख | हाल में लॉन्च हुई |
| AX7 Ebony AT 7-सीटर | --- | 21.84 लाख | हाल में लॉन्च हुई |
| AX7 L MT 6-सीटर | 23.24 लाख | 22.49 लाख | 75,000 |
| AX7 L AT 6-सीटर | 24.94 लाख | 24.19 लाख | 75,000 |
| AX7 L MT 7-सीटर FWD | 22.99 लाख | 22.24 लाख | 75,000 |
| AX7 L AT 7-सीटर FWD | 24.74 लाख | 23.99 लाख | 75,000 |
| AX7 L AT 7-सीटर AWD | 25.74 लाख | 24.99 लाख | 75,000 |
| AX7 L Ebony MT 7-सीटर FWD | – | 22.39 लाख | हाल में लॉन्च हुई |
| AX7 L Ebony AT 7-सीटर FWD | – | 24.14 लाख | हाल में लॉन्च हुई |

| वेरिएंट | पुरानी कीमत (रुपये) | नई कीमत (रुपये) | अंतर (रुपये) |
|---|---|---|---|
| MX MT 5-सीटर | 13.99 लाख | 13.99 लाख | कोई अंतर नहीं |
| MX MT 7-सीटर | 14.99 लाख | 14.99 लाख | कोई अंतर नहीं |
| AX3 MT 5-सीटर | 16.39 लाख | 16.39 लाख | कोई अंतर नहीं |
| AX3 AT 5-सीटर | 17.99 लाख | 17.99 लाख | कोई अंतर नहीं |
| AX5 MT 5-सीटर | 17.69 लाख | 17.69 लाख | कोई अंतर नहीं |
| AX5 AT 5-सीटर | 19.29 लाख | 19.29 लाख | कोई अंतर नहीं |
| AX5 MT 7-सीटर | 18.34 लाख | 18.34 लाख | कोई अंतर नहीं |
| AX5 AT 7-सीटर | 19.94 लाख | 19.94 लाख | कोई अंतर नहीं |
| AX5 S MT 7-सीटर | 16.89 लाख | 16.89 लाख | कोई अंतर नहीं |
| AX5 S AT 7-सीटर | 18.64 लाख | 18.64 लाख | कोई अंतर नहीं |
| AX7 MT 6-सीटर | 19.69 लाख | 19.69 लाख | कोई अंतर नहीं |
| AX7 AT 6-सीटर | 21.64 लाख | 21.19 लाख | 45,000 |
| AX7 MT 7-सीटर | 19.49 लाख | 19.49 लाख | कोई अंतर नहीं |
| AX7 AT 7-सीटर | 21.44 लाख | 20.99 लाख | 45,000 |
| AX7 Ebony MT 7-सीटर | --- | 19.64 लाख | हाल में लॉन्च हुई |
| AX7 Ebony AT 7-सीटर | --- | 21.14 लाख | हाल में लॉन्च हुई |
| AX7 L AT 6-सीटर | 24.14 लाख | 23.39 लाख | 75,000 रुपये छूट |
| AX7 L AT 7-सीटर | 23.94 लाख | 23.19 लाख | 75,000 रुपये छूट |
| AX7 L Ebony AT 7-सीटर FWD | – | 23.34 लाख | हाल में लॉन्च हुई |

| इंजन ऑप्शन | इंजन |
|---|---|
| 2-लीटर टर्बो पेट्रोल | 2.2-लीटर डीजल |
| पावर | |
| 200 PS | Up to 185 PS |
| टॉर्क | |
| 380 Nm | 450 Nm |
| ट्रांसमिशन | |
| 6-स्पीड MT/ 6-स्पीड AT | 6-स्पीड MT/ 6-स्पीड AT |
| ड्राइवट्रेन | |
| FWD | FWD/AWD |

**सुविधाएं और सेफ्टी फीचर्स**

Mahindra XUV700 को कई बेहतरीन फीचर्स के साथ ऑफर किया जाता है। इसमें 10.25 इंच का डिजिटल ड्राइवर डिस्प्ले, 10.25 इंच का टचस्क्रीन, 6-वे पावर्ड ड्राइवर सीट और पैनोरमिक सनरूफ जैसी सुविधाएं दी जाती है। इसमें 12-स्पीकर सोनी साउंड सिस्टम, ड्यूल-ज़ोन ऑटो एसी, वायरलेस फोन चार्जर, वेंटिलेटेड फ्रंट सीट्स और 6-वे इलेक्ट्रिकली एडजस्टेबल ड्राइवर सीट भी मिलती है।

इसमें सेफ्टी फीचर्स के रुप में सात एयरबैग, टायर प्रेशर मॉनिटरिंग सिस्टम (TPMS), ISOFIX चाइल्ड सीट एंकरेज, और 360 डिग्री कैमरा दिया जाता है। इसमें लेवल-2 एडवांस्ड ड्राइवर-असिस्टेंस सिस्टम्स (ADAS) का सेट भी मिलता है, जिसमें लेन-कीपिंग असिस्ट और एडaptive क्रूज कंट्रोल जैसे फीचर्स शामिल है।

# देश की भाषिक योजना और हिंदी

विजय गर्ग

दरअसल, हिंदी बोलने वालों की जो जनसंख्या वर्ष 2001 में थी, उसमें 2011 तक अखिल भारतीय स्तर पर 25 .19 फीसद की वृद्धि हुई, लेकिन यही विस्तार किसी पूर्ण राज्य के रूप में तमिलनाडु में सबसे ऊपर है, जो अब 107 .62 फीसद है। आगे यह केरल में 96 .80, गोवा में 95 .40, गुजरात में 78 .53 और कर्नाटक में 49 .71 फीसद है। हिंदी-विस्तार का यही आंकड़ा उत्तर प्रदेश 23 .86 फीसद, बिहार र में 33 .08 और मध्यप्रदेश में 2 .15 फीसद है।

देश में आजादी का आंदोलन और हिंदी की स्वीकार्यता दोनों कार्य समांतर चल रहे थे। उस समय अंग्रेजों और अंग्रेजी दोनों के बरक्स हिंदी एक औजार की तरह कार्य कर रही थी। यही कारण था कि बाद में हिंदी स्वतंत्र भारत की भाषिक अभिव्यक्ति बनी। इसके पीछे सिर्फ महात्मा गांधी नहीं, देशभर के स्वतंत्रता सेनानी इस मत के साथ कार्य कर रहे थे कि देश के लोकतंत्र की भाषा हिंदी होगी। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी हिंदी को केंद्रीय स्तर पर राजभाषा का दर्जा दिया गया। हालांकि इसके साथ अंग्रेजी को भी राजभाषा का दर्जा मिला था, जिसके मूल में अंग्रेजी की विरासत और कुछ छिटपुट हिंदी विरोध था। मगर तब से और आज तक धरातल पर बहुत कुछ बदल चुका है। वर्ष 2001 और 2011 की जनगणना के आंकड़ों के आधार पर निकले निष्कर्ष को देखें, तो हिंदी विरोध के गुब्बारे में सुई जमीनी स्तर से चुभाई जा रही है। इसलिए राजनीति में नकारात्मक भाषाई मुद्दों को चुनने का ढर्रा अब बदल देना चाहिए। निराशा की बात है कि ऐसा नहीं रहा और दिनों-दिन इस तरह के मुद्दे उठाए जाने लगे हैं।

दरअसल, हिंदी बोलने वालों की जो जनसंख्या वर्ष 2001 में थी, उसमें 2011 तक अखिल भारतीय स्तर पर 25.19 फीसद की वृद्धि हुई, लेकिन यही विस्तार किसी पूर्ण राज्य के रूप में तमिलनाडु में सबसे ऊपर है, जो अब 107.62 फीसद है। आगे यह केरल में 96.80, गोवा में 95.40, गुजरात में 78.53 और कर्नाटक में 49.71 फीसद है। हिंदी- विस्तार का यही आंकड़ा उत्तर प्रदेश 23.86 फीसद, बिहार र में 33.08 और मध्यप्रदेश में 2.15 फीसद है। गौरतलब है कि यह क्षेत्र कथित रूप से हिंदी प्रदेश है और यहां इन दस वर्षों के अंतराल में जनसंख्य के कुल विस्तार वाले फीसद की अवहेलना भी नहीं की जा सकती है। लिहाजा, धारणा से विपरीत हिंदी का मूल विस्तार उन्हीं क्षेत्रों में अधिक हुआ है, जहां जहां परंपरागत रूप हिंदी का प्रभाव नहीं माना गया है और उसमें भी तमिलनाडु सबसे ऊपर है। गौरतलब है वहां हिंदी को थोपा नहीं गया है, हिंदी-विरोध तो वहां की राजनीति का केंद्रीय तत्त्व है। दरअसल, ऐसा इसलिए हो रहा है कि आज अंतरराज्यीय रोजगार, शिक्षा और मनोरंजन आदि की चाहत में लोगों ने हिंदी सीखी है या इन्हीं कारणों से विस्थापन हुआ है। यदि हिंदी को थोपना होता, तो यह संविधान की मूल मंशा के अनुरूप आज देश की अनिवार्य राजभाषा होती, लेकिन यह सच्चाई किसी से नहीं छिपी है कि स्वतंत्रता के इतने साल बाद भी सरकारी कामकाज की भाषा स्वाभाविक रूप से अंग्रेजी ही है। जाहिर है कि हिंदी अपनी जमीन से आगे बढ़ रही है, ऊपर से थोपी नहीं गई है।

इस क्रम में हिंदी को लेकर कुछ बने बनाए भ्रम से देश जितना जल्दी जल्दी निकल जाए, तो अच्छा होगा। सर्वप्रथम तो यही कि 'हिंदी पट्टी' जैसी कोई चीज वास्तविक धरातल पर नहीं है। यह सिर्फ ग्रियर्सन (1928) द्वारा प्रस्तावित 'हिंदी बेल्ट' का अनुवाद भर है, जिसे रामविलास शर्मा आदि सरीखे विद्वानों ने हिंदी में जड़भूत कर दिया। जिस बड़े क्षेत्र को ग्रियर्सन ने 'हिंदी बेल्ट' कहा था, उसी में से बिहार को 'बिहारी भाषा' वाला क्षेत्र बताया था। आज अगर इस भाषा को खोजा जाएगा, तो न तो वास्तव में कोई 'बिहारी भाषा' का अस्तित्व है और न ही 'हिंदी बेल्ट' का वास्तव में इस पट्टी में हिंदी से अधिक प्यार पाने वाली दूसरी सैकड़ों भाषाएं हैं और ये सभी लोग हिंदी को उसी व्यावहारिकता के धरातल पर खड़ा होकर स्वीकार करते हैं, जैसे देश के दूसरे हिस्सों के लोग।

गौरतलब है कि जिस कथित हिंदी पट्टी को हिंदी का ज्ञाता समझ लिया जाता है, वहां हिंदी को अलग से सीखा जाता है। यहां दूर-दराज के क्षेत्रों में आज भी हिंदी उसी तरह है, जैसे बांग्ला, असमिया और गुजराती आदि हो सकती है। यहां तक कि हिंदी का प्रांतीय स्वरूप

अपने आप में भिन्न है, जो हिंदी के लोकतांत्रिक चरित्र का सबसे सुंदर उदाहरण है। दूसरी तरफ आज देश में हिंदी 5 नाम पर घोषित सरकारी-गैरसरकारी नौकरियों का अखिल भारतीयकरण तेजी से हुआ है। अब देश को जोड़ने, चलाने और जातीय संस्कृति को अक्षुण्ण रखने के लिए संवाहक भाषाओं की जरूरत हमेशा रहेगी और इसमें हिंदी सर्वाधिक उपयोगी है।

समाज खैर, लोकतंत्र में किसी को इतना शक्तिशाली नहीं होना चाहिए कि वह देश और समाज का एकमेव निर्धारक बन जाए। भाषाएं बहुभाषिक के लोकतंत्र की नियामक होती हैं। अगर अंग्रेजी का शक्तिशाली होना भारतीय रतीय लोकतंत्र की मूल भावना के खिलाफ है, तो इसकी संभावना हिंदी के साथ भी बनी रहेगी। मगर हिंदी और अंग्रेजी की आपस में हिंदी निश्चित रूप से भारतीय लोकतंत्र के लिए सर्वाधिक उपयोगी रही है। इसलिए भी अपने इतिहास से ही हिंदी ने समायोजन पर जोर दिया है, बहिष्कार पर नहीं। यही कारण है कि इसमें अरबी, फारसी, उर्दू और अंग्रेजी आदि के सैकड़ों शब्द सहज स्वीकृत हैं और यही इसकी शक्ति है, जिससे इसने अपना रास्ता खुद बनाया और आगे भी बनाएगी तथा भारतीय बहुभाषिकता के मूल चरित्र की रक्षा करेगी, जिसमें देश की सभी भाषाएं शामिल हैं।र

इसका सबसे उदाहरण आज भोजपुरी को लेकर देखा जा सकता है। हैरत की बात है कि सरकार ने आज तक इसे आठवीं अनुसूची में शामिल करने लायक नहीं समझा, लेकिन गूगल ने इसमें मशीनी अनुवाद को विकसित कर दिया है। इधर डिजिटल मीडिया को लेकर फिक्की द्वारा किए गए एक अध्ययन में पाया गया है कि वर्ष 2023 में टीवी के दर्शक के रूप में भोजपुरी भाषी न सिर्फ अंग्रेजी, बांग्ला, उड़िया, मलयालम से कई गुना आगे हैं, बल्कि पंजाबी, तेलुगु, मराठी और तमिल के बराबर है। इसका संगीत, फिल्म उद्योग और डिजिटल मीडिया के माध्यम से लगातार आगे बढ़ रहा है। इसमें देश के सभी भाषा भाषियों के लिए रोजगार के अवसर पैदा हुए हैं। हैं। हिंदी के पास न तो आज शास्त्रीयता के दर्जे की हकदारी है और न ही वह कतार में खड़ी है, लेकिन इसमें एक उदात्त भाव है, जो ईमानदार और शंका से सर्वथा परे है। यह । यह देश की रवानगी की अपनी भाषा है, जो जड़ीभूत न होकर पूर्वाग्रह से मुक्त एक गतिशील भाषा है।

असल में, भारतीय लोक और लोकतंत्र को हिंदी में सबसे सहज ढंग से चरितार्थ किया जा सकता है। अंग्रेजी में न तो तमिलनाडु की आम जनता से संवाद संभव है और न ही कहीं और भाषा एक सामासिक परिसंपत्ति होती है, इस क्षेत्र में आत्मनिर्भरता की बात सोचना भी मूर्खता है। दो अलग-अलग भाषाओं से दो व्यक्ति, दो समाज, दो कमरे बन सकते हैं, जबकि इनमें संवाद के लिए किसी एक भाषा की जरूरत होगी, दो बंद कमरों से निकल कर एक आंगन की जरूरत होगी। हिंदी इसी धरातल पर देश की सभी भाषाओं से सबसे आगे है और रहेगी भी।

**सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब**

# इंटरनेट और सुरक्षा

विजय गर्ग

आज का युग तकनीकी युग है, हर क्षेत्र में विकास हो रहा है। विकास का श्रेय मुख्यतः प्रौद्योगिकी और विज्ञान को जाता है। जब हम अतीत के बारे में सोचते हैं तो हमें याद आता है कि पहले के समय में चिट्ठियाँ किसी अपने की कुशलक्षेम पूछने के लिए भेजी जाती थीं। जब डाकिये की साइकिल की घंटी बजती थी तो हर गृहिणी को अपने सगे-संबंधियों की याद आती थी कि शायद उनका भी कोई पत्र आया होगा। जैसा कि हमने देखा, समय बदल गया और गांवों में शराब पीने का चलन भी बदल गया। सी। उन्होंने खोला. गांव में हर व्यक्ति अपने रिश्तेदारों के बीच शराब पीता है। सी। उन लोगों के नंबर बदल दिए गए। लोग आते-जाते रहे और पूछते रहे कि क्या उन्हें कोई कॉल आया है। इसके बाद तकनीक में और विकास हुआ और बहुत से पढ़े-लिखे और पूंजीपतियों ने अपने घरों में लैंडलाइन फोन लगवा लिए। इसी तरह संचार उपकरणों की पीढ़ी बढ़ी और मोबाइल फोन की नई पीढ़ी आ गई। मोबाइल फोन की तकनीक इतनी विकसित हो गई है कि हर दिन नए प्रकार के मोबाइल फोन बाजार में आ रहे हैं। जैसे-जैसे समय बीतता गया, संचार और तकनीक इतनी विकसित हुई कि इंटरनेट की मदद से मोबाइल फोन ने संचार को बहुत आसान बना दिया, जबकि कंप्यूटर के सभी कार्य मोबाइल फोन पर किए जाने लगे। वर्तमान समय में मोबाइल फोन और इंटरनेट का उपयोग इतना बढ़ गया है कि बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक सभी को इसकी लत लग गई है। सभी वर्ग के लोगों के लिए मोबाइल फोन के बिना एक दिन भी गुजारना असंभव हो गया है। अंततः, इंटरनेट और मोबाइल फोन आज की मुख्य आवश्यकताओं में से एक हैं। यद्यपि इंटरनेट जैसी सुविधा ने मानव जीवन को अनेक लाभ पहुंचाए हैं, लेकिन इसने प्रत्येक व्यक्ति के व्यक्तिगत डेटा की सुरक्षा के बारे में कुछ चिंताएं भी उत्पन्न की हैं। आज के आधुनिक युग में, हर कोई आमतौर पर सोशल मीडिया पर अपनी तस्वीरें, वीडियो आदि अपलोड करता है। लेकिन कई शरारती तत्व किसी की तस्वीरों और वीडियो का दुरुपयोग करते हैं, खासकर लड़कियों की तस्वीरों का। जो कि पूर्णतः अवैध है। कुछ लोगों द्वारा किए गए ऐसे कृत्यों के कारण कभी-कभी लड़की और उसके परिवार को बहुत कुछ सहना पड़ता है और कभी-कभी तो बात आत्महत्या तक पहुंच जाती है।

इसके अलावा साइबर स्पेस में आर्थिक धोखाधड़ी और वित्तीय घोटाले की खबरें आम हैं। कई साइबर अपराधी दिमागी खेल के माध्यम से लाखों रुपए के कारोबार पर कब्जा कर लेते हैं। अब यहां पर विचार करने वाली बात यह है कि इन बेहद साफ-सुथरी धोखाधड़ी पर नियंत्रण कैसे किया जाए। जहां तक मेरा मानना है, इसका समाधान केवल दो हाथों में है। एक तो स्वयं जनता और दूसरी सरकारें। हम सभी को अपना व्यक्तिगत डेटा निजी रखने की आवश्यकता है, यदि सोशल मीडिया पर चित्र अपलोड किए जा रहे हैं तो सुनिश्चित करें कि कोई भी आपके चित्रों का दुरुपयोग न करे। इसके अलावा, यदि आप अपने फोन से ई-बैंकिंग जैसी सुविधाओं का भी लाभ उठा रहे हैं, तो सुनिश्चित करें कि आपके बैंक खाते की जानकारी और डेबिट या क्रेडिट कार्ड का पासवर्ड किसी के साथ साझा न किया जाए। इसके अलावा सरकारों को साइबर सुरक्षा को भी ध्यान में रखना चाहिए, साइबर अपराधियों को कड़ी सजा देनी चाहिए तथा लोगों के व्यक्तिगत डेटा की सुरक्षा सुनिश्चित करनी चाहिए, ताकि लोग बिना किसी डर के और अपनी सुरक्षा सुनिश्चित करते हुए तकनीकी सुविधाओं का लाभ उठा सकें।

**सेवानिवृत्त प्रिंसिपल शैक्षिक स्तंभकार मलोट**

# दादी-नानी की गोद से विश्व मंच तक कहानियां

विजय गर्ग

जब शब्द नृत्य करते हैं, भावनाएं जागती हैं, और समय की धारा में एक जादुई चित्र उभरता है—तब जन्म लेती है एक कहानी। हर साल 20 मार्च को मनाया जाने वाला विश्व किस्सागोई दिवस केवल एक तारीख नहीं, बल्कि उस अनमोल परंपरा का उत्सव है जो मानव सभ्यता की नींव में बसी है। कहानियां सिर्फ शब्दों का संग्रह नहीं होतीं, वे समय की नदी में बहती जादुई लहरें हैं, जो सुनने वाले को एक अनदेखे सफर पर ले जाती हैं और कहने वाले के मन को अभिव्यक्ति का आकाश देती हैं। यह दिन हमें याद दिलाता है कि हमारा वजूद, हमारी पहचान और हमारा इतिहास—सब कुछ कहानियों के रंगीन धागों से बुना गया है। चाहे वह दादी-नानी की गोद में सुनी लोककथाएं हों, किताबों में दर्ज ऐतिहासिक गाथाएं हों, हर कथा जीवन को समझने की नई दृष्टि देती है।

विश्व किस्सागोई दिवस एक ऐसा अनुपम उत्सव है, जो कहानियों के अलौकिक आकर्षण को केंद्र में लाता है और मानव सभ्यता की अनमोल विरासत को संजोते हुए सांस्कृतिक एकता का प्रतीक बनता है। इसकी नींव 1991 में स्वीडन में पड़ी, जब इसे 'राष्ट्रीय किस्सागोई दिवस' के रूप में मनाया गया; कालांतर में 2001 में यह 'विश्व किस्सागोई दिवस' के रूप में वैश्विक मंच पर स्थापित हो गया। यह दिन मौखिक कथाओं और लोकसाहित्य की असीम शक्ति का उत्सव है, जहां हर साल एक नई थीम—2025 में 'गहरा पानी'—कथाकारों को प्रेरित करती है। इस थीम के अंतर्गत वे संकट की घड़ियों, जल के रहस्यमय संसार या सागर की अथाह गहराइयों से कथाएं गढ़ते हैं।

कहानी कहना मानवता की सबसे पुरानी कला है। जब हमारे पूर्वज गुफाओं में आग के चारों ओर बैठते थे, तब भी वे अपने अनुभवों को कहानियों में ढालते थे। उन कहानियों ने न केवल उनका मनोरंजन किया, बल्कि आने वाली पीढ़ियों को जीवन के सबक, नैतिकता और साहस की प्रेरणा दी। आज एक मां अपने बच्चे को सोते वक्त जो कहानी सुनाती है, वह सिर्फ नींद लाने का जरिया नहीं होती—वह उसके कोमल मन में सपनों के बीज बोती है। एक लेखक जो अपनी किताब में समाज की सच्चाई उकेरता है, वह पाठक के विचारों को झकझोर देता है। कहानी केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि एक दर्पण है जो हमें हमारा अतीत दिखाता है, एक खिड़की है जो भविष्य की झलक देती है, और एक पुल है जो हमें एक-दूसरे से जोड़ता है।

डिजिटल युग ने कहानियों को नए पंख दिए हैं। पहले जो किस्से गांव के चबूतरे पर या अलाव की गर्माहट में सुनाए जाते थे, वे आज पॉडकास्ट की आवाज, वेब सीरीज़ के दृश्यों और सोशल मीडिया के छोटे-छोटे वीडियो में जीवंत हो उठे हैं। टेक्नोलॉजी ने कहानी कहने के तरीके को बदला है, लेकिन उसकी आत्मा को नहीं छुआ। आज भी एक अच्छी कहानी सुनते ही हमारा मन उसमें खो जाता है, हमारी आंखों के सामने चित्र उभरने लगते हैं, और हमारा दिल भावनाओं की लहरों में डूब जाता है। कहानी की वह ताकत अब भी बरकरार है जो हमें हंसाती है, रुलाती है, और सोचने पर मजबूर करती है।

इतिहास गवाह है कि कहानियों ने समाज को बदलने में अहम भूमिका निभाई है। महाभारत और रामायण जैसी पौराणिक कथाएं हमें धर्म और कर्म का पाठ पढ़ाती हैं, तो मुंशी प्रेमचंद की कहानियां हमें गरीबी और अन्याय की कड़वी सच्चाई से रूबरू कराती हैं। भगत सिंह की डायरी के पन्ने और गांधी जी की आत्मकथा हमें आजादी के संघर्ष की कहानी सुनाते हैं, जो आज भी युवाओं में जोश भर देती हैं। एक कहानी नायक को जन्म दे सकती है, एक क्रांति को प्रज्वलित कर सकती है और एक समाज को नई दिशा दे सकती है। जब मार्टिन लूथर किंग ने अपने सपनों की कहानी सुनाई, तो उसने नस्लवाद के खिलाफ एक आंदोलन खड़ा कर दिया।

आज का यह दिन हमें यह भी याद दिलाता है कि हर इंसान के भीतर एक अनकही कहानी छिपी है। आपकी जिंदगी का वह छोटा-सा किस्सा, जो आपको हंसाता है, या वह अनुभव, जो आपको रुला देता है—वह भी एक कहानी है। इस दिन हम यह संकल्प ले सकते हैं कि हम अपनी कहानियों को दुनिया के सामने लाएंगे। एक बच्चे को लोककथा सुनाएंगे, एक दोस्त के साथ अपने जीवन का कोई यादगार पल साझा करेंगे, या अपनी संस्कृति की गाथाओं को अगली पीढ़ी तक पहुंचाएंगे।

कहानी सिर्फ शब्दों का संग्रह नहीं, यह अनुभवों का उजाला है—एक रोशनी, जो न केवल हमारे भीतर के अंधेरे को मिटाती है, बल्कि दूसरों के जीवन में भी उजाला भरती है।

# कहानी :धैर्य का गुण

विजय गर्ग

एक टीचर ने क्लास के सभी बच्चों को एक-एक स्वादिष्ट टॉफ़ी दी और फिर एक अजीब बात कही* सुनो, बच्चो ! आप सभी को दस मिनट तक अपनी टॉफ़ी नहीं खानी है और यह कहकर वह क्लास रूम से बाहर चले गए। कुछ पल के लिए क्लास में सन्नाटा छाया रहा, हर बच्चा अपने सामने रखी टॉफ़ी को देख रहा था और हर गुज़रते पल के साथ खुद को रोकना मुश्किल पा रहा था।

दस मिनट पूरे हुए और टीचर क्लास रूम में आ गए। समीक्षा की तो पाया कि पूरी क्लास में सात बच्चे ऐसे थे, जिनकी टॉफ़ियां ज्यों की त्यों थी, जबकि बाकी के सभी बच्चे टॉफ़ी खाकर उसके रंग और स्वाद पर बातें कर रहे थे*।

टीचर ने चुपके से इन सात बच्चों के नाम अपनी डायरी में लिख लिये। किसी को कुछ नहीं कहा और पढ़ाना शुरू कर दिया।

इस टीचर का नाम वाल्टर मशाल था।

कुछ वर्षों के बाद टीचर वाल्टर ने अपनी वही डायरी खोली और सातों बच्चों के नाम निकाल कर उनके बारे में जानकारी प्राप्त की।

उन्हें पता चला कि सातों बच्चों ने अपने जीवन में कई सफलताओं को हासिल किया है और अपनी-अपनी फील्ड के लोगों में सबसे सफल रहे हैं। टीचर वाल्टर ने अपनी उसी क्लास के शेष छात्रों की भी जानकारी प्राप्त की और यह पाया कि उनमें से ज्यादातर बच्चे साधारण जीवन जी रहे थे जबकि उनमें कुछ ऐसे भी थे जिन्हें कठिन आर्थिक और सामाजिक परिस्थितियों का सामना करना पड़ रहा है।

इस शोध का परिणाम टीचर वाल्टर ने एक वाक्य में यह निकाला कि -रजो व्यक्ति केवल दस मिनट धैर्य नहीं रख सकता, वह जीवन में कभी आगे नहीं बढ़ सकता।र

इस शोध को दुनिया भर में शोहरत मिली और इसका नाम रमार्श मेलो थ्योरीर रखा गया था क्योंकि टीचर वाल्टर ने बच्चों को जो टॉफ़ी दी थी उसका नाम रमार्श मेलोर था।

इस थ्योरी के अनुसार दुनिया के सबसे सफल लोगों में कई गुणों के साथ एक गुण 'धैर्य' अवश्य पाया जाता है क्योंकि यह गुण इंसान में बर्दाश्त करने की ताक़त को बढ़ाता है, जिसकी बदौलत आदमी कठिन परिस्थितियों में भी निराश नहीं होता और वह एक सफल व्यक्ति बन जाता है इसलिए सफल जीवन और सुखद भविष्य के लिए बचपन से ही बच्चों में धैर्य के गुण का विकास करें।

**सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट**

# तलाक की भेंट चढ़ते 'तेरे मेरे सपने'

आजकल तलाक के बढ़ते मामलों ने समाज में एक नई चिंता को जन्म दिया है। चाहे अरेंज मैरिज हो या प्रेम विवाह, रिश्तों में दूरियाँ बढ़ने से वैवाहिक जीवन अस्थिर होता जा रहा है। तलाक सिर्फ़ दो लोगों को ही नहीं, बल्कि उनके परिवारों, बच्चों और समाज को भी प्रभावित करता है। इसलिए, इसे रोकने के लिए कुछ ठोस क़दम उठाने ज़रूरी हैं। तलाक कोई हल नहीं है, बल्कि यह आखिरी विकल्प होना चाहिए। रिश्ते को मज़बूत और खुशहाल बनाने के लिए आपसी सम्मान, संवाद, धैर्य और प्रेम ज़रूरी हैं। यदि पति-पत्नी एक-दूसरे को समझने की कोशिश करें और रिश्ते में संतुलन बनाए रखें, तो तलाक की दर को कम किया जा सकता है। प्रेम विवाह में तलाक की दर अधिक होने का कारण ग़लत अपेक्षाएँ, कम सहनशीलता, पारिवारिक समर्थन की कमी और संवाद की कमी है। लेकिन सही समझदारी और परिपक्वता से इसे रोका जा सकता है। शादी सिर्फ़ प्यार से नहीं, बल्कि विश्वास, धैर्य और आपसी सहयोग से सफल होती है।

प्रियंका सौरभ

आज के दौर में प्रेम विवाह का प्रचलन तेजी से बढ़ा है, लेकिन इसके साथ ही तलाक की दर भी बढ़ती जा रही है। जहाँ प्रेम विवाह को प्रेम, स्वतंत्रता और आपसी समझ का प्रतीक माना जाता था, वहीं तलाक के बढ़ते मामलों ने इस धारणा पर सवाल खड़े कर दिए हैं। शादी सिर्फ़ दो लोगों का साथ नहीं, बल्कि उनके सपनों, उम्मीदों और भावनाओं का एक संगम होती है। जब दो लोग प्रेम विवाह करते हैं, तो वे भविष्य के कई सुनहरे सपने बुनते हैं—साथ मिलकर जीने के, खुशियाँ बाँटने के और एक खूबसूरत सफ़र तय करने के। लेकिन जब यह सफ़र तलाक की कगार पर पहुँचता है, तो सबसे पहले कुचले जाते हैं 'तेरे मेरे सपने'। शादी से पहले जो जोश, उत्साह और अपनापन होता है, वह धीरे-धीरे कई कारणों से फीका पड़ने लगता है। छोटी-छोटी गलतफहमियाँ, अहंकार की दीवारें और बदलती प्राथमिकताएँ उन सपनों को मिटाने लगती हैं, जिन्हें कभी दोनों ने मिलकर संजोया था।

शादी से पहले एक-दूसरे के लिए जो सपने देखे जाते हैं, वे हक़ीक़त की ज़िम्मेदारियों के बोझ तले दबने लगते हैं। जब सपनों की दिशा अलग-अलग हो जाती है, तो रिश्ते कमजोर पड़ने लगते हैं। प्रेम सम्बंध में अक्सर लोग अपने साथी को एक आदर्श रूप में देखते हैं, लेकिन शादी के बाद जब वास्तविकता सामने आती है, तो असंतोष उत्पन्न हो सकता है। एक सफल विवाह के लिए संवाद बहुत ज़रूरी होता है। यदि जीवनसाथी एक-दूसरे की बातों को समझने और सुनने में असमर्थ होते हैं, तो रिश्ते में दरार आ सकती है। कई बार शादी के बाद आर्थिक दबाव और ज़िम्मेदारियों को निभाने में कठिनाइयाँ आने लगती हैं, जिससे मतभेद बढ़ सकते हैं। प्रेम विवाह में कई बार परिवार और समाज का विरोध झेलना पड़ता है। यदि दंपति मानसिक रूप से मज़बूत नहीं होते, तो यह तनाव उनके रिश्ते को प्रभावित कर सकता है। यदि किसी एक साथी का व्यवहार संदेहास्पद होता है या अविश्वास उत्पन्न होने लगता है, तो यह तलाक का कारण बन सकता है। शादी के बाद जब दोनों व्यक्तियों की प्राथमिकताएँ बदलने लगती हैं और यदि उनकी सोच मेल नहीं खाती, तो रिश्ते में तनाव आ सकता है। आधुनिक समय में करियर को प्राथमिकता देने से वैवाहिक जीवन पर असर पड़ सकता है। कई बार साथी एक-दूसरे की व्यक्तिगत स्वतंत्रता को सीमित करने लगते हैं, जिससे मतभेद बढ़ते हैं। आत्मसम्मान और अहंकार की लड़ाई शुरू हो जाती है। रकौन ज़्यादा सही है?र यह सवाल रिश्ते को भीतर से खोखला करने लगता है और सपने टूटने लगते हैं।

-प्रियंका सौरभ, रिसर्च स्कॉलर इन पॉलिटिकल साइंस, हरियाणा

केवल प्रेम ही नहीं, बल्कि समान विचारधारा, पारिवारिक पृष्ठभूमि, करियर लक्ष्य और जीवनशैली को ध्यान में रखकर जीवनसाथी का चुनाव करें। हर समस्या पर खुलकर बात करें और अपने साथी की भावनाओं को समझने का प्रयास करें। शादी से पहले और बाद में एक-दूसरे से व्यावहारिक अपेक्षाएँ रखें और उन्हें पूरा करने का प्रयास करें। किसी भी रिश्ते की नींव विश्वास होती है। अपने साथी के प्रति निष्ठावान रहें और पारदर्शिता बनाए रखें। हर रिश्ते में उतार-चढ़ाव आते हैं। किसी भी समस्या का समाधान जल्दबाज़ी में न निकालें, बल्कि धैर्यपूर्वक विचार करें। कभी-कभी परिवार और करीबी दोस्तों से सलाह लेना भी रिश्ते को मज़बूत करने में मदद कर सकता है। यदि रिश्ते में समस्याएँ बढ़ रही हैं, तो विवाह विशेषज्ञ या काउंसलर से मार्गदर्शन लेना एक अच्छा विकल्प हो सकता है। शादी के बाद भी एक-दूसरे के सपनों को समझें और उन्हें साथ मिलकर पूरा करने का प्रयास करें। हर छोटी-बड़ी बात पर चर्चा करें, अपने साथी की भावनाओं को समझें और अपनी बात को सही तरीके से सामने रखें। शादी के बाद ज़िम्मेदारियाँ बढ़ जाती हैं, लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि सपनों का त्याग कर दिया जाए। एक-दूसरे को सहयोग दें ताकि व्यक्तिगत इच्छाएँ पूरी हो सकें। जब रिश्ते में अहंकार आ जाता है, तो प्रेम कम होने लगता है। इसलिए हर स्थिति में प्रेम को प्राथमिकता दें। अगर लगने लगे कि रिश्ता बोझ बन रहा है, तो कुछ समय साथ बिताएँ, घूमने जाएँ, पुरानी यादों को ताज़ा करें और रिश्ते को नए सिरे से शुरू करने की कोशिश करें।

प्रेम विवाह में तलाक की बढ़ती दर चिंताजनक है, लेकिन इसे रोका जा सकता है यदि दंपति आपसी समझ, विश्वास और धैर्य बनाए रखें। शादी सिर्फ़ प्रेम पर आधारित नहीं होनी चाहिए, बल्कि उसमें सम्मान, जिम्मेदारी और परिपक्वता का होना भी ज़रूरी है। सही सोच और व्यवहार अपनाकर प्रेम विवाह को सफल और खुशहाल बनाया जा सकता है। तलाक सिर्फ़ कानूनी अलगाव नहीं होता, यह उन सपनों की मौत भी होती है जो कभी दो लोगों ने मिलकर देखे थे। रिश्तों को बचाने के लिए ज़रूरी है कि प्रेम, विश्वास और समझदारी को बनाए रखा जाए। क्योंकि अगर 'तेरे मेरे सपने' बिखर गए, तो सिर्फ़ दो दिल नहीं टूटेंगे, बल्कि दो ज़िंदगियाँ भी अधूरी रह जाएँगी। प्रेम विवाह में तलाक की दर अधिक होने का कारण ग़लत अपेक्षाएँ, कम सहनशीलता, पारिवारिक समर्थन की कमी और संवाद की कमी है। लेकिन सही समझदारी और परिपक्वता से इसे रोका जा सकता है। शादी सिर्फ़ प्यार से नहीं, बल्कि विश्वास, धैर्य और आपसी सहयोग से सफल होती है।

# सूचना अधिकार अधिनियम के कानून का उल्लंघनः सूचना ना मिलने पर क्या करना चाहिए ?

परिवहन विशेष न्यूज

**हिसार।** सूचना का अधिकार अधिनियम 2005 की धारा 6(1) के तहत किसी भी नागरिक को सार्वजनिक प्राधिकरणों से सूचना प्राप्त करने का अधिकार है। यदि कोई राज्य जन सूचना अधिकारी आवेदन प्राप्ति के बाद निर्धारित समय में मांगी गई सूचना प्रदान नहीं करता है तो यह सूचना अधिकार अधिनियम के कानून का उल्लंघन है।

**आरटीआई कानून का उल्लंघनः-**

यदि राज्य जन सूचना अधिकारी (एसपीआईओ) सूचना प्रदान करने में विफल रहता है तो वह आरटीआई अधिनियम की धारा 7(1) एवं 7(2) का उल्लंघन करता है। इसके अलावा यदि एसपीआईओ आवेदक को प्रथम अपीलीय अधिकारी का नाम, संपर्क नम्बर, विवरण तथा अन्य जानकारी मुहैया नहीं करवाता है तो यह धारा 7(8)(iii) एवं 7(9) का उल्लंघन है।

**सविंधान का भी उल्लंघनः-**

सूचना का अधिकार अधिनियम 2005 की धारा 6(1) के तहत सूचना ना देना भारत गणराज्य के सविंधान के अनुच्छेद 19(1)(ए) का भी उल्लंघन है, जो प्रत्येक नागरिक को अभिव्यक्ति और सूचना प्राप्त करने का अधिकार प्रदान करता है।

**कानूनी कार्रवाई के विकल्पः-**

लीगल नोटिस भेजें:-एसपीआईओ को अधिकतम 15 दिनों की समय-सीमा देते हुए स्वंय या अधिवक्ता के माध्यम से लीगल नोटिस भेजें।

शिकायत दर्ज करें:- सूचना का अधिकार अधिनियम की धारा 18 के तहत सम्बंधित राज्य सूचना आयोग में शिकायत दर्ज करें।

एफआईआर दर्ज कराएं:- भारतीय न्याय संहिता-2023 की धाराओं 198, 199 व 201 के तहत सम्बन्धित पुलिस स्टेशन में प्राथमिकी दर्ज़ कराएं।

**गोपनीय नहीं है लोक सेवकों के दस्तावेज**

गिरीश रामचंद्र देशपांडे बनाम केंद्रीय सूचना आयोग (एमएलपी 277234/2012) मामले में सर्वोच्च न्यायालय का निर्णय एक ऐतिहासिक निर्णय है जो आरटीआई अधिनियम की व्याख्या करते समय गोपनीयता के अधिकार को बरकरार रखता है। धारा 8(1)(जे) के तहत छूट की पुष्टि करके, न्यायालय ने पारदर्शिता और गोपनीयता के प्रतिस्पर्धी हितों को संतुलित करने के लिए एक स्पष्ट रूपरेखा प्रदान की है। यह मामला इस बात पर जोर देता है कि जबकि लोक सेवक अपने कार्यों के लिए जवाबदेह हैं, उनकी व्यक्तिगत जानकारी स्वचालित रूप से सार्वजनिक प्रकटीकरण के अधीन नहीं है जब तक कि एक बाध्यकारी सार्वजनिक हित द्वारा उचित न हो। लेकिन इसमें लोक सेवकों की मार्कशीट, शैक्षणिक योग्यता, अनुभव प्रमाण पत्र, मूल निवासी ऐसी जानकारी व्यक्तिगत श्रेणी में नहीं आते है, जिन्हे आरटीआई एक्ट की धारा 8(1)(जे) में प्रकट नहीं करने की छूट दी गई है।

**ऑनलाइन और ऑफलाइन आवेदन की समय अवधिः-**

ऑनलाइन आवेदनः- आरटीआई एक्ट के आवेदन प्राप्त होने के 30+5 दिनों के भीतर सूचना मुहैया करवानी अनिवार्य है।

ऑफलाइन आवेदनः- आरटीआई एक्ट के मुताबिक इसमें 30 दिनों के भीतर स्टीक जवाब देना अनिवार्य है।

अगर मांगी गई सूचना किसी व्यक्ति के जीवन या आज़ादी से जुड़ी है, तो उसे 48 घंटों के अंदर देना अनिवार्य है।

**आरटीआई अधिनियम का महत्त्वः-**

सूचना का अधिकार अधिनियम 2005 संसद द्वारा पारित एक महत्वपूर्ण कानून है, जिसका उद्देश्य नागरिकों को सशक्त बनाना, सरकार की कार्यशैली में पारदर्शिता और जवाबदेही बढ़ाना, भ्रष्टाचार को रोकना है. यह अधिनियम, भारत के नागरिकों को सार्वजनिक प्राधिकरणों से जानकारी प्राप्त करने का सशक्त अधिकार प्रदान करता है।

*नरेश गुणपाल आरटीआई एक्टिविस्ट*

# भारत का एक पूर्व देशी रियासत जहां कपड़े की तरह बदलें जाते अधिकारी !

के० के० परिच्छा, स्टेट हेड-

**सरायकेला,** अनुमंडल पदाधिकारी, सरायकेला सदानंद महतो ने स्थानान्तरण पश्चात अपना प्रभार अपने ही अनुमंडल के डी सी एल आर निवेदिता नियती को सौंप दिया है। सरकार की तरफ से उनके पद पर किसी अन्य को अबतक नहीं भेजा गया है । वैसे अनुमंडल पदाधिकारी ही सरायकेला छऊ नृत्य कला केन्द्र के पदेन सचिव होते है जिनका असामयिक स्थानान्तरण ऐसे समय पर हुआ है जब विश्वप्रसिद्ध सरायकेला छऊ नृत्य सर पर है । सनद रहे कि चार दिन पूर्व सदानंद महतो का तबादला राजमहल अनुमंडल पदाधिकारी के पद पर कार्मिक प्रशासनिक राजभाषा विभाग, झारखंड सरकार की तरफ से कर दी गयी थी ।

सदानंद महतो का आगमन विगत विधानसभा चुनाव के ठीक पहले 24 सितंबर 2024 को हुआ था उन्होंने अपने पूर्वाधिकारी सुनिल प्रजापति से पदभार ग्रहण किया था । सुनिल प्रजापति भी इस जिले में 7 मार्च 2024 को पदभार ग्रहण किये थे ,उनके पहले अनुमंडल पदाधिकारी पारुल सिंह का आगमन 18 अक्तूबर 2023 को हुआ था । कपड़े की तरह अनुमंडल पदाधिकारियों बदले जाने से लोग आश्चर्य चकित है । ऊपर से विश्वप्रसिद्ध छऊ नृत्य कला केंद्र ऐसे स्तिथि में आकर बंद हो चुका है जहां केंद्र के साफ निर्देश के बाद सरायकेला की ओडिया भाषा संस्कृति को संरक्षण देना है पर स्थिति ऐसा कि एक भी पद में कोई नहीं है । अंततः संस्थान बंद पड़ा था जहां किसी भी प्रकार का कोई मतलब सरकार को नहीं था । कमोवेश यही स्थिति सरायकेला में ओडिया भाषा की रही है ।जो कभी ओडिशा का एक राजस्व जिला रहा है । तथा ओडिशा, बिहार एवं संप्रति झारखंड सरकार भाषा संस्कृति को संरक्षण देने हेतु समय समय पर। वचन बद्ध रही है ।

# क्या? है बाकी, हो सकता बची हो झाँकी...!

अहमदाबाद के पालडी इलाके में मिला खाली फ्लैट,
इंटेलिजेंस और एंटी टेररिज्म स्क्वॉड ने डाली रेड।
टीम को जो भी मिला, अधिकारियों का चेहरा खिला,
स्टॉकब्रोकर के फ्लैट से 100 किलोग्राम सोना मिला।
भारी मात्रा में जेवर और बरामद हुआ बहुत सारा कैश,
फोटोग्रॉफरों की आँखें चौंधिया गई चमकाया फ्लेश।

अहमदाबाद के पालडी इलाके में मिला खाली फ्लैट,
इंटेलिजेंस और एंटी टेररिज्म स्क्वॉड ने डाली रेड।
गुजरात में हाल में पहली इतनी बड़ी बरामदगी है,
जिसका भी है ये सोना उसको कहा शरमिन्दगी है।
ब्रोकर से की जा रही पूछताछ क्या है सोने का राज,
यारों सरकार ने भी बजा दिये है हर तरफ से साज।

अहमदाबाद के पालडी इलाके में मिला खाली फ्लैट,
इंटेलिजेंस और एंटी टेररिज्म स्क्वॉड ने डाली रेड।
विभाग कैश गिनने की मशीनें और तराजू ले आएगा,
अब तो जांच में और भी सामान जब्त किया जाएगा।
बाजार में इसकी कीमत 83-85 करोड़ रुपये हैं आंकी,
किसको पता क्या है बाकी, हो सकता बची हो झाँकी?
(संदर्भ: अहमदाबाद के बंद फ्लैट में मिला 100 किलो सोना!)

संजय एम तराणेकर

# यूनिसेफ की बाल पोषक आहार एवं बीमारियों की रोकथाम पर मुख्यमंत्री

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड-

**रांची।** झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत ने यूनिसेफ की ओर से आयोजित गोल मेज पर स्वस्थ आहार के माध्यम से बचपन में होनेवाली गैर संचारी बीमारियों की रोकथाम में विधानसभा अध्यक्ष के साथ भाग लिया ।

उन्होंने कहा जीवन शैली में बदलाव, रहन-सहन, खान -पान, पर्यावरण और जेनेटिक कारणों से आज डायबिटीज, कैंसर, हृदय रोग और अस्थमा जैसी कई गैर संचारी बीमारियां (नॉन कम्युनिकेबल डिजीज) लोगों को तेजी से अपनी गिरफ्त में लेती जा रही है। हर घर में कमोबेश ऐसी बीमारियां देखने को मिल रही है। अगर हम सभी अपने स्वास्थ्य को लेकर सतर्क नहीं हुए ,तो ऐसी बीमारियां हमारी जिंदगी के लिए खतरा बन सकती है। मुख्यमंत्री श्री हेमन्त सोरेन आज झारखंड विधानसभा में विधानसभा अध्यक्ष डॉ रबीन्द्र नाथ महतो की अध्यक्षता में यूनिसेफ की ओर से आयोजित ₹ राउंड टेबल ऑन प्रीवेंटिंग चाइल्डहुड नॉन कम्युनिकेबल डिसीज थ्रू हेल्दी डाइट्स ₹ पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे।

मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारी जिंदगी के लिए खतरनाक बनती जा रही कैंसर और हृदय रोग जैसी गैर संचारी बीमारियों से बचने के लिए हमें अपनी जीवन शैली में बदलाव लाने के साथ खान- पान में हेल्दी डायट्स के इस्तेमाल एवं ज्यादा से ज्यादा शारीरिक गतिविधियों (फिजिकल एक्टिविटीज) पर फोकस करने की जरूरत है। अगर हम लापरवाही बरतते हैं तो आगे चलकर ऐसी बीमारियों के इलाज में काफी खर्च करना पड़ सकता है, वहीं पूर्ण स्वस्थ होने की गारंटी भी नहीं दी जा सकती है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि आज तरह-तरह की बीमारियां तेजी से फैल रही है। ये बीमारियां कैसे और किन लोगों को अपनी चपेट ले रही है , इसकी पूरी जानकारी होनी चाहिए । इसके लिए राज्य स्तर पर हेल्थ रिपोर्ट कार्ड बनाने पर विशेष जोर है, ताकि बीमारी का प्रॉपर ट्रीटमेंट संभव हो सके । मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य में स्वास्थ्य सुविधाओं को आधुनिक और बेहतर बनाने के लिए हमारी सरकार लगातार कार्य कर रही है, ताकि लोगों को होने वाली बीमारी की पहचान के साथ उसके समुचित इलाज की व्यवस्था सुनिश्चित हो।

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य के कई ऐसे हिस्से हैं, जहां लोगों में विशेष तरह की बीमारियां ज्यादा देखने को मिलती है। सिमडेगा जैसे जिलों में सिकल सेल और एनीमिया जैसी बीमारियां आम है, तो साहिबगंज और संथाल के हिस्सों में कालाजार का प्रभाव ज्यादा है ।ऐसी और भी कई बीमारियां हैं, जो क्षेत्र विशेष में विशेष रूप से लोगों को हो रही है ।ऐसे में क्षेत्र विशेष तथा वहां व्याप्त बीमारियों को चिन्हित कर उसके समुचित इलाज की व्यवस्था सरकार द्वारा की जा रही है, ताकि उन इलाकों में रहने वाले लोगों और उनकी आने वाली पीढ़ियां को ऐसी बीमारियों से बचाया जा सके।

मुख्यमंत्री ने कहा कि आज नई-नई बीमारियां तेजी से लोगों को अपनी चपेट में ले रही है। इसके पीछे कहीं ना कहीं सबसे बड़ी वजह हमारा खान-पान है । आज ज्यादा से ज्यादा जंक फूडस का इस्तेमाल बच्चों को बीमार बना रहा है और आगे चलकर उन्हें कई गंभीर बीमारियां भी हो रही है । अगर हमें अपने को स्वस्थ रखना है, तो अपने खान-पान में लोकल इंडिजिनस फूड्स ( मिलेट्स) लेना होगा। बच्चों को जंक फूड्स की बजाय हेल्दी डाइट्स दें। आज हमें अपने फूड हैबिट्स में बदलाव लाना बेहद जरूरी है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि कई बच्चों में जन्म के साथ कई बीमारियां हो जाती है। बीमारियों का अगर समय पर इलाज नहीं हुआ तो बच्चे की स्थिति काफी खराब हो सकती है । ऐसे में जरूरी है कि नवजात में होने वाली बीमारियों की प्रॉपर जांच के साथ उसका तुरंत समुचित इलाज होना चाहिये। इस दिशा में भी हमारी सरकार ने कई ठोस कदम उठाया हैं, ताकि बच्चों को रोग मुक्त रख सकें।

मुख्यमंत्री ने कहा कि झारखंड के दूर-दराज के इलाकों में रहने वाले गरीब ग्रामीणों तक स्वास्थ्य सुविधा उपलब्ध कराने में यूनिसेफ जैसी संस्थाओं की अहम भागीदारी रही है। आज राज्य सरकार स्वास्थ्य क्षेत्र में काम करने वाली संस्थाओं के साथ मिलकर हर व्यक्ति तक बेहतर स्वास्थ्य सुविधा पहुंचाने के लिए संकल्पित है। हमारा प्रयास है कि जंगल, पहाड़ों, तलहटी और सुदूरवर्ती क्षेत्र में रहने वाले लोगों को भी इलाज की अच्छी सुविधा उपलब्ध करा सकें और इसमें स्वयंसेवी संस्थाएं अहम भूमिका निभा सकती हैं। मुख्यमंत्री ने यह भी कहा कि कई रोगों के उन्मूलन की दिशा में सरकार लगातार काम कर रही है और इसके सकारात्मक परिणाम भी देखने को मिल रहे हैं।

इस अवसर पर मंत्री श्री योगेंद्र महतो, मंत्री सुदिव्य कुमार , विधायक श्रीमती कल्पना सोरेन समेत कई और विधायक गण , यूनिसेफ की श्रीमती आस्था अलंग एवं डॉ कनीनिका मित्रा तथा अन्य प्रतिनिधि मौजूद थे।

# एस पी लुनायत ने 185 पुलिस के साथ 13 वांछित अपराधियों को किया गिरफ्तार

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड-

**सरायकेला,** पुलिस अधीक्षक मुकेश लुनायत ने सरायकेला खरसावाँ में विगत विभिन्न कांडों में वांछित अपराधियों/वारंटियों की गिरफ़्तारी एवं आरोपपत्रित अपराधियों के सत्यापन हेतु रातभर विशेष अभियान चलाया गया ।उक्त अभियान में अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी सरायकेला, सभी थाना प्रभारी /अंचल निरीक्षक के साथ कुल 185 पुलिसकर्मियों की 27 टीमें ने हिस्सा लिया ।अभियान के दौरान एस पी ने आदित्यपुर थाना की टीमों की ब्रीफिंग करते हुए आदित्यपुर थाना से अभियान की निगरानी की गई ।

उक्त 27 टीमों द्वारा विभिन्न थानांतर्गत 100 से अधिक स्थानों पर छापामारी करते हुए कुल 13 वांछित अपराधियों/वारंटियों को गिरफ्तार किया गया, साथ ही अपराध नियंत्रण एवं रोकथाम हेतु विभिन्न अपराध शीर्ष में कुल 121 अपराधियों का भौतिक सत्यापन किया गया जिनमें 45 अपराधी आर्म्स एक्ट ,27 एनडीपीएस एक्ट,08 हत्या,09 उत्पाद अधिनियम,26 संपत्तिमूलक कांडों एवं 06 नक्सल कांडों में आरोपपत्रित है ।

जिन अधिकारियों की गिरफ्तारी की गयी वे इस प्रकार है ।

01. शाहीद आलम उर्फ सद्दाम, पिता मंजूल आलम, सा0 मुस्लिम बस्ती, थाना आदित्यपुर, जिला सरायकेला खरसावाँ । 368/150 एस डी जे एम , सरायकेला ,जी आर संख्या368/15

आदित्यपुर थाना कांड सं0- 129/15, दिनांक-27/03/2015, धारा-461/379 भा0 द0वि0 । (गैर जमानतीय वारंटी)। 02. कन्हैया कुमार पंडित, पे0 बबन पंडित सा0 सापड़ा, थाना आदित्यपुर, जिला सरायकेला खरसावाँ एस डी जे एम ,एस के एल सी सी 208/210(गैर जमानतीय वारंटी)। 03. जियारुल हक उर्फ गोलु, पे0 जैनुल अब्दीन उर्फ छोटु, पता मुस्लिम बस्ती, थाना आदित्यपुर, जिला सरायकेला खरसावाँ ।

एस डी जे एम ,एस के एल ,जी आर 525/200, आर0 आई0 टी0 थाना कांड सं0- 95/20, धारा- 461/379/411/34 भा0 द0 वि0 । (गैर जमानतीय वारंटी ।04. सुरज कोतवाल, उर्फ सुरज पात्रो पे0 शंकर कोतवाल सा0 सालडीह बस्ती, थाना आदित्यपुर, जिला सरायकेला खरसावाँ । सी जै एम ,एस के एल ,जी आर नं 350/11 आदित्यपुर थाना कांड सं0- 107/2011, दिनांक 04/05/2011, धारा- 380/457 भा0 द0 वि0 । (गैर जमानतीय वारंटी)। 05. सज्जाद अली उर्फ छोटु सोनु, पे0 शेख लाल खान, पता एच रोड़ मुस्लिम बस्ती, थाना आदित्यपुर, जिला सरायकेला खरसाव0सी जे एम , जी आर नं -754/15, आदित्यपुर थाना कांड सं0- 264/15, दिनांक- 08/07/2015 । (गैर जमानतीय वारंट)

06. जावेद अंसारी, पिता-अलाउद्दीन अंसारी, पता-तमोलिया, नाला किनारे, नियर दुखी मंदिर, धर्मशाला, कपाली।

GR-131/19, चाण्डिल (कपाली ओ०पी०) थाना काण्ड सं0-04/19, दिनांक-10.01. 19, धारा-25 (1-b)a/26 आर्म्स एक्ट

(गैर जमानतीय वारंटी )।07. सरफराज अंसारी उर्फ फोगला, पिता-रूस्तम अंसारी, पता-हिम्मतनगर, कपाली।

GR-362/16, चाण्डिल (कपाली ओ०पी०) थाना काण्ड सं0-66/16, दिनांक-07.04. 16, धारा-380 भा०द०वि०

(गैर जमानतीय वारंटी )।08. मो० सम्स तबरेज अहमद उर्फ सब्बीर, पिता-स्व० मुमताज अहमद, पता-ताजनगर, कपाली।

GR-322/20, चाण्डिल (कपाली ओ०पी०) थाना काण्ड सं0-17/20, दिनांक-20.01. 20, धारा-380/457 भा०द०वि०

(गैर जमानतीय वारंटी ।09. सब्बीर अंसारी उम्र करीब 21 वर्ष, पिता-जुमन असारी, सा०-अंसारनगर, कपाली।

GR-59/22, चाण्डिल (कपाली ओ०पी०) थाना काण्ड स0-114/21, दिनाक-12.06.2021

(गैर जमानतीय वारंटी )।10. अरबाज खान उर्फ कौसर, उम्र-22 वर्ष, पिता-समसुद्दीन खान, सा०-अंसारनगर, कपाली।

# सतत् विकास हेतु जल संरक्षण आवश्यक (22 मार्च विश्व जल दिवस विशेष)

22 मार्च को 'विश्व जल दिवस' मनाया जाता है। वास्तव में प्रत्येक वर्ष 22 मार्च को मनाया जाने वाला विश्व जल दिवस संयुक्त राष्ट्र द्वारा समर्थित एक वैश्विक पहल है जो वर्ष 1993 से मनाया जा रहा है। दरअसल, इस अंतर्राष्ट्रीय दिवस का विचार वर्ष 1992 में सामने आया, जिस वर्ष रियो डी जनेरियो में पर्यावरण और विकास पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन का आयोजन किया गया था। बहरहाल, जिन पाँच तत्वों को जीवन का प्रमुख व महत्वपूर्ण आधार माना गया है, उनमें से एक तत्व जल है ।जल के बिना जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। इसीलिए कहा भी गया है कि-'जल ही जीवन है।' गौरतलब है कि सतत विकास के लिए निर्धारित 17 लक्ष्यों (एसडीजी) में से पृथ्वी पर सबके लिए स्वच्छ पेयजल और स्वच्छता तक पहुंच एक प्रमुख लक्ष्य है और इसको प्राप्त करने के लिए वर्ष 2030 तक की समय सीमा तय की गई है। हाल फिलहाल, पाठक जानते हैं कि मानव के शरीर का निर्माण प्रकृत के पंच महाभूत, जल, अग्नि, वायु, पृथ्वी व आकाश से होता है। हमारे वेदादि शास्त्रों ने जल की महत्ता को हमेशा से ही स्वीकार किया है। सृष्टि निर्माण प्रक्रिया में भी अग्नितत्व के पश्चात जल तत्व का ही स्थान आता है। मतलब यह है कि अग्नि से ही जलोत्पत्ति हुई है। कहना ग़लत नहीं होगा कि जल के आधार भूत संपूर्ण मानव सृष्टि है ।जल की महत्ता कितनी है इसको हम रहीम जी के एक दोहे के माध्यम से बखूबी समझ सकते हैं, जिन्होंने कहा है-'रहिमन पानी राखिए बिन पानी सब सून। पानी गए न ऊबरे मोती मानुस चून।' यहां तक कहा गया है कि 'जल में अमृत है, जल में औषधि है।' संस्कृत में बड़े खूबसूरत शब्दों में कहा गया है कि-'जलस्य रक्षणम्नूनं भवतु। जल संरक्षणम्अनिवार्यम्। विना जलं तु सर्वं हि नश्येत। दाहं कष्टं करोति दूरम्।'पाठक जानते होंगे कि जल इतिहास के हर खंड में कुछ प्राचीनतम सभ्यताओं—जैसे सिंधु, नील, दज़ला और फरात नदी के आसपास विकसित हुई सभ्यताएँ—के लिये एक महत्त्वपूर्ण संसाधन रहा है। जानकारी देना चाहूंगा कि जल पृथ्वी के लगभग 70% हिस्से को कवर करता है, मीठे जल की मात्रा मात्र 3% है, जिसमें से दो-तिहाई जमे हुए रूप में या दुर्गम और उपयोग के लिये अनुपलब्ध है ।वास्तव में, विश्व जल दिवस मनाने के पीछे मुख्य उद्देश्य सभी के लिये जल एवं स्वच्छता की प्राप्ति को समर्थन देना, मीठे जल के महत्त्व के बारे में हितधारकों के बीच जागरूकता बढ़ाने का प्रयास करना तथा इस अमूल्य तथा सीमित प्राकृतिक संसाधन का संरक्षण करना है। दूसरे शब्दों में कहें तो यह दिन लगभग हर देश में मनुष्यों द्वारा सामना किए जाने वाले जल-संबंधी विभिन्न मुद्दों की ओर ध्यान आकर्षित करने के लिए समर्पित है। सच तो यह है कि संयुक्त राष्ट्र द्वारा बनाया गया, विश्व जल दिवस का लक्ष्य उन लोगों तक सहायता पहुँचाना है, जिन्हें वास्तव में इसकी आवश्यकता है। गौरतलब है कि 22 मार्च 2024 को 31वाँ विश्व जल दिवस मनाया गया था, जिसकी थीम थी- 'शांति के लिये जल का लाभ उठाना।' गौरतलब है कि विश्व जल दिवस 2025 का विषय 'ग्लेशियर संरक्षण' रखा गया है ।ग्लेशियर जीवन के लिए महत्वपूर्ण हैं-उनका पिघला हुआ पानी पेयजल, कृषि, उद्योग, स्वच्छ ऊर्जा उत्पादन और स्वस्थ पारिस्थितिकी तंत्र(इको-सिस्टम) के लिए आवश्यक है। आज तीव्र शहरीकरण, औद्योगीकरण, असंवहनीय कृषि पद्धतियाँ, जलवायु परिवर्तन, अप्रत्याशित वर्षा पैटर्न, अत्यधिक जल उपभोग सहित कई कारकों से जल संकट उत्पन्न हो रहा है ।अकुशल जल प्रबंधन, प्रदूषण, अपर्याप्त अवसंरचना के कारण भी जल संकट की समस्या पैदा होती है। कहना ग़लत नहीं होगा कि विगत कई दशकों में तीव्र नगरीकरण, आबादी में निरंतर हो रही बढ़ोतरी, पेयजल आपूर्ति तथा सिंचाई हेतु जल की मांग में वृद्धि के साथ ही विभिन्न औद्योगिक गतिविधियों के तीव्र विस्तार इत्यादि ने धरती के जल-संसाधनों पर दबाव बढ़ा दिया है। एक ओर जल की बढ़ती मांग की आपूर्ति हेतु सतही एवं भूमिगत जल के अनियंत्रित दोहन से भूजल स्तर में गिरावट होती जा रही है तो दूसरी ओर प्रदूषकों की बढ़ती मात्रा से जल की गुणवत्ता एवं उपयोगिता में कमी आती जा रही है। अनियमित वर्षा, सूखा एवं बाढ़ जैसी आपदाओं ने भूमिगत जल-पुनर्भरण को अत्यधिक प्रभावित किया है। आज पानी के लगभग सभी प्राकृतिक स्त्रोतों जैसे झरने, बावड़ियों, जोहड़, टांका इत्यादि के पुनरूत्थान और पुनरूद्धार पर ध्यान देने की जरूरत अहम और महत्ती है, क्यों कि ये परंपरागत जल स्त्रोत आज दुर्दशा के शिकार हो रहे हैं और इन पर किसी का ध्यान नहीं है। आंकड़े बताते हैं कि विश्व की आबादी में लगभग 18 प्रतिशत हिस्सेदारी रखने वाले भारत में मात्र 4 प्रतिशत जल संसाधन हैं ।उपभोग और वर्तमान उपयोग के पैटर्न को देखते हुए जल संरक्षण आज के समय की मुख्य आवश्यकता है। भारतीय जल संसाधनों को जलवायु संकट, मानसूनी वर्षा, बांधों के निर्माण, और जल विद्युत की ओर बढ़ते बदलाव के साथ-साथ रेत खनन जैसे स्थानीय कारकों से भी गंभीर खतरा है। प्रतिष्ठित पत्रिका डाउन टू अर्थ में छपे एक आलेख से पाठकों को यह जानकारी देना चाहूंगा कि 'संयुक्त राष्ट्र की ही एक अन्य रिपोर्ट के अनुसार, विगत 40 वर्षों में वैश्विक स्तर पर पानी का उपयोग प्रतिवर्ष लगभग 1 प्रतिशत की दर से बढ़ रहा है। रिपोर्ट में यह भी बताया गया है कि जलसंकट का सामना करने वाली वैश्विक शहरी आबादी 2016 में 933 मिलियन से बढ़कर 2050 में 1.7-2.4 बिलियन हो जाने का अनुमान है, जिसमें भारत के सबसे गंभीर रूप से प्रभावित होने की प्रायिकता भी सर्वाधिक है।' बहरहाल हाल ही में केंद्रीय भूल-भूल रिपोर्ट 2024 प्रस्तुत की गई थी, जिसमें यह बताया गया है कि वर्ष 2023 तक देश के 440 जिले ऐसे पाए गए हैं जिनके भूजल में नाइट्रेट की मात्रा अत्यधिक है, जबकि वर्ष 2017 में ऐसे जिलों की संख्या 359 ही थी। उल्लेखनीय है कि देश भर से एकत्र किए गए 15,239 भूजल नमूनों में से 19.8% में नाइट्रेट या नाइट्रोजन यौगिक सुरक्षित सीमा से अधिक पाए गए हैं। सबसे चिंताजनक बात यह है कि राजस्थान, कर्नाटक और तमिलनाडु जैसे राज्यों में नाइट्रेट संदूषण की समस्या सबसे गंभीर बताई गई है जहाँ क्रमशः 49%, 48% और 37% नमूनों में नाइट्रेट की मात्रा सुरक्षित सीमा से अधिक पाई गई है। आंकड़े इस बात का खुलासा करते हैं कि 20 % जल के नमूने में नाइट्रेट की विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) और भारतीय मानक ब्यूरो (बीआईएस) द्वारा पीने के पानी के लिए निर्धारित सीमा (45 मिलीग्राम/लीटर) से अधिक पाई गई है। केंद्रीय भूजल बोर्ड द्वारा जारी रिपोर्ट के अनुसार देश भर में भूजल निष्कर्षण की मात्रा 60.4% है। रिपोर्ट के अनुसार मध्य और दक्षिणी भारत के क्षेत्रों में( महाराष्ट्र में 35.74%, तेलंगाना में 27.48%, आंध्र प्रदेश में 23.5% और मध्य प्रदेश 22.58% स्तर) संदूषण वृद्धि स्तर पाया गया है, यह वाकई चिंता में डालता है। बहरहाल, हमें जल के संरक्षण, जल संपादन की व्यवस्था, और जल संबंधी जागरूकता बढ़ाने की आवश्यकता है, ताकि हम समृद्ध और सुरक्षित जीवन जी सकें। अंत में यही कहूंगा कि यदि हम शीघ्र ही जल संरक्षण के प्रति नहीं चेते तो हम अपनी आने वाली पीढ़ियों को यह आशीर्वाद नहीं दे सकेंगें-'अचल रहे अहिवात तुम्हारा, जब तक गंग जमुन जल धारा ।' तात्पर्य यह है कि यह सृष्टि तब तक ही है, जब तक गंगा व जमुना में जल धारा है। कहना ग़लत नहीं होगा कि प्रकृति एवं मानव सभ्यता के विकास में जल की अहम भूमिका है। प्रकृति में जल का अपार भंडार होते हुए भी मानव उपयोग के लिए जल सीमित मात्रा में ही उपलब्ध है। सच तो यह है जल के आसपास ही जीवन का आनंद, सुख, विस्तार, फैलाव रहा है। जल मानव सभ्यता और संस्कृति का असली केन्द्र बिन्दु रहा है। जल का महत्व इससे और स्पष्ट हो जाता है कि भारतीय समाज, संस्कृति ने नदियों को मां का दर्जा दिया है। गंगा मैया, यमुना मैया, नर्मदा मैया, कावेरी मैया के नाम से नदियों को पुकारा जाता रहा है। जल के महत्व को समझाते, दर्शाते हुए भगवान ने गीता के श्लोक में स्पष्ट किया है कि –'पत्रं पुष्पं फलं तोयं तो ये भक्त्या प्रयच्छति ।तदहं भक्त्युपहृतमश्नामि प्रयतात्मनः ।।' जल प्रकृति का अमूल्य उपहार और नैमत्त है जिससे जीवन संभव है ।गांधी जी ने यह स्पष्ट कहा है कि-'प्रकृति सबकी आवश्यकताएं तो पूरी कर सकती है मगर लालच किसी एक का भी पूरा करना कठिन है।' हमें यह चाहिए कि हम जल संरक्षण के प्रति कृतसंकल्पित हों, इसे बचाएं, इसे प्रदूषित न होने दें। सतत विकास के लक्ष्यों को बिना जल के नहीं प्राप्त किया जा सकता है, इसलिए बहुत ही जरूरी है कि जल का हर हाल और परिस्थितियों में संरक्षण किया जाये। अंत में रहीम जी पंक्तियों को उद्धृत करते हुए यही कहूंगा कि-'कौन बड़ाई जलधि मिलि, गंग नाम भो धीम ।केहि की प्रभुता नहिं घटी, पर घर गए 'रहिम'। जाल परे जल जात बहि, तजि मीनन को मोह।'रहिमन' मछरी नीर को, तऊ न छांड़त छोह।।'

**सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार, उत्तराखंड।**

# अतीत की गोद में सोए तालाब और बावड़ियाँ: बस पानी ही नहीं, कहानियों का खजाना

अगर हम तालाबों और बावड़ियों को सिर्फ़ पानी जमा करने की जगह समझते हैं, तो शायद हम उनके साथ न्याय नहीं कर रहे। ये सिर्फ़ जल-स्रोत नहीं, बल्कि सदियों की कहानियों, रहस्यों, परंपराओं और लोककथाओं के ज़िंदा गवाह हैं। पुराने तालाब और बावड़ियाँ इतिहास की किताब के वह पन्ने हैं, जिन पर समय की बूंदें टपकी हैं। अब जब हम पानी के संकट से जूझ रहे हैं, तब इन प्राचीन जल स्रोतों की अहमियत और भी बढ़ जाती है। आधुनिक टैंकर और बोरवेल के भरोसे रहने की बजाय अगर हम फिर से बावड़ियों और तालाबों को ज़िंदा करें, तो शायद आने वाली पीढ़ियाँ भी हमारी तारीफ़ करेंगी (और शायद तालाबों के किनारे बैठकर अपनी नई कहानियाँ रचेंगी)। तालाब और बावड़ियाँ हमारे ऐतिहासिक और सांस्कृतिक परिदृश्य का अभिन्न अंग रही हैं। वे न केवल जल-संग्रहण के साधन थे, बल्कि समाज के सामूहिक जीवन, कला, स्थापत्य और आध्यात्मिक गतिविधियों से भी जुड़े हुए थे। आज के दौर में जल संकट एक गंभीर समस्या बन चुका है। जलवायु परिवर्तन, अनियंत्रित शहरीकरण और भूजल के अत्यधिक दोहन ने पानी की उपलब्धता को प्रभावित किया है। ऐसे में प्राचीन जल संरचनाओं, जैसे तालाब और बावड़ियों का पुनरुद्धार और संरक्षण अत्यंत आवश्यक हो गया है। तालाब और बावड़ियाँ हमारे पूर्वजों की अद्भुत जल प्रबंधन प्रणाली का हिस्सा रहे हैं। वर्तमान जल संकट को देखते हुए, इनका पुनरुद्धार और संरक्षण हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए। यह न केवल जल उपलब्धता बढ़ाने में मदद करेगा, बल्कि हमारी सांस्कृतिक धरोहर को भी बचाएगा। यदि हम सामूहिक रूप से प्रयास करें, तो इन ऐतिहासिक जल स्रोतों को फिर से जीवंत किया जा सकता है और भविष्य की पीढ़ियों के लिए जल संरक्षण सुनिश्चित किया जा सकता है।

**डॉ. सत्यवान सौरभ**

अतीत की यादों में समाये तालाब और बावड़ियाँ केवल जल-स्रोत नहीं थे, बल्कि सांस्कृतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक धरोहर का प्रतीक भी थे। ये जल संरचनाएँ प्राचीन भारतीय समाज की जल प्रबंधन प्रणाली का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा थीं, जो हमें हमारे पूर्वजों की बुद्धिमत्ता और पर्यावरण के प्रति उनके सम्मान की याद दिलाती हैं। तालाब गाँवों और नगरों के जीवन का केंद्र हुआ करते थे। वर्षा जल संचयन, कृषि सिंचाई, मवेशियों की प्यास बुझाने और सामाजिक मेलजोल के लिए इनका उपयोग किया जाता था। तालाबों के किनारे मंदिर, घाट और धर्मशालाएँ बनाई जाती थीं, जहाँ लोग आध्यात्मिक शांति प्राप्त करने आते थे। कई स्थानों पर ये तालाब त्योहारों और मेलों का केंद्र भी बनते थे। प्राचीन भारत में जल को केवल एक संसाधन नहीं, बल्कि पूजनीय तत्व माना जाता था। इसलिए, जल स्रोतों को संरक्षित करने के लिए वैज्ञानिक और कलात्मक दृष्टिकोण अपनाया गया। राजाओं, रानियों, समाजसेवियों और मंदिर समितियों ने बड़े पैमाने पर तालाब और बावड़ियों का निर्माण कराया। इनका उद्देश्य जल संचयन के साथ-साथ सामाजिक समृद्धि और आध्यात्मिक शांति को बढ़ावा देना भी था। पुराने तालाबों के पास बैठकर अगर आप ज़रा ध्यान दें, तो आपको उनकी लहरों में इतिहास की हलचल महसूस होगी। कभी ये गाँव-शहरों की जान हुआ करते थे। गाँवों में तालाब के किनारे बुजुर्ग किस्से सुनाते, बच्चे खेलते और महिलाएँ पानी भरते हुए अपनी कहानियों की गहराइयों में खो जातीं। ये सिर्फ़ जल संरचनाएँ नहीं थीं, बल्कि सामाजिक मेलजोल के सबसे अहम केंद्र थे।

बावड़ियाँ विशेष रूप से स्थापत्य कला का बेहतरीन उदाहरण थीं। इनका निर्माण इस प्रकार किया जाता था कि गर्मी के मौसम में भी पानी ठंडा बना रहे। राजस्थान और गुजरात में बनी बावड़ियाँ आज भी अपनी जटिल नक्काशी, मेहराबों, स्तंभों और मूर्तियों के कारण आकर्षण का केंद्र बनी हुई हैं। बावड़ियाँ (सीढ़ीदार कुएँ) विशेष रूप से पश्चिमी और मध्य भारत में लोकप्रिय थीं। राजस्थान, गुजरात और मध्य प्रदेश में अनेक प्राचीन बावड़ियाँ देखने को मिलती हैं, जिनकी स्थापत्य कला अद्भुत होती थी। ये केवल जल संग्रहण का साधन नहीं थीं, बल्कि गर्मियों में ठंडी छाँव में बैठने और यात्रियों के लिए विश्राम स्थल का कार्य भी करती थीं। प्रसिद्ध बावड़ियों में चाँद बावड़ी (अभनेरी, राजस्थान) और रानी की वाव (पाटण, गुजरात) अपनी अद्वितीय सुंदरता के लिए प्रसिद्ध हैं। तालाब और बावड़ियाँ जल संचयन और भूजल पुनर्भरण (Groundwater Recharge) का महत्त्वपूर्ण माध्यम थीं। जलवायु परिवर्तन और जल संकट के इस दौर में यदि हम इन पारंपरिक जल स्रोतों का पुनर्जीवन करें, तो यह न केवल भूजल स्तर को बढ़ाने में मदद करेगा, बल्कि बाढ़ जैसी समस्याओं को कम करने में भी सहायक होगा। आधुनिक शहरीकरण और बढ़ती उपेक्षा के कारण कई तालाब और बावड़ियाँ सूख चुके हैं या अतिक्रमण का शिकार हो गए हैं। कई जल स्रोत गंदगी और कचरे से भर चुके हैं, जिससे न केवल उनका ऐतिहासिक महत्त्व समाप्त हो रहा है, बल्कि पर्यावरण पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। सरकार और स्थानीय समुदायों को मिलकर पुराने जल स्रोतों की सफ़ाई करनी चाहिए। पारंपरिक जल स्रोतों के संरक्षण के लिए ठोस कानूनी नीतियाँ बनाई जानी चाहिए। गांवों और शहरों में सामुदायिक प्रयासों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए ताकि लोग इन धरोहरों को संजोने में सक्रिय भाग लें। इन ऐतिहासिक स्थलों को पर्यटन के केंद्र के रूप में विकसित किया जा सकता है, जिससे लोग इनके महत्त्व को समझें और संरक्षण के लिए प्रेरित हों।

वर्तमान में कई शहर और गाँव पानी की कमी का सामना कर रहे हैं। भूजल स्तर तेजी से नीचे जा रहा है क्योंकि वर्षा जल का संचयन सही तरीके से नहीं हो रहा है। यदि तालाबों और बावड़ियों को पुनर्जीवित किया जाए, तो वे भूजल को फिर से भरने में मदद कर सकते हैं, जिससे नदियों और कुओं का जल स्तर संतुलित रहेगा। कई क्षेत्रों में अत्यधिक वर्षा के कारण बाढ़ की समस्या उत्पन्न हो जाती है, जबकि अन्य क्षेत्रों में सूखा पड़ता है। यदि पारंपरिक जल स्रोतों का संरक्षण किया जाए, तो वर्षा जल को संग्रहित करके सूखे के दौरान इसका उपयोग किया जा सकता है। साथ ही, यह जल निकासी की भी एक प्रभावी प्रणाली बन सकती है। तालाब और बावड़ियाँ न केवल जल का स्रोत हैं, बल्कि स्थानीय पारिस्थितिकी तंत्र को बनाए रखने में भी मदद करते हैं। ये जलाशय पक्षियों, मछलियों और अन्य जलीय जीवों के प्राकृतिक आवास होते हैं। यदि इन्हें पुनर्जीवित किया जाए, तो जैव विविधता को भी संरक्षित किया जा सकता है। प्राचीन बावड़ियाँ और तालाब न केवल जल संरचनाएँ हैं, बल्कि वे हमारी सांस्कृतिक विरासत का भी एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा हैं। आज कई बावड़ियाँ और तालाब उपेक्षित पड़े हैं या कचरे से भर चुके हैं। इन्हें साफ़ कर पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया जा सकता है, जिससे उनकी ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पहचान बनी रहे। यदि तालाब और बावड़ियों को फिर से उपयोग में लाया जाए, तो ग्रामीण और शहरी समुदायों को इससे सीधा लाभ मिलेगा। वे खेती, पशुपालन और दैनिक जीवन में जल संकट से बच सकेंगे। इसके लिए स्थानीय लोगों की भागीदारी भी सुनिश्चित करनी होगी ताकि वे स्वयं इनके संरक्षण की जिम्मेदारी लें।

तालाब और बावड़ियाँ हमारे पूर्वजों की दूरदर्शिता और कुशल जल प्रबंधन प्रणाली का प्रमाण हैं। यदि हम इन्हें पुनर्जीवित करें, तो यह पर्यावरण, समाज और अर्थव्यवस्था—तीनों के लिए लाभकारी होगा। हमें अपने अतीत से सीख लेते हुए जल संरक्षण को अपनी प्राथमिकता बनानी चाहिए ताकि आने वाली पीढ़ियाँ भी इन अद्भुत संरचनाओं का लाभ उठा सकें। आज के समय में कई तालाब और बावड़ियाँ उपेक्षा के कारण सूख गए हैं या गंदगी से भर गए हैं। शहरीकरण और जल संकट के बढ़ते प्रभाव को देखते हुए इन पारंपरिक जल स्रोतों का पुनरुद्धार आवश्यक हो गया है। कई जगहों पर लोग और संगठन इन संरचनाओं को पुनर्जीवित करने का प्रयास कर रहे हैं। तालाब और बावड़ियाँ हमारे अतीत की वह धरोहर हैं, जो हमें जल संरक्षण और सामुदायिक जीवन की महत्त्वपूर्ण सीख देती हैं। इनका संरक्षण हमारी सांस्कृतिक विरासत को संजोने के साथ-साथ भविष्य की पीढ़ियों के लिए जल संकट से निपटने में सहायक हो सकता है।

बैंगलुरू कोरमंगला स्थित प्रवासी महिला मंडल ने शीतला सप्तमी माता जी की पूजा-अर्चना में भाग लेती हुई केसी बाई,अनूसया देवी, सन्तोष देवी,लिला देवी, रेखा देवी, ममता देवी, राधा देवी, रेखा देवी, प्रियंका देवी, पुष्पा देवी, लक्ष्मी देवी, इन्द्रारा देवी व अन्य।

किसरा मंडल चिरीयला स्थित राजस्थानी मित्र मंडल शीतला सप्तमी माता जी पुजा अर्चना में भाग लेती हुई मीरा देवी कुमावत, मैना देवी सीरवी, इन्द्रा देवी कुमावत, पुजा कुमावत,लिला देवी कुमावत, सुशीला कुमावत, सरोज सीरवी,सरीता चौधरी,व अन्य।

## बूँद-बूँद में सीख

इस धरती पर है बहुत, पानी के भंडार।
पीने को फिर भी नहीं, बहुत बड़ी है मार॥

जल से जीवन है जुड़ा, बूँद-बूँद में सीख।
नहीं बचा तो मानिये, मच जाएगी चीख॥

अगर बचानी ज़िंदगी, करें आज संकल्प।
जल का जग में है नहीं, कोई और विकल्प॥

धूप नहीं, छाया नहीं, सूखे जल भंडार।
साँसे गिरवी हो गई, हवा बिके बाज़ार॥

आये दिन होता यहाँ, पानी ख़र्च फिजूल।
बंद सांस को ख़ुद करें, बहुत बड़ी है भूल॥

जो भी मानव ख़ुद कभी, करता जल का ह्रास।
अपने हाथों आप ही, तोड़े जीवन आस।

हत्या से बढ़कर हुई, व्यर्थ गिरी जल बूँद।
बिन पानी के कल हमें, आँखें ना ले मूँद॥

नदियाँ सब करती रहें, हरा-भरा संसार।
होगा ऐसा ही तभी, जल से हो जब प्यार॥

पानी से ही चहकते, घर-आँगन-खलिहान।
धरती लगती है सदा, हमको स्वर्ग समान॥

बाग़, बगीचे, खेत हों, घर या सभी उद्योग।
जीव-जंतु या देव को, जल बिन कैसा भोग॥

पानी है तो पास है, सब कुछ तेरे पास।
धन-दौलत से कब भला, मिट पाएगी प्यास॥

जल से धरती है बची, जल से है आकाश।
जल से ही जीवन जुड़ा, सबका है विश्वास॥

अगर बचानी ज़िंदगी, करें आज संकल्प।
जल का जग में है नहीं, कोई और विकल्प॥

**—डॉ. सत्यवान 'सौरभ'**

# भ्रष्टाचार निरोधक बोर्ड दिल्ली से नासिक सिन्नर श्रीमती, राजश्री चौधरी को "महाराष्ट्र भूषण पुरस्कार"

सम्मानित। भ्रष्टाचार निरोधक मंडल की ओर से प्रभाग उपाध्यक्ष छत्रपति संभाजीनगर की नियुक्ति...

**परिवहन विशेष न्यूज**

**औरंगाबाद (राहुल परदेशी):** नासिक के सिन्नर में. रोजी बैक्वेट हॉल, फाइव स्टार होटल, संस्कृति घोटी रोड, सिनर

सामाजिक और पत्रकारिता क्षेत्र में अपनी अद्वितीय उपलब्धियों के लिए दिल्ली और महाराष्ट्र की पहली महिला पत्रकार के रूप में, जिन्होंने समाज, अंधविश्वास, अत्याचार, भ्रष्टाचार, जबरन वसूली, दहेज, महिलाओं पर अत्याचार की समस्या को दुनिया के सामने उठाया।

दिल्ली और महाराष्ट्र समाचार पत्र से साप्ताहिक सबला उत्कर्ष समाचार पत्र ने अपनी कलम से समाचारों को ब्रेक किया, सकारात्मक समाचारों और सामाजिक लेखों के माध्यम से प्रबुद्ध किया। औरंगाबाद में सबला उत्कर्ष फाउंडेशन की ओर से सामाजिक कार्यों पर भी जोर दिया गया. श्रीमती राजश्री राहुल चौधरी को अब तक दिल्ली , यु पी , गुजरात, छत्तीसगड, और महाराष्ट्र राज्य के विभिन्न स्थानों से 35 पुरस्कार मिल चुके हैं और उन्हें महाराष्ट्र राज्य मराठी पत्रकार संघ मुंबई द्वारा जीवन गौरव पुरस्कार से भी सम्मानित किया जा चुका है। भ्रष्टाचार निरोधक बोर्ड ने उनके अद्वितीय कार्य पर ध्यान दिया

मंडल टीम अधिकारी द्वारा नई दिल्ली की चयन समिति का संचालन किया गया और महाराष्ट्र राज्य की आयोजन समिति के माध्यम से उन्हें महाराष्ट्र भूषण पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इतना ही नहीं श्रीमती राजश्री राहुल चौधरी को भ्रष्टाचार निवारण बोर्ड की ओर से प्रभाग उपाध्यक्ष छत्रपति संभाजीनगर के पद पर भी नियुक्त किया गया है 1 ईस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में मा. कैप्टन श्रीमान अशोक कुमार खरात, श्रीमान नंद कुमार अहिरे (कृषि अधिकारी) मंच पर उपस्थित थे जबकि कार्यक्रम के अध्यक्ष श्रीमान आन्ना खैरनार (राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एंटी करप्शन बोर्ड), श्रीमान रविदास बाविस्कर (महाराष्ट्र राज्य एंटी करप्शन बोर्ड के उपाध्यक्ष) और श्रीमान स्वप्निल डोंगरे (शिवशाहीर सिन्नर), श्रीमान मछिंद्र बिदवे, (साई इवेंट मैनेजमेंट), गायिका मा.माधुरी ताई गुंजन,मा . सीमंतिनी कोकाटे (जिल्हा परिषद सदस्य )उपस्थित थे। श्रीमान सुरेंद्र देशमुख, श्रीमान अशोक भावरी (बीडीओ) श्रीमान रितेश बैरागी (प्रमुख) श्रीमान संभाजी गायकवाड (पुलिस इंस्पेक्टर सिन्नर), श्रीमान जीतेंद्र भावे (निर्भय संगठन), श्रीमान धनराज वाघमारे (पुलिस क्राइम न्यूज लातूर), श्रीमान नामकर्ण अवारे (अध्यक्ष स्टाइस), श्रीमान सोमनाथ पावसे (नगरसेवक सिन्नर), श्रीमान बालासाहेब सोपान माने (युवा उद्यमी), श्रीमान गणेश अवाद (निदेशक, सक्सेस प्लेसमेंट) सिनर), श्रीमान कर्नल साहेबराव शेलके आदि गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में सम्मान एवं पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। उन्हें प्राप्त प्रतिष्ठित महाराष्ट्र भूषण पुरस्कार के संबंध में श्रीमान विश्वास आनंद अरोटे, राज्य महासचिव महाराष्ट्र राज्य मराठी पत्रकार संघ मुंबई, सेना अधिकारी श्री. अशोक हांगे सर (रे.ए.एम.सी. छत्रपति संभाजीनगर), सेना अधिकारी विट्ठल उबाले सर (आर.ई.टी.डी.) छ. संभाजीनगर, स्वास्थ्य सलाहकार वहीद खान छ. संभाजीनगर, सबला उत्कर्ष फाउंडेशन के सचिव अन्ना निरंजन खैरनार, छ.संभाजी नगर, अधिकारी नीलेश ठाकुर (जिला परिषद छ. संभाजी नगर), गणेश चौधरी मुख्य संपादक छ. संभाजी नगर, पत्रकार धनंजय गालंनकर धुले, पत्रकार रोहिदास चौधरी पारोला धुले, तलाठी साक्री लोंढे अन्ना, रोहित साकेत (समाज कल्याण कार्यालय) जलगांव, डॉक्टर नलीन महाजन रवंजे (जलगांव), बॉलीवुड गायक अमित जैन नई दिल्ली, अतीक अत्तार सीआरपीएफ दिल्ली, अखिलेश वर्मा बॉलीवुड अभिनेता/कोरियोग्राफी/डांसर मुंबई, डॉक्टर संजय चौधरी, डॉक्टर सुनीता चौधरी (सोयगांव बनोटी), एडवोकेट हर्षा चौधरी छ. संभाजी नगर, पुलिस मस्के छ.संभाजी नगर, परिवार और समाज ने सभी ने बधाई दी1

## 1 अप्रैल से भुवनेश्वर से गोवा के लिए उड़ान भरेगी फ्लाइट, सप्ताह में चार दिन

**मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा**

**भुबनेश्वर:** भुवनेश्वर से गोवा के लिए उड़ान भरी जाएगी। विमानन क्षेत्र में ओडिशा के इतिहास में एक और मील का रास्ता जुड़ जाएगा। उत्कल दिवस के अवसर पर 1 अप्रैल से ओडिशा से गोवा के लिए सीधी उड़ान सेवाएं उपलब्ध होंगी। मुख्यमंत्री मोहन चरण माझी ने इस नई विमान सेवा के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की प्रशंसा की है।राज्य सरकार की नई गंतव्य नीति के अनुसार, भुवनेश्वर से गोवा के लिए उड़ानें संचालित होंगी। 1 अप्रैल से भुवनेश्वर से गोवा के लिए हर मंगलवार, बुधवार, गुरुवार और शनिवार को उड़ानें संचालित होंगी। यात्री घरेलू एयरलाइन 'इंडिगो' से भुवनेश्वर से गोवा के लिए उड़ान भर सकते हैं। आप इंडिगो की फ्लाइट से गोवा से भुवनेश्वर भी लौट सकते हैं। विकसित ओडिशा को ध्यान में रखते हुए राज्य सरकार ने केंद्र की मदद से देश के विभिन्न महत्वपूर्ण स्थानों के लिए उड़ानें संचालित करने के लिए कदम उठाए हैं।

## कीट की नेपाली छात्रा यौन उत्पीड़न की शिकार हुई: उच्च शिक्षा मंत्री सूर्यवंशी सूरज

**मनोरनजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा**

**भुबनेश्वर:** उच्च शिक्षा मंत्री सूर्यवंशी सूरज ने किट छात्र की मौत के संबंध में विधानसभा में लिखित जवाब पेश किया। उन्होंने घटना से 11 महीने पहले काइट अधिकारियों के पास इस बारे में शिकायत दर्ज कराई थी। 12 मार्च मृतक छात्रा ने 2024 में यौन उत्पीड़न की शिकायत दर्ज कराई थी। राज्य सरकार ने इस संबंध में एक उच्च स्तरीय समिति गठित की है और जांच कर रही है।यूजीसी के दिशा-निर्देशों के अनुसार कीट विश्वविद्यालय ने एक आंतरिक समिति गठित की है। उधर, भाजपा विधायक ओमप्रकाश मिश्रा के सवाल कि कोट विश्वविद्यालय में कितने सेवानिवृत्त आईईएस, आईपीएस, ओएस और ओपीएस कार्यरत हैं, के जवाब में उच्च शिक्षा मंत्री ने कहा कि आंकड़े जुटाए जा रहे हैं।

## मण्डल रोजगार अधिकारी सोनम गोयल ने कानून को ताक पर रखकर बेरोजगार युवा को किया कारण बताओ नोटिस जारी- बजरंग लाल सोलंकी

**रोहतक/चण्डीगढ़:** मण्डल रोजगार कार्यालय हिसार की तत्कालीन मण्डल रोजगार अधिकारी सोनम गोयल ने एक बेरोजगार युवा पत्र क्रमांकः-1861-64 दिनांक 20.07.2022 के तहत कारण बताओ नोटिस जारी करते हुए कानून की सरेआम धज्जियां उड़ाई है। उन द्वारा कारण बताओ नोटिस की एक प्रति अतिरिक्त मुख्य सचिव हरियाणा सरकार रोजगार विभाग हरियाणा, महानिदेशक रोजगार विभाग हरियाणा पंचकूला एवं उपायुक्त हिसार को भेजी गई है। सोनम गोयल को भली भांति पता था कि बेरोजगार युवा अनुसूचित जाति से सम्बन्ध रखता है इसलिए उन्होंने जानबूझकर अनुसूचित जाति का युवक होने के नाते मेरा जातीय शोषण किया मुझे बार-बार परेशान किया तथा मेरा अपमान भी किया तथा बार-बार मेरा मानसिक तौर पर शोषण किया गया है , कारण बताओ नोटिस का जवाब भी एक बेरोजगार युवा से उचित माध्यम से प्रस्तुत करने बाबत लिखा गया है तथा कारण बताओ नोटिस में उचित कानूनी कार्यवाही एवं एफआईआर दर्ज़ करवाने तक की धमकी भी दी गई है।

कारण बताओ नोटिस जारी होने के बाद श्रीमती गोयल की शिकायत माननीय चेयरमैन राष्ट्रीय अनुसूचित आयोग पांचवी मंजिल लोक नायक भवन खान मार्केट नई दिल्ली को की गई उसके बाद राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग राज्य कार्यालय पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश तथा संघ शासित क्षेत्र चण्डीगढ़ छठा तल केंद्रीय सदन सेक्टर 9 ए चण्डीगढ़ ने शिकायत पर संज्ञान लेते हुए निदेशक रोजगार विभाग हरियाणा पंचकूला को नोटिस जारी किया गया।

सोनम गोयल ने अपने बचाव के लिए नोटिस का गोलमाल जवाब दिया गया। उसके बाद फिर मैंने असंतुष्टि जाहिर की। जब खुद श्रीमती गोयल कार्यालय में हाजरि ही नहीं थी तो एक बेरोजगार युवा पर अनाप शनाप आरोप कैसे लगा सकती है। उसके बाद शिकायत की जाँच उप मण्डल अधिकारी नागरिक हिसार द्वारा करवाई गई। एसडीएम कार्यालय में सोनम गोयल मण्डल रोजगार अधिकारी हिसार उसके साथ सहायक पुष्पा निर्धारित तिथि को हाज़रि हुए तथा श्री बजरंग लाल भी निर्धारित तिथि को हाजिर हुआ।

शापुर नगर प्रवासी महिला मंडल सेवा समिति। मिश्री बाई पंवार, कौशल्या चोयल, सुशीला,सुआ देवी सोलंकी, ममता हाम्बड़ , आशा देवी, फेपी देवी , लीला भायल ,कमला देवी पंवार लक्ष्मी बर्फा, रेखा प्रेमा पंवार, मंजु,रेखा सप्तमी पर माता की पुजा अर्चना की।

## तुमकुंटा प्रवासी महिला मंडल ग्रुप ने शीतला सप्तमी माता जी की पूजा-अर्चना की

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023